दुर्लभ-जीवन

— लेखको —
शान्तिलाल वनमाली शेठ
नटवरलाल कपुरचंद शाह




दुर्लभ-जीवन

[संस्कार अने स्मृति]



लेखक

शांतिलाल वनमाली शेठ

नटवरलाल कपुरचंद शाह



प्रकाशक

अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स-मुंबई.

महावीर जयंती संवत् १९९७ | अमूल्य भेट | ता० ९-४-४१

प्रकाशक—

चिमनलाल चकुभाई शाह

त्रिभुवन गोविंदजी शाह

सेक्रेटरीओ,

श्री. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स,

४५१, कालबादेवी रोड, मुंबई.

प्रथमावृत्ति १०००

प्रिन्टर—

रामचंद्र येसू शेडगे, निर्णयसागर प्रेस,

२६।२८, कोलभाट स्ट्रीट,

मुंबई नं. २.

बे बोल

अमारा स्वर्गस्थ पिता दुर्लभजीभाई त्रि. झवेरी मात्र अमारा बापु के अमारी कौटुंबिक संपत्ति ज न हता. ए तो आखा स्थानकवासी समाजनी संपत्तिरूप हता. एमने 'बापु' नामथी संबोधनारा अने 'बापु' तरीके सन्मान आपनाराओमां 'श्री जैन ट्रेनिंग कोलेज'ना विशारदो अने श्री जैन गुरुकुल ब्यावरना स्नातको अने ब्रह्मचारीओ उपरांत रा. ब. मोतीलालजी मूथा अने बाबु आनंदराजजी सुराणा जेवी अनेक व्यक्तिओ पण छे. एमनुं जीवन आदर्श हतुं ए कहेवानी अमारे जरूर न ज होय. भारतवर्षनो चतुर्विध श्री संघ एमनाथी सुपरिचित छे.

घणा आदर्शवादी श्रीमानो, विद्वानो, साहित्यकारो अने ठाकोर साहेबोए पण अमने टकोर करी के पहेली संवत्सरी पसार थवा छतां 'बापु'नुं जीवन चरित्र केम प्रगट थयुं नथी? अने केटलाकोए तो कवि लोंगफेलोनी नीचेनी कडी टांकीने एमनुं जीवनचरित्र बहार पाडवा आग्रह कर्यो.

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime;
And parting lives leave behind us
Foot-prints on the sands of time.

खरेखर महापुरुषोनुं जीवन भावि प्रजा माटे आदर्शरूप बने छे, एटले ज बापुनुं जीवनचरित्र प्रगट करवा अमारुं दिल थयुं. कोलेज अने गुरुकुलना स्नातको पं. शांतिलाल व. शेठ न्यायतीर्थ, विशारद अने पं. नटवरलाल के. शाह न्यायतीर्थ आगममनीषीए, भाईश्री धीरजलाल तुरखीयानी दोरवणी नीचे बापुनुं जीवनचरित्र अति संक्षेपमां तैयार कर्युं अने बापुजीनी बीजी संवत्सरी पहेलां प्रगट करवा कह्युं. आनी कंई कींमत राखवी उचित न लागी एटले आ अमोल वस्तुने अमूल्यरूपे ज समाज आगळ धरीए छीए.

बापुनुं संग्रहित अने लेखित साहित्य एटलुं बधुं अने उपयोगी छे के ए तो सीरीझ (ग्रंथमाला) रूपे समाज आगळ धरी शकाय. ए तरफ बापुना धर्मपुत्रोए अमारुं ध्यान खेंच्युं पण छे.

बापुना जीवननी रूपरेखा आ पुस्तकरूपे आपनी सेवामां भेट धरी अमे कृतकृत्य थईए छीए.

अमे छीए,

ए बापुना ओशींगण पुत्रो.

दः विनयचंद

प्रस्तावना

'संति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा'-उत्तराध्ययन सूत्र

एक एक भिक्षु करतां गृहस्थाश्रमी संयमे करी उत्तम-प्रधान होय छे. आ शास्त्रीय उक्तिनो घणे ठेकाणे सत्यरूपे अनुभव थतो जोवामां आवे छे.

दुर्लभ-जीवनना बालजीवन, व्यापारिक-जीवन अने कौटुंबिक जीवनना अंग परत्वे विशेष परिचय न होवाने लीधे ते संबंधी विशेष लखवानुं मारे रहेतुं नथी. जे अंगोमां विशेषता होय, अनुकरणीयता होय ते ज उपदेशनी दृष्टिए आलेखवानी जरूरीयात समजी वनेचंद्भाईना आग्रहने मान आपी कंइक प्रस्तावनारूपे लखवाने मन प्रेराय छे ते उपर सामाजिक अने धार्मिक जीवन गाळनार जिज्ञासु ध्यान आपे.

धर्मवीर दुर्लभना धार्मिक-जीवनमां एवा घणा प्रसंगो तारवी शकाय के जेमां उपली शास्त्रीय उक्तिने अक्षरशः सार्थक करनारा प्रसंगो आपणने प्राप्त थई शके. पुण्ययोगे हाम, दाम अने ठाम त्रणे वस्तु प्राप्त थएल होवाथी तेनी जिंदगीनो घणो भाग कॉन्फरन्स द्वारा समाज-सुधारणा अने धर्मसुधारणामां खर्ची शकवाने लायक बन्यो हतो. शरीरनुं आरोग्य बराबर न होवा छतां मनोबळथी कार्य बजाववामां पाछा हठता नहि एटलुं ज नहि पण कार्यना मोरचामां अग्रेसर थई उभा रही सेनानी बनीने पोतानी पाछळ समाजने दोरववामां प्रसंग चूकता नहि.

विद्याप्रेम अने वात्सल्यभाव.

दुर्लभ-जीवननो सामान्य परिचय तो घणीवार अने घणा वरसो सुधी थएल पण तेने जतुं करी खास विशेषताथी थएल विशेष परिचयनो अत्रे उल्लेख करवो अस्थाने नथी. संवत १९८५ नी सालमां अमे कच्छमां विचरता हता. दुर्लभजीभाईए ट्रेनींग कोलेजने निभाववानुं काम पोता उपर लीधुं हतुं. जुनीयर अने सीनीयर मळीने १७ के १९ विद्यार्थीओ हता. दुर्लभजीभाईनी ए लागणी हती के ट्रेनींग कोलेजना विद्यार्थीओने अंग्रेजी, संस्कृत अने प्राकृत भाषाओना ज्ञान तथा धार्मिक संस्कार मेळववानी साथे आगमनुं ज्ञान प्राप्त थाय तेवुं चोमासुं शोधवुं एटले

तेवा स्थाने चोमासाना चार महिना गाळवा. पोते जयपुरथी कच्छमां आवी स्थान वगेरे संयोगो पोतानी नजरे तपासी अंजार शहेरमां अनुकूळता जणायाथी अमारुं चोमासुं अंजारनुं नक्की करावी बधा विद्यार्थीओने तेडी आवी चोमासाना चारे महिना अंजारमां रहेवानो निश्चय कर्यो. श्री नन्दीसूत्रनी टीका तथा तत्त्वार्थाधिगम भाष्य वगेरे शास्त्रोनो अभ्यास चोमासाना चार मासमां कराव्यो अने पोते पण विद्यार्थीओनी दरेक व्यवस्था राखतां धर्मध्यान करवा रोकाया.

मोरबीथी कच्छमां आवता वच्चे दरियानी मुसाफरी करवी पडे छे. स्टीमरमांथी मच्छवामां अने मच्छवामांथी स्टीमरमां जतां काठियावाडना मुसाफरोने घणी अगवड पडे छे छतां विद्यार्थीओने आश्वासन आपी बधाने पोताना पुत्र जेटलो वात्सल्यभाव दर्शावी तेडी आव्या एटलुं ज नहि आवनार विद्यार्थीओने अजाण्या देशमां आणीने कोईरीते पोताना देशनो के मावापनो वियोग थयो छे एम जणायुं नहि. दुर्लभजीभाई विद्यार्थीओने पुत्रवत् मानता अने विद्यार्थीओ तेमने पिता तरीके मानता. 'बापु' कहीने ज बोलावता एटले मावापना वियोगनी वात ज क्यां रही! आवा वात्सल्यभावथी विद्यार्थीओने विद्याभ्यासमां खूब रस रहेतो. ट्रेनींग कॉलेजनी परीक्षा पास कर्या पछी पण दुर्लभजीभाईनी ह्याती पर्यंत एने ए वात्सल्यभाव परस्पर जोवामां आव्यो. ए बधुं तेमना हृदयनी विशालतानुं ज परिणाम छे.

अजमेर साधु-सम्मेलन

बीजो प्रसंग संवत १९८९ नी सालमां अजमेर साधु-संमेलननो छे. आ साधु-संमेलनमां जो तेओ सेनानी बनीने ऊभा न रहेत तो अजमेरनी जाहोजलालीनो प्रसंग उपस्थित थात के न थात ए एक सवालनो विषय बनत. आजे तेमनी गेरहाजरीमां बीजा साधु-संमेलननो प्रसंग उपस्थित थयो छे. घणा वखतथी ऊहापोह थई रह्यो छे. आखी कॉन्फरन्सनो साथ अने सहकार छे छतां कोई छाती ठोकीने सेनानी बनवाने तैयार थतो जोवामां आवतो नथी के जे अमृतसरनी शरतने पूर्ण करवा कटिबद्ध थई मोरचामां उभो रहे. सिंहनाद करवो ते रमतनी वात नथी. जो के सिंहने माटे तो ते सहज सिद्ध छे. आजे समाजने एवा अनेक सिंहोनी

पूरती जरूर छे; कारण के हवेनुं मुनि-सम्मेलन केवळ मुनिओनुं टोळुं नहि होय पण एक बीजा हृदयनी साथे जोडाएल हृदयवाळा वीर मुनिओना अजोड समूहरूप वीरसंघ हशे. वीरसंघनी गर्जना झीलनार वीरपुत्रो ज होई शके.

सिंहसमान धर्मवीरना जीवन-प्रसंगो वांची कदाच नवा सिंहना बच्चा पेदा थाय अने सिंहनादमां पोतानो नाद मेळवे एवी आशा राखी नादुरस्त तबीयत होवा छतां सिंहपुत्र-विनयचंद्रना आग्रहने वश थई तूट्या-फूट्या थोडा शब्दोमां जीवननो टूंको प्रस्ताव रजु कर्यो छे. आशा छे के आ संक्षिप्त प्रस्तावद्वारा जीवनरसना घूटडां पीईने वाचकवर्ग पोताना हृदयने अने आत्माने परिपुष्ट बनावशे तो थोडो परिश्रम पण बहु फलप्रद सिद्ध थशे. सुज्ञेषु किं बहुना!

पौषधशाळा
घाटकोपर: सम्मेलन-जयंती
संवत् १९९७ चैत्र शुद्ध १०

मुनि-रत्नचन्द्र

विषयानुक्रम





आमुख

स्व० धर्मवीर श्री दुर्लभजी त्रिभोवन झवेरीनुं जीवन कॉन्फरन्सना जन्मथी ते ३५ वर्षनी कारकीर्दी सुधी एवुं संकळायेलुं रह्युं छे के ते कॉन्फरन्सथी भिन्न करी शकाय तेम नथी. श्री दुर्लभजीभाईना व्यावहारिक जीवननी शरुआते ज कॉन्फरन्सनो जन्म थयो अने तेमना जीवनना उत्तरोत्तर विकास साथे कॉन्फरन्सनो पण विकास करता गया. कॉन्फरन्सनी स्थापना समये तेम ज अधिवेशनो समये समग्र हिंदनो प्रवास करी भिन्न भिन्न प्रांतोना—संघोना आगेवानोना परिचयमां आवी कॉन्फरन्सनी उन्नति तथा प्रगति माटे तेमणे सतत पुरुषार्थ सेव्यो हतो. आ दृष्टिए श्री दुर्लभजीभाईना जीवनमां कॉन्फरन्सनुं स्थान घणुं महत्वनुं हतुं. अजमेरना श्री बृहत्साधुसंमेलन अने नवम अधिवेशन ए एमना अविरत परिश्रमे ज शक्य बन्या हता. बरोबर आठ वर्षना गाळा बाद कॉन्फरन्सना दशम अधिवेशनने समये ज श्री दुर्लभजीभाईनुं आ जीवन चरित्र प्रकाशित करतां अमने घणो ज हर्ष थाय छे. आठ आठ वर्षना गाळा बाद आजे आपणे एमना जीवनध्येयनी सिद्धि अर्थे ज एकत्र मळीए छीए. ए समये अने भविष्यमां पण आपणने सौने ए मार्गदर्शक बनी रहे ए ज अंतरनी भावना छे.

आ प्रकाशननुं संपूर्ण खर्च स्वर्गस्थ धर्मवीर दुर्लभजीभाईना सुपुत्रो तरफथी आपवामां आवेल छे जेथी तेओनी कोन्फरन्स प्रत्येनी ममता अने सद्भावना प्रगट थाय छे.

चीमनलाल चकुभाई शाह	मोतीलाल मुथा
त्रिभोवन गोविंदजी शाह	व्रजलाल खीमचंद शाह
सहमंत्रीओ	रेसीडेन्ट सेक्रेटरीओ

मुंबई.
ता. १०–४–४१

श्री. श्वे. स्थानकवासी जैन कोन्फरन्स

■ સ્વ. ધર્મવીર શેઠ દુર્લભજી ત્રિભુવન ઝવેરી ■



दुर्लभ-जीवन

[संस्कार अने स्मृति]

खण्ड पहेलो

जीवन-चरित्र

स्व० श्रीयुत दुर्लभजीभाई त्रि० झवेरीनुं बालजीवन तथा व्यापारिक, कौटुम्बिक, सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय अने साहित्यिक क्षेत्रमां अर्पेली सेवाओ तेमणे आदरेली प्रवृत्तिओ अने अधूरा रहेला मनोरथोनुं संक्षिप्त किन्तु सारभूत शब्दचित्र



दुर्लभ-जीवन-सुरभि



[शार्दूलविक्रीडित]

धर्यो जन्म *मयूरपूरी महि ने, माता गृहे सांकळी,
सद्गुणो सुगुणी त्रिभुवनतणा, धारी थयां दुर्लभ;
स्थापी यौवन काळमां परिषदो, सेवी महा कष्टने,
कीधो पांत्रीस वर्षनो श्रम खरो, धारी धिरा ते धिरे.

कार्यो जीवदया तणां बहु करी, दानो दीधां गुप्त तें,
कोलेजे युवके अनेक भरियां, संस्कार धर्मों तणा;
स्थाप्युं जैन गुरुकुल ब्यावर महिं, जैनत्व विस्तारवा,
धन्यो धन्य अहो दुर्लभ पिता, 'हर्षे' ग्रहो अंजली.

*मोरबी

बालजीवन

[१] जन्मभूमिना चरणे!

सौराष्ट्रनी सरिताना जलप्रवाहमां राष्ट्र, समाज के धर्मना उद्धार अर्थे मरी फीटवानी संस्कारिता वहेती जोवामां आवे छे.

आ संस्कारितानुं बीज सौराष्ट्रनी सुरम्य भूमिमां ज आरोपित थयेलुं अने अंकुरित थयेलुं मालुम पडे छे. आ बीजमांथी जे सुमधुर फळो पाके छे ते मीठां फळोनो रसास्वाद अन्य प्रांतो अने अन्य देशोने पण मळे छे.

सोराष्ट्र-भूमि नी ए ज बलिहारी छे के, बीजने पोताना देहमां धारण करी, जलसिंचन वडे अंकुरित करे छे अने ज्यारे ते बीज वृक्षनुं रूप धारण करे छे अने फलान्वित बने छे त्यारे जगतने सोंपी पोताने कृतकृत्य माने छे.

विश्ववंद्य महात्मा गांधीजी, धर्म–ध्वजधारी दयानंद सरस्वती अने तत्त्वचिंतक राजचंद्र कवि–एओ सौराष्ट्र मातानो खोळो खूंदी मोटा थया ने राष्ट्र, धर्म के समाजना परम सेवक बनी विश्वनी विभूति बन्या.

धन्य छे जन्मभोम सौराष्ट्र माताने !

सौराष्ट्र माताना सपूतो माताना पुनीत चरणे पोताना जीवन-अर्घ्य चडावी पोताना जीवन ने धन्य माने छे.

बाळपणथी ज मातृस्नेहथी वंचित रहेवा छतां मातृभूमिनी ज सुख–साधना माटे झंखना करतो, प्रयत्न करतो अने पोताना प्राण पाथरतो मातृभक्त 'दुर्लभ' पण जन्मभूमिना चरणे पोतानुं जीवन–अर्घ्य चडावी कृतकृत्य थयो.

[२] जन्म

मच्छु नदीना नीरमां एवां प्राणतत्त्वो रहेलां छे के जेनुं रसपान करवाथी जीवनमां 'कांईक' करी छूटवानी तमन्ना पेदा थाय छे अने एक नरवीरनी माफक जीवन जीववानी भावना उद्भवे छे.

आ ज मच्छु नदीना कांठे आवेली मयूरनी शरीर–शोभानुं अनुकरण करती मनोहर मयूरपूरी नगरी (मोरबी)मां मोणसी अमोलखनुं कुटुंब घणुं प्रतिष्ठित तेम ज जाणीतुं छे. आ कुटुंबे पोताना स्नेह अने सद्भावभर्या व्यवहारथी आखा नगरमां पोतानी प्रतिष्ठा जमावेली छे.

मोणसी झवेरीना पुत्र त्रिभुवनदास स्वभावे शांत, बहुभद्रिक अने धर्मप्रेमी हता. पोताना झवेरातना धंधामां घणा ज व्यस्त रहेवा छतां तेमनामां धर्मप्रेम एटलो बधो ओतप्रोत थयेल हतो के पोताना वेपार–धंधामांथी थोडो घणो समय काढीने सामायिक प्रतिक्रमण वगेरे धर्मक्रिया करवा उपरांत प्रतिदिन जाते जैनशाळामां जता अने बाळकोने यथाशक्तिमति धर्मज्ञान आपता हता.

तेमना धर्मपत्नी श्रीमती सांकळीबाई पण धर्मनिष्ठ हता. कहेवाय छे के, 'सांकळीबाई बहु ज भोळा तेमज वत्सल हता. शेरीमां रखडतां–रझळतां बाळको प्रत्ये पण पोताना अंगजात पुत्रोनी माफक

• સ્વ. શ્રી ત્રિભુવનદાસ ભાણશી ઝવેરી •



જેમના ધાર્મિક સંસ્કારો તેમના સુપુત્ર ધર્મવીર
દુર્લભજીભાઈમાં ઉતર્યા હતા.

प्रेम दर्शावता. गरीब-गुरबाने स्नेहभावथी जमाडवा अने यथाशक्ति दानपुण्य करवुं ए तेमनो नित्यनो जीवनक्रम हतो'.

आवा धर्मनिष्ठ मातापिताने घेर संवत् १९३३ ना चैत्र वद १३ ना रोज अतिदुर्लभ 'दुर्लभ'नो जन्म थयो हतो.

गर्भमां अने गळथुथीमां ज धर्मप्रेमनुं पान कर्युं होय तेम श्री दुर्लभजीभाईनुं जीवन पण धर्मप्रेमथी रंगायेलु हतुं. आ धर्मरंग तेमना जीवनमां केटलो अने केवो उतर्यो हतो तेनो ख्याल आगळ आवशे.

[३] बाल्यकाळ

छ वर्षनी उंमर तेमणे बाळकोनी रमत गमतमां पसार करी हती परंतु पिताश्रीनी साथे उपाश्रयमां तथा जैनशाळाए जवानी टेव नानपणथी ज पडी हती. आ धर्मसंस्कारने कारणे तेमना जीवनमां तोछडाई, कटुता के क्लेशवृत्ति प्रवेश पामी न हती. आ कारणे नानामोटा दरेक प्रत्ये सन्मानपूर्वक वर्तवुं, अतिथिओनो आदर-सत्कार करवो, गरीबोने मदद करवी वगेरे सद्गुणो तेमना जीवनमां नानपणथी ज प्रगट थया हता अने आ बालसंस्कारो जीवन पर्यन्त टकी शक्या हता.

तेमनो प्रारंभिक अभ्यास घेर ज थयो हतो. तेमना पिता यथाव काशे एकडेथी सो सुधीनुं अंकज्ञान आपता अने मूळाक्षर वगेरे शिखडावता अने ज्यारे तेमने निशाळे जवानी वृत्ति उद्भवी त्यारे तेमना घर पासेनी निशाळमां मूकवामां आव्या. त्यां तेमणे गुजराती चार धोरण सुधीनो अभ्यास कर्यो. नियमित अभ्यासवृत्ति तथा भलमनसाईथी तेमणे गुरुजीनो प्रेम संपादित कर्यो हतो अने बाळ-गोठियाओना स्नेहपात्र बनी शक्या हता.

रमतगमतमां तेमनुं मन बहु चोटतुं न हतुं छतां ते बहु रसिक, हसमुख अने विनोदवृत्तिवाळा हता. कंटाळेला मगजने विनोदवृत्तिथी आनंदित बनाववुं ए तेमनी खास खासियत हती.

नानपणथी ज तेमनामां नवुं सांभळवानी, नवुं जाणवानी, नवुं शीखवानी अने ते उपर मनन करवानी भारे टेव हती. नानानाना टुचकाओ जोडवा, संवादो बोलवा, भाषणो आपवा तथा नानानाना लेखो लखवा, जुदाजुदा देशोनी काममां आवेली टिकिटोनो संग्रह करवो अने समाचारपत्रोनी कापलीओ राखवी—ए बधा तेमना बाळजीवनना शोखना विषयो हता.

चार गुजराती धोरण सुधीनो अभ्यास पूर्ण कर्या पछी अंग्रेजीना शिक्षणनी शरूआत करी अने उत्साह तथा उमंगथी पांच अंग्रेजी धोरण सुधी अभ्यास वधार्यो त्यारे तेमनी उंमर मात्र १३ वर्षनी हती. ते वखते मेट्रिकनी किंमत घणी ऊंची अंकाती हती अने मेट्रिक पास थनार प्रत्ये लोकोनो आदरभाव विशेष रहेतो हतो. श्री दुर्लभजीभाई पण नानी उंमरमां ज मेट्रिक नी परीक्षा पसार करी नामना मेळववा चाहता हता परंतु तेमनी हृदयगत इच्छा पार पडे ते पहेलां तेओ रूढिना करुण भोग बनी गया. आ प्रसंग तेमना जीवन-विकासमां विघातक निवड्यो एम कही शकाय.

[४] रूढिना भोग

रूढि देवीने प्रसन्न करवा माटे केटकेटला भोग अपाया छे अने प्रतिवर्ष अपाय छे तेनो ज्यारे आंक काढवामां आवशे त्यारे राष्ट्र के समाजनी आंख उघड्या वगर नहीं रहे.

खानदानी, प्रतिष्ठा के आबरू नी खातर अनेक खिलती कळीओने चिमळावी देवामां आवे छे, अनेक युवानोना मनोरथो उपर पाणी फेरवी देवामां आवे छे अने यौवन–धनने निरर्थक वेडफी देवामां आवे छे.

खोटी खानदानी अने खोटी आबरूनी रक्षाने काजे समाजनी रूढिए अनेक बलिदानो लीधां छे अने अनेकनां जीवन रगदोळ्यां छे. श्री दुर्लभजीभाईने पण एवी ज खोटी खानदानीना भोग बनवुं पडयुं हतुं.

ए वखते खानदान अने प्रतिष्ठित कुटुंबो पुत्र-पुत्रिओना नानपणमां ज लग्न करवामां शोभा समजता हता. तेथी ज स्व. दुर्लभजीभाईना लग्न पण १३ वर्ष जेटली नानी उंमरमां ज करी देवामां आव्या हता.

श्री दुर्लभजीभाई पोते पण घणीवार कहेता हता के:—

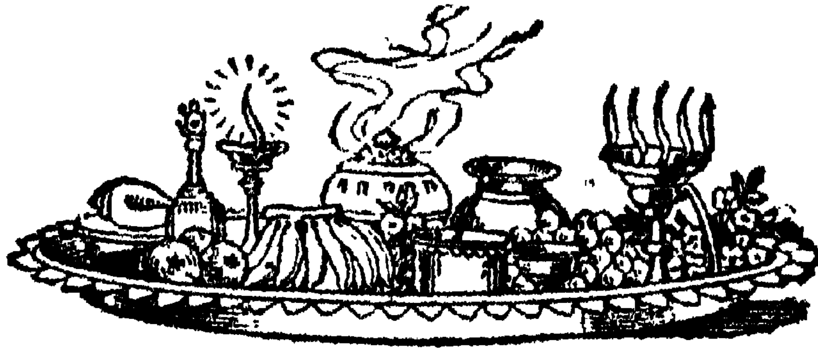
'जे रूढिनो हुं भोग बनी चूक्यो छुं ते रूढिनो ज भंग करवा माटे मारे समाजमां तत्पर रहेवुं पडशे तेनी मने त्यारे खबर न हती. मारुं लग्न बहु ज नानी ऊंमरमां थयुं हतुं ए कहेतां मने अत्यारे पण शरम आवे छे. हुं ए शरम नो मार्यो समाज-मां लग्न नो प्रश्न पण चर्चा शकतो न हतो. लग्न ए जो समजणपूर्वकनी जीवनसंधि होय तो मारे कहेवुं जोईए के, अमारा ए लग्न रूढिना भोग बनी चूक्या हता. अमारा जीवनमां पवित्रतानी रेखा दोरायेली हती, एटलो ज मारे मन भारे संतोष हतो. अमारा जीवनमां कटुता न हती.'

[५] अभ्यास

रूढिना भोग बनवा छतां तेमनी विद्या–अभिलाषा जरापण मंद थई न हती. अभ्यास तो पूर्ववत् चालु ज राख्यो हतो अने १५ मे वर्षे मेट्रिक नी परीक्षा मां बेठा हता. परन्तु

भाग्यना भरोसे परिणाम आपती ए परीक्षामां तेओश्री पास न थया. एटले परीक्षा नी माथाकूट करवी पडती मूकी, पोताना जीवन मां जे साहित्यशोख जीवंत हतो तेनी पूर्ति करवा तेओ अमदावाद गया अने त्यां एक वर्तमान पत्र ना उपतंत्री (Sub editor) बन्या.

अमदावादमां अभ्यास करवाना अनुकूळ संयोगो मळतां तेओए फरी एकवार पोतानुं विद्यार्थी-जीवन चालु कर्युं. अने दिवसमां पत्रकार तरीके कार्य करवा उपरांत रात्रिनो जे वखत मळतो तेनो उपयोग तेओ अभ्यास माटे करता. आ प्रमाणे तेमणे बीजीवार मेट्रिकनी परीक्षा आपी पण निष्फळ निवड्या.



व्यापारिक–जीवन

[१] व्यापारप्रवेश

मेट्रिकनी परीक्षामां सफळता न मळवाने कारणे तेओए पोतानी जीवनदशा बदलवानुं नक्की कर्युं.

अमदावादना परिचित स्नेहीजनोनो अमदावादमां ज रही कोई कार्यारंभ करवानो अत्याग्रह, सरकारी नोकरी मळवानां प्रलोभनो अने पोताना बापदादाना झवेरातना धंधामां जोडावा तेमना मातापितानो आदेश–आ त्रण विकल्पो वच्चे तेमनुं जीवन झोलां खाई रह्युं हतुं. एक बाजु अमदावादना आनंदना अनुभवो आकर्षतां हता त्यारे बीजी बाजु सरकारी खुरसी उपर बेसी सत्ता चलाववानो शोख जागतो हतो अने त्रीजी बाजु मातापितानी छत्रछायामां रहेवानी भावना उद्भवती हती. आ वखते तेमनुं जीवन घणुं ज डामाडोळ हतुं. तेमना मनमां अनेक मुंझवणो पेदा थई रही हती. शुं करवुं? कयो मार्ग लेवो? अने केवी रीते पोतानो जीवनविकास साधवो? ए तेमनी सामे मोटो कोयडो हतो. छेवटे तेओ एवा निर्णये पहोंच्या के, 'परतंत्र जीवन व्यतीत करवा करतां कष्टपूर्वक स्वतंत्र जीवन जीववुं ए लाख दर्जे सारुं छे अने एमां ज जीवननो साचो विकास छे तथा ए ज उन्नतिनो मार्ग छे.'

आ प्रमाणे दृढ निश्चय करी अमदावादथी मोरबी माटे प्रयाण कर्युं अने बापदादाना धंधाने विकसाववानुं कार्य आरंभ्युं.

[२] वेपारविस्तार

प्रारंभमां तो आ व्यापारिक जीवन तेमने कपरुं अने कंटाळा-भरेलुं लाग्युं. आखो दिवस ग्राहको साथे माथाकूट करवी, वळी रात्रे चोपडा चीतरवा, मेळ मेळववो अने ते उपरांत आखा कुटुंबनो व्यवहार साचववो ए बंधु तेमना स्वतंत्र रहेवाना मनोरथो ने आघात पहोंचाडतुं होय एम तेमने लाग्युं पण जेम जेम समय पसार थतो गयो तेमतेम मळता अनुभवोथी तेमने खात्री थई के, व्यापारिक जीवन कष्टसाध्य होवा छतां सुखमय अने शांतिप्रद छे.

ते वखते मोणसी अमुलखनी पेढीनो बहु मोटो विस्तार न हतो. अने ते मोरबी तथा आसपासना क्षेत्रमां ज जाणीती हती. सद्गते पोतानी पेढीने विस्तृत रूप आपवा अनेक योजनाओ घडी अने ए योजनाने सक्रिय रूप आपवा माटे पोताना अमदावादना अनुभवोनो उपयोग कर्यो.

सर्वप्रथम तो व्यापारधंधानो विकास करवा अने अन्य वेपारीओने पोतानी पेढीनो परिचय आपवा खातर पोते जाते भिन्नभिन्न प्रान्तोनो प्रवास खेडयो, झवेरात संबंधी साहित्य मंगावी तेनुं अध्ययन कर्युं अने अनेक झवेरी पेढीओ साथे पत्रव्यवहार वडे नवा नवा वेपार-संबंधो जोड्या.

[३] शाखाओ

पोताना प्रवासना अनुभवोना परिणामे तेओ एम समजी शक्या के, पोतानी पेढीनो वेपारविस्तार वधारवा खातर तेनी एक शाखा एवा स्थळे खोलवी जोईए के, ज्यां झवेरातनो वेपार

मोटा पाया उपर चालतो होय अने ज्यां आसपासमां मोटा राजा रजवाडाओ होय. पोतानी दीर्घदर्शिताथी तेमणे झवेरातना वेपार माटे भारतनुं मध्यवर्ती अने केन्द्रसमुं जयपुर नगर वधारे अनुकूळ लाग्युं अने तेथी तेओए सने १९११ (संवत १९६७)मां जयपुर आवी 'मोणसी अमोलख'नी पेढीनी शाखा खोली.

'सद्निष्ठा अने प्रामाणिकता' ए एमनो वेपारनो मुद्रालेख हतो अने आ मुद्रालेखने छेवट सुधी वळगी रह्या तेथी अर्थलाभ थवा उपरांत तेओश्रीने प्रतिष्ठा अने प्रसिद्धि पण प्राप्त थई.

दिवसे दिवसे वेपार वृद्धि पामतो गयो. एटले पोताना नाना बे भाईओ (श्री छगनलालभाई तथा श्री मगनलालभाई)ने पण वेपारमां पगभर करवा माटे इन्दोर जेवा मध्यप्रांतना केन्द्रमां बीजी शाखा खोली अने त्यां खाते तेमने नियुक्त कर्या. परंतु कालनी गति विचित्र छे. ते वखतमां श्री दुर्लभजीभाईना जमणा हाथसमा श्री मगनलालभाई जयपुरमां प्लेग थतां कानपुर गयेला अने त्यां ज स्वर्गवासी थया. आ दुःखद घटनाथी श्री दुर्लभजीभाईने घणो आघात पहोंच्यो, जेथी तेमनी सुषुप्त धर्मभावना जागृत थई अने धर्म तथा समाजना उद्धार अर्थे तन, मन अने धनथी सेवा करवानी जिज्ञासा उद्भवी. परंतु ते वखते व्यापारिक अने कौटुंबिक बंधनोथी एवा जोडायेला हता के, तेओश्री पोतानी हृदयगत इच्छाने पार न पाडी शक्या पण आ सांसारिक अनेकविध आधि, व्याधि अने उपाधिने तथा जंजाळोने ओछी करवाना हेतुथी पोते जुदा थवानो विचार कर्यो अने नानाभाई श्री छगनलालभाईनी सम्मति मळतां तेओ छूटा पड्या अने संवत १९७८ मां तेओए 'दुर्लभजी त्रिभुवन झवेरी'

अने तेमना भाईए 'कांतिलाल छगनलाल झवेरी' ना नामथी जयपुरमां ज पेढीओ शरु करी, के जे हजुसुधी पारस्परिक स्नेह–संबंध साचवती अने कौटुंबिक मर्यादानी रक्षा करती मोटा पाया उपर चाली रही छे.

[४] वेपारथी निवृत्ति

श्री दुर्लभजीभाईनी वेपारदक्षताने परिणामे नवी पेढीने पण खूब प्रतिष्ठा अने प्रसिद्धि मळी. परंतु जेम जेम वेपारनो विस्तार वधतो गयो तेम तेम वेपारमांथी निवृत्त थवानी तेमनी भावना पण प्रबळ थती गई. तेमणे पोताना पुत्रो उपर ज वेपारनो कार्यभार नांखवानो संकल्प कर्यो, एटले पुत्रोने धीरे धीरे वेपारक्षेत्रमां खेंचता गया.

श्री दुर्लभजीभाई पुत्रोने वेपारमां आगळ वधारवा माटे खूब सतर्क अने सावधान हता. 'बाप तेवा बेटा' ए कहेवत मुजब पुत्रो पण विनयशील, समयज्ञ अने वेपारकुशळ थया. अने धीमे धीमे जेम जेम मोटा अने समजु थता गया तेम तेम वेपारमां साथ आपवा लाग्या. अने करांची तथा रंगुनमां पण शाखाओ खोली वेपार वधार्यो.

जेम जेम पुत्रो कार्य संभाळता गया तेम तेम तेओ व्यापारिक जंजाळमांथी हाथ पाछो खेंचता गया. अने पोतानी ५० वर्षनी उम्मरे तो लगभग बधो व्यापारिक बोजो पुत्रोने सोंपी पोते बिलकुल निवृत्तिमय जीवन गाळवा लाग्या.

निवृत्तिमय जीवननो अर्थ प्रमादी जीवन नहि पण स्वार्थवृत्तिनो जेमां लेश पण न होय एवुं परोपकारी प्रवृत्तिमय जीवन. आवा निवृत्तिमय जीवनमां तेओए अनेकविध राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक शुभ प्रवृत्तिओमां आगळ पडतो भाग लई, ते जीवनने केवो सदुपयोग कर्यो ते आगळ उपर जोईशुं.

[५] वर्त्तमान स्थिति

श्री दुर्लभजीभाईना वेपारकुशळ पांचेय पुत्रोए उत्साह, उमंग अने खंत तेम ज धैर्यपूर्वक पोताना पूज्य पिताश्रीना वेपार अने वहेवार संबंधी मुद्रालेखोने लक्ष्यमां लई पोताना वेपारनो विस्तार मुंबई अने विलायत सुधी वधार्यो.

तेमना सौथी मोटा पुत्र विनयचंद्र झवेरी विदेशनी व्यापारिक स्थितिनो अभ्यास करवा त्रण वखत इंग्लांड, फ्रांस, रशिया, जर्मनी अने अमेरिका आदि देशोमां जई आव्या. आ पर्यटनोना अनुभवोथी तेमणे जाण्युं के, झवेरातना धंधानो—जे धंधो विदेशोमां तो खूब मोटा पाया उपर चाली रह्यो छे—विदेशो साथे संबंध जोडवा माटे विदेशना मध्यवर्त्ती अने झवेरातना धंधाना केन्द्रसमान पेरिस नगरमां पण शाखा खोलवानी जरूर छे. आवा निर्णय पछी त्यां तेओए शाखा खोली अने सौथी नाना पुत्र खेलशंकर भाई त्यां खाते रह्या. श्री. शांतिलालभाई पण अनुभव लेवा पेरिस पहोंच्या; परंतु अत्यारे विग्रहने कारणे बन्ने भाई हिंदुस्थानमां ज आवेल छे. मुंबई खातेनुं कामकाज गिरधरलालभाई, ईश्वरलालभाई अने शांतिलालभाई वाराफरती संभाळे छे.

दुर्लभजीभाईनी पेढी अत्यारे जयपुरमां केटलीक बल्के घणी बाबतमां अग्रस्थान भोगवे छे. जयपुरमां अने आजुबाजुनां रजवाडामां दागिना पूरा पाडवामां अने एक्सपोर्ट अने इम्पोर्टना व्यापारमां तेमनी पेढीनुं स्थान मोखरे छे.

श्री. दुर्लभजीभाईना वेपार-विस्तारमां मुख्यत्वे तेमनी प्रामाणिकता, परिश्रमवृत्ति अने समयसूचकता कारणभूत छे.



गृहस्थ–जीवन

[१] सुखी सद्‌गृहस्थ

संसारमां अनेक मानव–प्राणीओ छे, पण बधा मनुष्योनुं जीवन सुखी जोवामां नथी आवतुं. अनेक मनुष्यो जीवननी अंतिम क्षण सुधी गृहसंसारनी अनेक प्रकारनी पीडाओथी पीडाता जोवामां आवे छे. कोई पुत्रप्राप्तिनी कामनामां, तो बीजा धनदोलतनी चाहनामां ज पोतानुं जीवन पुरुं करी चाल्या जाय छे. एमनी आ अभिलाषाओ अपूर्ण ज रही जाय छे अने सद्‌भाग्ये जो कोईनी इच्छाओनी पूर्त्ति थवा लागे छे तो **'लाहा लाहो विवड्ढई'** ए शास्त्रोक्ति मूजब तेमनी लालसाओ वधती ज जाय छे. आवा मनुष्यो छेवट सुधी तृष्णामां तणाता ज रहे छे. संतोषथी प्राप्त थती शांतिना आनंदनो अनुभव करी शकता नथी.

जेमनुं गृहस्थ–जीवन दरेक रीते सुखी होय अने गार्हस्थ्य जीवन संबंधी कोई पण इच्छाओ जेमनी बाकी रही न होय एवा मनुष्यो कोई विरला ज होय छे. श्री झवेरीजी एवा ज विरला पुरुषो पैकीना एक हता. गृहस्थ–जीवननी दरेक सुखसामग्रीओ तेमने धर्मप्रतापे मळी हती. प्रेमी भाई–भगिनीओ, सुशीला पत्नी, विनीत पुत्रो, परिपूर्ण धनधान्य तथा अन्य गृहस्थोपयोगी सघळी साधन–सगवडताओ तेमने प्राप्त थई हती. एकंदरे तेओश्री आ युगना एक सुखी सद्‌गृहस्थ हता. अने तेमणे आ सघळा सुख–साधनोनो एक आदर्श गृहस्थनी माफक ज उपभोग कर्यो हतो.

ધર્મવીર શ્રીમાન્ શેઠ દુર્લભજીભાઈ તથા તેમનો કુટુંબ પરિવાર સપ્ટેમ્બર ૧૯૩૩ની આખરી પછી



બેઠેલાઓ: ૧ ભાઈ મણિશંકર ૨ ભાઈ ગિરધરલાલ ૩, ૪ ધર્મવીર શ્રી દુર્લભજીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની સતોકબા
૫ ભાઈ વિનયચંદ ૬ ભાઈ રમણલાલ ૭ ભાઈ શાંતિલાલ.

एक 'गृहपति' तरीके कुटुंब-परिवारनुं सारी रीते पालनपोषण करवुं, पुत्रोना भविष्यनो विचार करी सुशिक्षित करवा अने पोताना कार्योमां विशेष कुशळ बनाववा—आ बधा कर्त्तव्योनुं तेमणे घणी ज चतुरताथी संपादन कर्युं हतुं एटले ज तो तेओश्री आजे पोतानी पाछळ एक खूब फूल्यो–फाल्यो, पूर्ण सुखी, स्थितिसंपन्न अने सुशिक्षित परिवार छोडता गया छे. तेओ पोते पण सुशिक्षित अने दीर्घदर्शी पुरुष हता.

[२] पारिवारिक जीवन

तेमने बे भाई अने बे बहेनो हती. सौथी नाना भाई मगनलाल तो नानी उंमरमां ज मरण पाम्या हता. श्री छगनलालभाई जयपुरमां ज झवेरातनो पोतानो जुदो धंधो करे छे. बन्ने बहेनोने सारा घरे परणावी दीधी होवाथी आ बाबतमां तेओ निश्चिंत हता. भाई बहेनोनो एक बीजा प्रत्ये छेवट सुधी प्रगाढ प्रेम सचवाई रह्यो हतो ए वधारे आनंदनो विषय हतो.

तेमना धर्मपत्नी श्रीमती संतोकबाई तेमने अनुकूल ज हता. स्वभावे शांत, सहिष्णु अने सादगीप्रिय होवाथी तेमना तरफथी तेमने घणो ज संतोष हतो.

तेमने पांच पुत्ररत्नो छे. पांचेय भाईओनो पिता प्रत्ये तो अथाग प्रेम हतो ज, परंतु पांचेय भाईओ वच्चे पण परस्पर अनेरो प्रेम छे अने ए ज कारणे आजसुधी बधांय साथे संयुक्त कुटुंबरूपे रहे छे.

पांचेय पुत्रोमां श्री वनेचंदभाई सौथी मोटा छे एटले ज बधा भाईओ तेमने 'मोटुभाई'ना नामथी संबोधे छे अने श्री मोटुभाईए पोताना मोटा गुणोथी पोतानुं नाम पण सार्थक कर्युं छे. श्री झवेरी-

जीना गुणो श्री मोटुभाईमां मोटा प्रमाणमां उतर्यां छे. श्री झवेरीजी माफक तेओश्री गंभीर अने विचारशील छे. अत्यारे आखा कुटुंबनो तथा वेपारनो भार तेमना ज माथे छे अने तेने खूब कुशळतापूर्वक संभाळी रह्या छे. आ सिवाय तेमना पू० पिताश्रीए जे अनेकविध प्रवृत्तिओमां भाग लीधो हतो, तेमां पोते पण यथाशक्य सहकार आपी रह्या छे. जो के तेओए मेट्रिकथी वधारे अभ्यास नथी कर्यो, छतां अनुभवोथी ज योग्यता मेळवी छे अने वेपारना अभ्यास खातर त्रण त्रणवार विदेशना प्रवासो खेड्या छे.

बीजा पुत्र श्री गिरधरलालभाई पण घणा ज विवेकी अने सरल स्वभावी छे. नानपणथी ज पू० पिताश्री अने श्री मोटुभाईने वेपारमां सहकार आपवो पड्यो होवाथी तेओने आगळ अभ्यास करवानो अवसर मळी शक्यो नथी छतां वेपारमां होशियार छे. जयपुरनी शाखानी देखरेख तेओ ज करता आव्या छे अने आखी पेढीना नाणाखातानो अने हिसाबखातानो वहिवट तेमना ज हस्तक छे.

त्रीजो नंबर श्री ईश्वरलालभाईनो छे. वेपार-कुशळताने लीधे घणा वर्षोथी मुंबईनी ओफिसनो कारभार तेओ ज संभाळता रह्या छे.

चोथा पुत्र श्री शांतिलालभाई छे. एमना कुटुंबमां सर्वप्रथम युनि-वर्सिटीनुं शिक्षण लेनार तेओ ज छे. लखनऊ युनिवर्सिटीना ग्रेज्युएट (B. A.) थया छे. विचारो अने आचारोथी तेओ राष्ट्रवादी युवक छे. खादी ए तेमनो पोशाक छे. १९३० ना सत्याग्रह संग्राममां एमणे सक्रिय भाग लीधो हतो अने धोलेरामां सत्याग्रह करतां पोलिसना हाथनो मार शांतिपूर्वक सहन कर्यो हतो. त्यारथी ज तेओ राष्ट्रप्रवृ-त्तिओमां भाग लेता थया छे. अत्यारे पण जयपुर प्रजामंडळ अने



પ્રેમના બંધનથી બંધાએલા 'બાપુજી'

સન્તોની સાથે બેસો તો સંસારના તાપ શાન્ત થાય.



બાળકો વચ્ચે 'બાપુજી'

त्यांनी राष्ट्रीय प्रवृत्तिओमां तेओ मोखरे ज होय छे. जयपुरनी सुबोध मिडल स्कूलना तेओ मानद मंत्री छे.

श्री खेलशंकरभाई सौथी नाना छे तेटला ज सौना लाडका छे. तेओ पण ग्रेज्युएट (B. Com.) थया छे. वेपारमां मगज सारुं काम करे छे. तेमनी पेढीनी पेरिस खातेनी शाखामां तेओ सपरिवार त्रण वर्ष रह्या अने वेपारनी खूब खिलवणी करी.

श्री झवेरीजी पोतानी पाछळ समाज–सेवा माटे पांच पुत्रो मूकता गया छे अने तेमना छट्ठा धर्मपुत्र तरीके श्री धीरज–लालभाई के० तुरखिया सन्मान मेळवी शक्या छे. आ छ भाईओनो संबंध पूर्ववत् कायम छे. उपर्युक्त छ पुत्रो उपरांत कोलेजना तथा जैन गुरुकुळ, ब्यावरना तमाम स्नातको तेमने 'बापूजी'ना नामथी ज संबोधे छे ने तेटलो ज पूज्यभाव राखे छे.

श्री झवेरीजीने मन स्था० समाज तथा तेनी संस्थाओना बाळको पोताना अंगजात पुत्रो जेवा ज लागता हता. तेओश्री तमाम संस्था-ओने पोतानी मानता तथा तमाम प्रत्ये आदरभाव राखता.

तेओश्री पोतानी पाछळ पितृभक्ति धरावता सेंकडो बाळको–संतानोने स्नेहभावे समाज–सेवा माटे मूकता गया छे.

[३] अदा : एक विशिष्ट व्यक्ति–

श्री झवेरीजी कुटुंब, वेपार, धर्म के समाजनी एक या बीजी गुंचवणमां लगभग हमेशां गुंचवायेला ज रहेता हता; तो पण तेओ स्वभावे घणा ज आनंदी अने बाळुडाओना मित्र हता. ए एमना गृहस्थजीवननी एक विशेषता हती. गमे तेवा विचारोनी जाळमां तेओ गुंथायेला होय छतां ज्यारे कोई बाळक तेमनी

पासे आवी पहोंचतुं तो ते बधी विचारमाळाओने एक खींटीए लटकावी बालक्रीडामां जोडाई जता. कारण के तेओश्री बाळकोने परमात्माना अंश मानता हता. तेओश्री 'अदाना अनुभव' नामना पोताना एक लेखमां लखे छे के :–

'घरने आंगणे घोडिया होवा ए शुकन मनाय छे. वांझीया गमे तेटला श्रीमंत होय छतां अपशुकनिया ज मनाय छे. गृहस्थाश्रमनो श्रम बाळकोना कालाकाला हसवाथी ज उतरी जाय छे. ए निष्पापी निर्दोष बालुडांओनी मारी पथारी परनी कुदाकुदे, घणी वखत मारी मानसिक उपाधिओना कोयडाओ उकेली दीधा छे.

अने वळी आगळ जतां लखे छे के:–

'संतानो सामे बेसो तो संसारना ताप शान्त थाय.'

तेओने बाळको प्रत्ये शुद्ध हार्दिक प्रेम हतो एटले प्रेमना भूख्या बाळको 'अदा' ने जोतां ज बाथ भीडी बाझी पडता. बाळको विना अदाने पण एक घडी चेन पडतुं नहि. सवारनो विशेष समय बाळको वच्चे गाळवानो एटले नित्य–नियम करती वखते पण बाळको पासे बेसे तो ज शांति रहे. कोई माळा उपाडी गळामां पहेरी ले, कोई पुस्तक उपाडीने जोवा मांडे अने कोई गळे बाझी पडे. आ पौत्र–पौत्रीओनां पंच वच्चे अदाने नित्य नियम करवानां. एक उठे ने एक जागे अने एक उगे ने एक आथमे; अदाए दिलगीर के गुस्से थवुं शे पालवे ?

'निर्दोष बाळकना नाजुक पगनी मृदु पाटुडीओना घा जेणे सहन नथी कर्या तेणे गृहस्थाश्रमना ल्हावाओनी मीठाश नथी ज चाखी. आ पाटुडीओना स्पर्शथी छूटता प्रेम–प्रवाहथी पाचन–शक्तिने मळती मददनो खरो ख्याल तो अनुभवीओ ज आपी शके.'

❀ ❀ ❀

'आने कोई कुटुंबजाळ कहे, कोई मायाजाळ कहे, तो कोई आगळ वधीने निवृत्त जीवन ऊजववाने समये संसारमां फसता जवानुं जणावे; पण ए उद्गारो अनुभवसिद्ध ओछा ज छे ! रसोई करती माताना रडता बच्चाने खोळामां सुवाडी, शांत करतां पण प्रभु-भजन, तत्त्व-चिंतन के आत्म-निरीक्षण करीए तो आपणने कोई रोकी शके छे ?'

❋ ❋ ❋

'मारो स्वानुभव तो एटलुं उमेरे छे के, खोळामां ऊंघतुं बाळक तो उपयोगी उपदेश अर्पे छे, दिलना दर्पणमां प्रभुनुं प्रतिबिंब पाडे छे.'

आ बधां फकराओ अदाना अनुभवोनां छे जे तेमनो पोताना पौत्र-पौत्रीओ तथा बीजा बाळको प्रत्येनो प्रेम प्रदर्शित करे छे.

[४] अतिथि-सत्कार

श्री झवेरीजीना मकानमां परोणाओ माटे एक खास होल (Guest house) हतो. [तेमना अत्यारना जयपुर अने मोरबीना मकानोमां पण छे ज.] पोते ज तेमां बेसता अने अतिथि विनानो दिवस एमने अणगमतो लागतो. नामठाम न जाणनार पण गुजराती भाई बजारमां नीकळे तो श्री झवेरीजी बोलाव्या विना न ज रहे. 'अतिथि देवो भवः' नुं बोर्ड एमनी बेठकमां वांचवा मळतुं. एक प्रसंगे कोई पुस्तको वेचवा निकळेल स्वधर्मी भाई साथे तेओश्री वाते वळग्या. तेमना पुत्रो जमवा बेसी गया. पोते भाणुं नीचे ज मंगावता अने भाणामांथी अमुक वाटकीओ ओछी कर्या बाद ज आहार करता. भाणुं आव्युं अने अतिथि आंगणे हजु सुधी भूख्यो रहे ए एमने ऊणप लागी. पोते भाणुं नरम तबीयतना बहाने पाछुं मोकलाव्युं त्यारे ज उपर खबर पडी के, आपणे परोणाने हजु सुधी जमवा न बेसाड्या तेनो दंड बापूजीए पोता उपर लीधो छे. ते दिवसे आखा दहाडामां

एक कप दूध ज लई, आवी गफलत फरी न थवा पामे एवी घरमां बधांयने चेतवणी आपी.

तेमना अतिथि–सत्कार माटे सत्कार पामेला लोको कहे छे के, तेमनो अतिथि–सत्कार घणो अजोड हतो. तेओश्री महेमाननो हर्षभावे सत्कार करता, ऊभा पगे भोजन समये तेमनी सेवामां हाजर रहेता अने पोते जमनारना शरीर तथा थाल पर पंखो नांखी आवनार ने अतिथि सत्कारनो तथा नम्रतानो आदर्श पाठ शीखवता हता.

देशभक्तो, राष्ट्रनायको, समाजसेवको, श्रीमंतो, उदार कार्यकर्त्ताओ उपरांत पोताना वेपार निमित्ते निकळेला अनेक अपरिचित जनो तेमना अतिथि बन्या हता.

गरीब गरबाओ तेमज भीख मांगनाराओने पण तेओ अतिथिरूपे ज समजता अने यथाशक्य मदद करता परंतु कोईना तरफ तिरस्कारभरी नजरे जोई, तरछोडी, निराश करीने तो पाछा न ज वाळता.

[९] साचो श्रीमंत

श्री झवेरीजी खरेखर लक्ष्मीना दास नहि पण लक्ष्मीपति हता. लक्ष्मीनो मद, कुटुंबनुं अभिमान के मोटाईनुं मान तो तेमने जरापण न हतुं. श्रीमंत होवा छतां खानपान, वेशभूषा, वगेरे दरेक बाबतमां तेमने सादाई प्रिय हती.

आवा निरभिमानी, विवेकी अने मायाळु होवाने लीधे ज तेओ वृद्धो, युवको अने बाळको दरेकना प्रेमपात्र बनी शक्या हता. छेल्ला वर्षोमां तो अस्वस्थताने अंगे मोटरमां आवता, पण पहेलां कदी कदी दुकाने एक कलाक माटे आववा पगपाळे नीकळता त्यारे अमे

नजरे जोयुं छे के, घेरथी दुकान सुधी पहोंचतामां अनेक हाथ ऊंचा थता. 'शेठजी साहेब,' 'जेरामजी,' 'जयजिनेन्द्र,' 'बाप बेटानी जोडी अमर रहो,' 'अन्नदाता' आवा सत्कारो गंभीर वदने झीलतां दुकाने पहोंचता. अने ए समय साधी वचन नांखनार कांईने कांई मेळवीने ज जता. बजारना दलालो अने एमनी पेढी पासे ज पाटपर बेसता वेपारीओ एमना प्रति पूज्यभाव राखता अने केटलाक तो कहेता के, खरेखर पूरा पूरा पुण्यशाळी—भाग्यशाळी छे. एम कही छूपा आशीर्वादो आपता.

आम एमना यशोगान, गाम परगामना जे जे लोको तेमना संबंधमां जरापण आव्या हता ते गाया विना न ज रहेता.

[६] कुटुंबव्यवस्था

ख० श्री झवेरीजीना दरेक कामो लांबा विचारो अने लांबी नजरथी ज करेलां होय. वर्तमाननी साथे साथे भविष्यनो खूब ज ख्याल राखता. एटले तेओश्रीए पोतानी सामे ज कुटुंबनी सारी व्यवस्था करी लीधी हती.

छेल्ला वर्षोमां एमना मोटा परिवारने अनुकूल बे सुंदर अने विशाळ मकानो—एक तो जयपुरमां 'मोरबी हाऊस' ना नामे ३० हजार रू. ना खर्चे अने बीजुं मोरबीमां 'जयपुर हाऊस'ना नामे रू. ४८ हजार ना खर्चे बंधाव्यां हतां. बन्ने मकानोमां पांचेय भाईओ, श्री झवेरीजी तथा तेमना पत्नी, घरना बाळको, पेढीना माणसो तथा पुरुष अने महिला अतिथिओ तथा नोकरो माटे जुदा जुदा रूमोनी सारी सगवडता छे.

बधाय एक ज रसोडे एक साथे जमे छे. रसोडा पासे जमवानी पण एक रूम छे. भोजननो वखत थतां बधाय पुरुषो—महेमान अने पेढीना माणसो सीखे—एक साथे जमी ले छे; पछी बधी स्त्रीओनो वारो आवे छे. जमती वखतनुं वातावरण घणुं ज आनंदप्रद होय छे.

स्व० श्री झवेरीजीना बधाय पुत्रोना लग्नसंबंध प्रतिष्ठित घरोमां थयेलां छे. श्री चुनीलाल नागजी वोरा राजकोट, अंबावीदास शेठ, केशवजी नीमचंद, नगरशेठ विकमचंद अमृतलाल मोरबी, श्री मूळजीभाई लाखाणी राजकोट, उमियाशंकर भाईचंद, नाथा गोरधन थानवाळा, गढडावाळा नगरशेठ मोहनलाल भाई, श्री रामजीभाई हंसराज भाई अमरेली, वगेरे व्यक्तिओ साथे तेमनो व्यावहारिक संबंध छे एटले तेमनी पुत्रवधूओ पण भणेली अने सुशीला छे. श्री झवेरीजी पोतानी पुत्रवधूओने पोतानी दीकरीओ माफक ज मानता एटले तेमनी साथे पुत्री जेवो ज संबंध धरावता.

बधा भाईओनुं खावापीवानुं, लग्न सगपण, धोबीनुं, हजाम वगेरेनुं खर्च संयुक्तरूपे चालतुं पण बीजा प्राइवेट खर्च कपडालतां घरेणां वगेरे माटे दरेक भाईओनुं पेढी तरफथी अमुक वर्षासन बांधेलुं हतुं; एमांथी बधायने पोताना खर्च चलाववाना हता जेथी पारस्परिक क्लेशना प्रसंगो भाग्ये ज ऊभा थता. आजसुधी पण आ ज प्रमाणे कुटुंबनुं संचालन खूब शांति अने प्रेमपूर्वक चालतुं आव्युं छे ए आनंदनी वात छे.



सामाजिक–जीवन

[१] वातावरण

आजथी लगभग २–३ दशका पहेलां राष्ट्र तेमज समाज निष्प्राण हतो. सर्वत्र अज्ञान अंधकार, रूढिओना रोगो, ईर्षानी भूतावळ, धर्मबंधननी भ्रमजाळ आदि राष्ट्र तेमज समाजघातक अनेक कुप्रवृत्तिओ फेलायेली नजरे पडती हती.

मेघाच्छन्न आकाशमां जेम विजळीनो चमकारो थतां प्रकाश पथराय तेम अज्ञानाच्छन्न राष्ट्रमां कोई कोईवार राष्ट्रोत्थान करवानी भावना उदयमान थती हती. नवयुगनी उषा उगी रही हती. नवयुवकोमां नवजीवन, नवचेतन अने नवजागृतिनी भावनाओनो अरुणोदय थई रह्यो हतो. अने परिणामे राष्ट्रना उत्थान अर्थे 'कांईक' करी छूटवानी तमन्ना पेदा थई हती. आ प्रमाणे राष्ट्र–प्रगतिनो प्रबळ पवन फुंकाई रह्यो हतो. विद्यानुं वातावरण पथराई रह्युं हतुं.

आ विद्याविकासना कारणे राष्ट्र–उत्थाननी प्रभानो प्रभाव समाज उपर पण पड्यो अने ठेरठेर समाजोद्धारनी प्रवृत्तिओ पण शरु थई चूकी हती. आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज आदि समाजो पण समाजनुं नवसर्जन करी रह्या हता. त्यारे राष्ट्रना प्राण साथे अविच्छिन्न संबंध धरावता जैन–समाजमां पण नवचेतननो प्राणवायु फूंकायो. ज्यां जुओ त्यां समाजना उत्थान अर्थे कोन्फरन्स, लीग, संघ, मंडळ, परिषद् वगेरेनी स्थापना थवा लागी अने संघ–कल्याण माटे नवयोजनाओ पण घडावा लागी.

श्वे. मू० जैन समाजनी आवी एक कोन्फरन्स ते वखते गुजरात प्रांतमां भराई हती. समाजसेवी श्री दुर्लभजीभाई पण समाज—क्षेत्रमां उतरवा चाहता हता. आ कोन्फरन्समां जवानो सुयोग्य अवसर सांपड्यो अने त्यां ज समाजोत्थाननो रंग तेमना जीवन उपर चडवा लाग्यो. तेमना दिलमां थयुं के, स्था० समाजमां पण आवी ज एक कोन्फरन्स स्थापवानी जरूर छे. कोन्फरन्सनी स्थापना करी सुषुप्त स्था० जैन समाजमां सेवाभावना प्रगट करवा माटे, समाजमां विद्या, संगठन, धर्मवृत्ति आदिनो प्रचार करवा, कोन्फरन्समांथी पाछा फरी पोताना मित्रो साथे मसलत चलावी. दृढ मनोबळ, धर्मप्रेम, धगश अने तन, मन, धननो भोग आपवानी शक्ति जेनामां होय तेने असाध्य शुं होय?

[२] कोन्फरन्सनी स्थापना–

मित्रो साथे वातचीत करी, अनेकोने उत्साहित कर्या. अने उत्साही युवक लक्ष्मीचंदभाई खोखाणीने सहयोगी बनाव्या. शेठ अंबावीदास भाईने कोन्फरन्स भरवानो खर्च आपवा तैयार कर्या अने पोताना धंधानी दरकार कर्या वगर समाजमां नवचेतन फूंकवा अने कोन्फरन्सनी आवश्यकता अने उपयोगिताथी जनसमाजने परिचित करवा गुजरात, कच्छ, काठिआवाड, मारवाड, मेवाड, मालवा, यु. पी. पंजाब, वराड, खानदेश ने दक्षिण; चारे तरफ सतत परिश्रमे प्रवास करी स्था० जैनोने जगाड्या. अने श्वे० स्था० जैन कोन्फरन्सनुं पहेलुं अधिवेशन अजमेरना रा० सा० शेठ चांदमलजीना प्रमुखपणा नीचे मोरबीमां संवत् १९६१ मां भर्युं. मंत्रीनुं कार्य अने जवाबदारी केवां होय छे? ए करी बताव्युं. स्थानकवासी जैन कोन्फरन्सना ए उत्पादक गणाय.

★ ધર્મવીર શ્રીમાન શેઠ દુર્લભજીભાઈના સેવાજીવનના શુભ શ્રી ગણેશ ★



શ્રી અખિલ ભારતવર્ષીય શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ પ્રથમ અધિવેશન,

: મોરબીના પ્રમુખ તથા કાર્યકર્તાઓ :

त्यारबाद ए ज धगश अने ए ज उत्साहथी तेओश्रीए समाजोन्नतिनुं कार्य चालु राख्युं. कोन्फरन्सना दरेके दरेक अधिवेशन तथा ते अंगेनी कमेटीओमां तेओश्री अचूक हाजर रही दरेक प्रवृत्तिने दोरवणी आपता रहेता हता. रतलाम, अजमेर, जलंधर, सीकंद्राबाद, मलकापुर, मुंबई अने बीकानेर मुकामे भरायेला अधिवेशनोमां एओश्रीए पूरतो साथ आप्यो हतो अने छेवटे अजर अमरपुरी अजमेरना बृहत् साधुसंमेलन अने नवम अधिवेशननो तेमनो भगीरथ प्रयत्न तो सुवर्णमां सुगंध समान हतो. बे बे वर्षना सतत परिश्रम, केटकेटलीए रातना उजागरा, भारतभरना खूणे खूणामां प्रवास, अजर अमरपुरी अजमेरमां लोंकानगरनी ए सोहामणी सृष्टि, नैसर्गिक प्रतिकूळता सामे पण शांत गंभीर मुद्राए अडग श्रद्धाथी झझूमवानी शक्तिमां ए खरेखर अद्वितीय हता.

कोन्फरन्सना ३४ वर्षना जीवनभरमां भरती-ओट, तडका-छाया अने चडती—पडती चालती रही. परंतु छेवटसुधी कोन्फरन्सनी दरेक स्थितिमां अनन्य सेवा करी कोन्फरन्सना लाइफ मेम्बर अने ट्रस्टी रह्या. मुंगा, शांत रही अनुकूळ-प्रतिकूळ विचारना बधा साथे मळीने काम करवानी एमनी खूबी जाहेर कार्यकर्त्ताओने पथप्रदर्शक हती. सफळ कार्यकर्त्तानी कुनेह एमनामां हती.

आ प्रमाणे समाजनी एकधारी सेवा करवा छतां कदी पण तेओश्रीए मोटो होद्दो के मान मेळववानी इच्छा सरखी पण करी न हती. He was a king maker, he himself never became a king. तेओश्रीए हमेशां बीजाने उत्साहित कर्या अने जे समाजना रंगमंच उपर आवतां बीता हता, अचकाता हता तेवा स्नेहीजनोने पण

समाजसेवा माटे उभा कर्या. नवमा अधिवेशनना प्रमुख तरीके श्रीयुत हेमचंद रामजीभाईनी निमणुकमां पण तेमनो हाथ हतो.

तेओश्री समाजमां शान्तिना दूत हता. श्रावक अने साधुसमाजमां जो कोई आंतरक्लेशो उभा थता तो तेओ घणा दुःखी थता अने तेने शांत करवा बनता प्रयत्नो करता. एमना अवसानथी समाजे एक साचो नीडर अने अनुभवी आगेवान गुमाव्यो अने कोन्फरन्से पोताना जन्मथी ते छेवटसुधी सेवा करनारो साचो अने एकनिष्ठ मूक सेवक (शीरताज) गुमाव्यो. तेमना अवसानथी आपणा समाजमां कदिपण न पूरी शकाय तेवी खोट पडी छे.

स्व० श्री दुर्लभजीभाई सेवामूर्त्ति हता. संघनी सेवा करवी ए तेमनुं जीवन-ध्येय हतुं अने आ ध्येयनी पूर्त्ति माटे तेमणे पोतानी कायाने नीचोवी नांखी हती. जीवनना त्यागद्वारा तेमणे सेवानी कींमत आंकी हती अने बदलामां अजमेर अधिवेशनमां श्री संघे तेओश्रीने 'धर्मवीर'ना मानभर्या खिताबथी विभूषित कर्या हता. तेओ पोताने 'संघसेवक' कहेवडावामां पोताना जीवनने धन्य अने गौरवशील मानता हता.

[३] श्री बृहत् साधुसंमेलन-

कोन्फरन्सनी स्थापना अने आजसुधीनी दरेक प्रवृत्तिओमां आगळ पडतो भाग लईने तो तेओए श्रावकसंघ प्रत्येनी पोतानी फरज अदा करी हती. पण 'श्रमणसंघ ए जिनशासननो पायो छे' एम समजी तेमणे आ श्रमणसंघनी सेवा द्वारा जिन-शासननी सेवा करवानो अपूर्व अवसर लीधो हतो. साधु समाजनी सेवा पाछळ तेमणे केटलो बधो जीवनश्रम लीधो हतो ए वातथी

जैन समाज सारी रीते परिचित छे. स्था० जैन साधुसंमेलन ए तेमना जीवनव्रतनुं फळ हतुं अथवा जीवनपरिश्रमनुं ज परिणाम हतुं.

चैत्र शुक्ला दशमीनो ए शुभदिन हतो जे दिवसे १५०० वर्षने गाळे भिन्न भिन्न संप्रदायना २५० मुनिवरो ममैयाना डेलामां ए वटवृक्षनी नीचे संमेलनरूपे एकठा मळ्या हता. जे जुदा जुदा संप्रदायना मुनिवरो पारस्परिक मतभेदने लीधे एक पाटे बेसीने व्याख्यान वांचवामां पण राजी थता न हता, ते मुनिराजोने आटला स्नेहभावथी परस्पर आलिंगन करता जोई कोनुं हृदय नाची न उठे? आ अत्युत्तम कार्य स्था० जैन समाजना इतिहासमां अजोड हतुं.

संमेलन पहेलां पत्र—व्यवहार, रातदिवसनी मुसाफरी, साधुओ अने श्रावकोनुं संगठन करवुं, प्रांतिक संमेलनो भरवां अने विभिन्न विचारवाळाओने समजाववा मनाववामां जे परिश्रम तेमणे सेव्यो छे, अनेक धमकीओ, हाडमारीओ अने जीवलेण अकस्मातो भोगव्या छे ते आ शान्त, धीरवीर पुरुष सिवाय बीजा माटे सहन करवा अने सहीने सफळ थवुं मुश्केल छे.

संमेलन वखते स्व० श्री दुर्लभजी भाईनी उम्र लगभग ५६ वर्षनी हती एटले के ते वयोवृद्ध हता, छतां ट्रेननी सगवडताना अभावे केटलीए वखत ऊंट उपर, गाडाथी अने पगवाळा प्रवासो पण खेडवा पड्या हता. आ प्रमाणे शरीरकष्ट वेठवा उपरांत संमेलनना प्रचारमां ज्यारे क्यांय बीजाओने मनाववामां असफळता मळती हती त्यारे तेओ रोई पडता हता अने कोई कोईवार तेमनुं कोमळ हृदय आ अंतरपीडाने सहन करी शकतुं न होतुं त्यारे मूर्छित पण थई जता. आवा अनेक प्रसंगो तेमनी साथे प्रवास करनार अने समाज-

सेवामां सदैवना साथी तेमना धर्मपुत्र श्री धीरजलाल भाई तुरखीआ अने बीजी व्यक्तिओद्वारा सांभळवा मळे छे.

संमेलन पाछळ आ प्रमाणे अथक शारीरिक अने मानसिक श्रम सेव्या उपरांत रुपीया छ हजार जेटलुं खर्च तेमने थयेलुं हतुं.

आ बधी जहेमत उठाववानुं एक मात्र प्रयोजन हतुं साधु समाज–श्रमणसंघनो उद्धार, तेमनुं पारस्परिक संगठन, शिथिलाचार अने शिथिलाचारीओनो त्याग, तप अने चारित्रनी पवित्रतानी साथे साथे तेमनामां ज्ञाननो विकास करवो कारण के तेओए पोते ज पोतानी नोंधपोथीमां साधु-समाज प्रत्येना पोताना अंगत विचारो व्यक्त कर्या छे :–

'मुनिओ समाजना मुकुटमणि छे, आपणा गळानी मोतीनी माळाओ छे. ए मोतीनी माळामां असली बसराई मोती ज जळवाई रहे अने साथे साथे असली ओप पण कायम रहे ए संभाळवानी साथे कल्चर मोतीनुं मिश्रण न थई जाय अने काळ देशे कल्चर आवी भरायुं होय तो तेने बसराई बनावी देवाय.'

उपरनी ४–५ पंक्तिओमां ज तेओश्रीए पोतानी झवेरात-बुद्धिथी पोतानुं हृदय खाली कर्युं छे. संमेलननी उपयोगिता सिद्ध करता अने साधु समाजने पोताना कर्त्तव्यनुं भान करावता अनेक लेखो 'जैन प्रकाश' 'स्था० जैन' वगेरेमां अवार नवार लख्या छे. जे वांचवाथी स्पष्ट थाय छे के साधुसमाज के जे खास करीने स्थानकवासीओ माटे तो एक मात्र आधाररूप छे तेनी अवनत दशा माटे तेओश्री पोताना हृदयमां अपार वेदना अनुभव करता हता. आ वेदनाने दूर करवा माटे ज तेओश्री ए आ भगीरथ प्रयत्न आदर्यो हतो.

वेशथी तेओ साधु न होवा छतां तेमना हृदयनी साधुताने लीधे तेओश्री साधुओना साचा सलाहकार बनी शक्या हता. साधु संमेलनना

एकमात्र कर्णधार हता अने तेओश्रीना विचारोना विरोधक के समर्थक दरेक साधु मुनिराजोना आदर अने सन्मानपात्र सखा बन्या हता.

ए संमेलनना दिवसथी बराबर छ वर्षना गाळा बाद ए ज चैत्र शुक्ल दशमी (सं. १९९५) ना सवारना दश वागे तेओश्रीए पोतानो देह छोड्यो. आ रीते साधु संमेलननी जयंति साथे तेमनी मृत्युतिथि सदाने माटे जोडायेली ज रहेशे.

संमेलन पछी जीवनना अंत सुधी संमेलन माटे तेमना हृदयमां निरंतर झंखना चालु हती; परंतु संमेलन-साफल्यनी तेमनी आशा तेमना जीवनकालमां साध्य न बनी शकी.

तेओश्रीए इ. स. १९३९ नी ८–९ एप्रिलनी जनरल कमिटीना आमंत्रणना जवाबमां ए कमिटीमां हाजर रही फरी एकवार द्विगुणित उत्साहथी संमेलन अने कोन्फरन्सनुं कार्य उपाडवानी तमन्ना प्रदर्शित करी हती. परंतु कुदरतने कंई जुदुं ज करवुं हशे.

तेमना आ महाभारत प्रयत्नोनी कदर करी कोन्फरन्सना नवम अधिवेशन वखते अजमेरमां भारतीय चतुर्विध स्था. जैन श्रीसंघे तेमने 'नवरत्नजडित सुवर्णपदक' अर्पण कर्यो हतो, जे पदक तेओए पोतानी प्यारी संस्था 'जैनगुरुकुल, ब्यावर' माटे अनामत राख्यानुं ए ज वखते जाहेर कर्युं हतुं.

अत्रे स्व० श्री दुर्लभजीभाईना अनन्य सखा समाजभूषण स्व० श्री नथमलजी चोरडिया के जेमनाथी जैन समाज सारी रीते परिचित छे अने जेमनुं जीवन पण राष्ट्र अने समाजनी सेवामां ज पूर्ण थयुं छे अने जेमना सक्रिय सहयोग अने सद्भाव सद्गत श्री दुर्लभजीभाईए सदा साध्यो हतो ते स्व० शेठ अमरचंदजी

पित्तल्या, स्व० शेठ बालमुकुंदजी मूथा, स्व० शेठ सूरजमल्लभाई, श्री० शेठ वेलजीभाई, शेठ वरदभाणजी पित्तल्या, श्री अमृतलालभाई झवेरी, श्री बाबू आणंदराजजी सुराणा आदि तेमना मित्रमंडळना नामनो अहीं उल्लेख करवो अस्थाने नहि गणाय.

[४] विद्याप्रचार

स्व० श्रीदुर्लभजीभाईना साचा जीवन्त स्मारकोमां कोन्फरन्स अने बृहत् साधु संमेलन पछी त्रीजुं स्थान 'जैन ट्रेनिंग कोलेज' तथा 'श्री जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर'नुं छे.

जीवनमां विद्यानुं महत्त्व केवुं अने केटलुं छे ते तो कोई विद्यारसिक व्यक्ति ज समजी शके छे.

राष्ट्र, धर्म के समाजना उत्थाननो आधार विद्या छे. ज्यांसुधी विद्याधन वधतुं नथी त्यांसुधी राष्ट्र के समाजनुं बळ पण वधी शकतुं नथी. स्व० दुर्लभजीभाई विद्यानी अमाप शक्तिनुं माप काढी शक्या हता अने एटले ज पोताना अंगजात पुत्रोने उच्च शिक्षण आप्युं हतुं. पण तेओश्री एक स्वार्थी पिता न हता. तेमनुं हृदय उदार हतुं. तेमना हृदयमां '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' नी भावना बराबर विकास पामी हती. ते वृद्ध वैद्यराजे पोताना अनुभवोथी चोक्कस रीते जाणी लीधुं हतुं के, जे समाज माटे तेमणे पोतानुं तन, मन अने यत्किंचित् धन अर्पण कर्युं छे ते समाजनो उद्धार ज्ञान-शिक्षण विना सर्वथा अशक्य छे.

पोतानी आवी चोक्कस मान्यताने लीधे शरूआतमां तो तेमणे गरीब पण विद्याना पिपासु छात्रोने छात्रवृत्ति आपी प्रोत्साहन आपवानुं शरु कर्युं. जे कोई पण विद्यार्थी तेमनी पासे पहोंचतो

ते खाली हाथे पाछो तो न ज फरतो. बीजानां दुःखो समान गणवा अने तेमने दूर करवा बनतुं करवुं, ए तेमनो मोटामां मोटो गुण हतो. दुःखी प्रत्ये सहानुभूति अने हमदर्दी दाखववानी भावना तो पराकाष्टाए पहोंची हती. विद्यार्थी सिवाय पण अनेक गरीब गरबाओ अने सहधर्मी भाईओने तेमनो आधार मळ्यो हतो. केटलाए युवकोनुं पोताना पुत्रनी ज माफक पालन-पोषण कर्युं हतुं. अनेक बाळकोना तेओश्री आश्रयरूप हता. पण आ बधुं तेओश्री अप्रगट रूपे ज करता. एमनी आ उदारतानो आंक काढवो होय तो एमनी फाइलो भणी एक नजर ज फेरवी जवी बस थशे.

पण आम थोडा घणा छात्रोने छात्रवृत्ति आपवाथी ज कांई समाजहित साधी शकाय नहि. समाजने सबळ अने सुदृढ बनाववा माटे आखा समाजमां विद्यानो प्रचार करवो आवश्यक छे. आ वात ने लक्ष्यमां लई श्री दुर्लभजीभाईए विद्या-विकासनो प्रश्न समाज समक्ष मूकवानो विचार कर्यो अने समाजे पण ए प्रश्नने हाथ धरी समाज कल्याणनी प्रवृत्ति प्रारंभ करी देवानुं उचित मान्युं.

[९] जैन ट्रेनिंग कोलेज

जैनधर्मना मर्मज्ञ अने तेनी साथे साथे अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत वगेरे भाषाओनुं तथा अन्यधर्मोनुं सारुं ज्ञान आपी धर्मनिष्ठ, समाजसेवक अने जैनधर्मना प्रखर प्रचारक युवको तैयार करवाना हेतुथी कोन्फरन्स तरफथी सन् १९११ मां जैन ट्रेनिंग कॉलेजनी स्थापना रतलाम मुकामे करवामां आवी हती. आ संस्था प्रत्ये श्री झवेरीजीनो अपूर्व प्रेम हतो पण आगळ जतां कोन्फरन्से आ संस्था बंध करी. आ ऊणप श्री झवेरीजीने घणी ज साली होवाथी

मलकापुरमां श्री. मेघजी थोभण जे. पी. ना प्रमुखपद नीचे मळेला अधिवेशन वखते स्व० श्री. वा. मो. शाहना सहकारथी तेओश्रीए आ संस्थाने पुनर्जीवन अपाव्युं अने बीकानेर मुकामे विद्याप्रेमी श्रीमान् सेठ श्री अगरचंदजी भैरोदानजी सेठियाने आंगणे तेनो प्रारंभ थयो. श्रीयुत सेठियाजीए आ संस्थामां घणो ज उत्साह पूर्वक रस लीधो अने संस्थाना विकास अर्थे दरेक प्रयत्नो कर्या.

पण बीकानेर जेवा उष्ण प्रदेशमां संस्थाने राखवा करतां जयपुर जेवा विद्याना केन्द्रमां संस्थाने लाववामां आवी त्यारे श्री धीरज-लालभाई तुरखीयाने बोलावीने तेओए वेपारमांथी पूर्ण निवृत्त न थया होवा छतां सघळी जवाबदारी पोताना माथे वहोरी, संस्थानुं संचालन पोताना हाथमां लीधुं.

तेमणे एक माळीनी माफक कोलेजना छात्रोना जीवननी घणी ज सतर्कतापूर्वक संभाळ राखी. तेओश्री पोताना अंगजात पुत्रोथी पण वधारे प्रेम कोलेज–छात्रो तरफ दर्शावता अने कोलेजना छात्रो पण तेमने धर्मपिताथीए विशेष आदरणीय मानता हता. पितापुत्रनो आवो अनेरो प्रेम संबंध स्थापित थवाना कारणे ज कोलेजना छात्रो तेमने 'बापूजी'ना नामथी संबोधता हता.

छात्रोना विकास माटे तेओश्री खूब प्रयत्नशील रहेता. पोताना शक्ति सामर्थ्यनो भोग आपीने पण छात्रोनी साथे रहेवामां, तद्रूप बनवामां अने एमनी हितचिंतामां ज मशगूल रहेवामां ज तेओश्री आनंदनो अनुभव करता हता.

कच्छ जेवा सुदूरवर्त्ती प्रदेशमां पण ज्ञानतपस्वी शतावधानी पं० मुनिश्री रत्नचंद्रजी महाराजनी समीपमां विद्यार्थीओने शास्त्रीय ज्ञान

कराववा माटे पोतानी दुर्बल काया होवा छतां साथे लई गया अने साथे रह्या. अने शिक्षण संस्था प्रत्ये संचालकोनी केटली बधी जवाबदारी छे तेनो बोधपाठ शीखडाव्यो. कच्छमांथी कोलेजीयनोने पोताना ब्यावर गुरुकुळ साथे राख्या, ज्यां श्री. धीरजलालभाई हता ज अने पोते पण प्रतिमास आवीने साथे रहेता. सारो शास्त्राभ्यास अने लेखन-वक्तृत्वनो अभ्यास करावीने ए सुयोग्य स्नातकोने समाजना चरणे अर्पण करी पोते कृतकृत्य थया. आजे समाजमां पोतानी सेवा आपता जे थोडाघणा युवको नजरे पडे छे ए ते माळीना परिश्रमना साचा परिचायक छे.

आ प्रमाणे 'जैन ट्रेनिंग कोलेज' कोन्फरन्सना निश्चय मूजब थोडा वर्षो पछी बंध करवामां आवी अने श्री झवेरीजी पण साधु संमेलन अने कोन्फरन्सनी प्रवृत्तिमां रोकायेला रह्या पण ए प्रवृत्तिओथी निवृत्त थतां तेमणे पोताना निवृत्तिमय जीवनने 'ज्ञानयज्ञ'नी प्रवृत्तिओमां मूकी दीधुं.

[६] जैन गुरुकुल, ब्यावर

श्री दुर्लभजीभाईनी उत्तरावस्थानी घणी खरी सेवा 'शिक्षण' पाछळ ज गई छे. तेमणे जैन गुरुकुळ ब्यावरने पोतानी शिक्षणसेवानुं केन्द्र बनाव्युं हतुं. साधु संमेलनने अंते समाजे तेमने अर्पेलो 'नवरत्न यशचंद्रक' एमणे कोन्फरन्सना नवम अधिवेशन वखते जैन गुरुकुळ, ब्यावरने अर्प्यो हतो एटले के पोतानुं छेवटनुं यशःजीवन तेमणे ब्यावर गुरुकुळने समर्प्युं हतुं. जैन गुरुकुळने माटीमांथी मानव प्रकटावनार जैन विद्यापीठ बनावी, जैन शिक्षणनुं केन्द्र बनाववानी तेमनी उत्कट इच्छा हती, के जेथी अनेक

बाळकोने शिक्षण अने संस्कारनी शिक्षा–दीक्षा मळे अने ते मोटा थई समाजना साचा सेवको बने.

पोतानी आ इच्छाने पार पाडवाने माटे तेमणे सक्रिय प्रयत्न कर्यो हतो. गुरुकुळने जैन विद्यापीठ जेवुं विशाळ रूप आपवा माटे 'जैन गुरुकुळ शिक्षण संघ'नी योजना घडी, आ संस्थाने सरकारद्वारा रजिस्टर्ड करावी दीधी हती, अने स्वास्थ्यनी परवा कर्या विना गुरुकुळनी प्रगति अने स्थायित्व माटे अनेक प्रवासो खेड्या हता. श्रीमंतो पासे 'भिक्षां देहि' कही ज्ञानभिक्षा मांगी हती. हमणां हमणां नागपुरवासी दा० वी० सेठ सरदारमलजी पुंगलिया तथा पोताना मित्रो पासेथी रू० ३५ हजार मेळवी भवनो बनाव्यां अने भवनोना उद्घाटन वखते गुरुकुळ माटे एक लाखनुं स्थायी फंड करी, गुरुकुळने अमर बनाववानी भावना अने प्रयत्नमां हता पण उद्घाटनना अवसर पहेलां लांबा वखत सुधी बिमारपथारीए पड्या रह्या अने आ अपूर्व कार्य पोताना समृद्ध मित्रो माटे पडतुं मूकी स्वर्गे सिधाव्या. तैयार थयेला गुरुकुळनां मकान जोवानी भावना तेमने अनेक वार थई पण पथारीवश होवाने लीधे पोतानी इच्छा पूरी न करी शक्या.

छेवटनी घडी सुधी तेमणे गुरुकुळना कार्यमां अत्यंत रसपूर्वक भाग लीधो. डोक्टरोनी ना होवा छतां तेओश्री आ बहुमूल्य प्रवृत्तिथी विमुख थई शक्या नहि. अत्यधिक बीमार हालतमां मरण-पथारीए पड्या पड्या पण गुरुकुळनो ज विचार कर्या करता हता. तेओ बिमारीने बिछाने पड्या पड्या अनेकवार कहेता हता केः—

'हवे मने घरनी चिंता नथी. जो ६ महिनानुं लांबुं जीवन मळे तो तेने हुं गुरुकुळना स्थायित्व माटे आपी दईश अने तेने आर्थिक चिंताथी मुक्त करी शांति लईश.'

तेओश्री गुरुकुळना मात्र कुलपति ज न हता, तेना अग्रगण्य संचालक हता. गुरुकुळना आद्य संस्थापक श्रीयुत सेठ अमोलखचंदजी लोढाना स्वर्गवास थयाना थोडा वखत बाद ज श्री० झवेरीजीना असामयिक अवसानथी गुरुकुळने भारे धक्को लाग्यो, एमां जराय संदेह नथी. तेमनी छत्रछायामां बधी दिशाओमां गुरुकुळे सारी प्रगति करी हती अने गुरुकुळना प्रमुख तथा वार्षिक रू० २००० ना सहायक श्रीयुत शेठ फतेहलालजी मिश्रीलालजीने पण तेमना कामथी अत्यधिक संतोष थयो हतो. ट्रस्टीओ अने प्रबंधक समिति तेमना विश्वासे निश्चित हता.

तेओश्री पोतानी आ प्रिय संस्थाने वारसारूपे पोताना वडिल पुत्र श्री वनेचंदभाई झवेरीने सोंपी गया छे के जेओ आ संस्थाना उपप्रमुख (Vice-chairman) नुं मानवंतु पद शोभावी रह्या छे. एटलुं ज नहि पण साधुसंमेलनना महाकार्यनी पोतानी बे भुजाओ-(सहमंत्रीओ) श्री० सरदारमलजी छाजेडने कुलपति तरीके अने श्री० धीरजलालभाई तुरखीयाने अधिष्ठाता तरीके सोंपता गया छे. शासनदेव एमना ए ज्ञानबगीचाने खूब खीलवो !

[७] सिद्धान्तशाळा

“स्था० जैन त्यागीओमां, जगत्ना बीजा त्यागीओनी तुलनानी दृष्टिए त्यागनी न्यूनता नथी पण न्यूनता छे देश–कालोचित सम्यक् ज्ञाननी. ए सम्यक् ज्ञानना अभावे आजे ए एकांत कल्याणकर त्याग पण जगत्नी दृष्टिमां ओछो आकर्षक बने छे. ज्ञानविहीन शुष्क त्याग जीवनने जड अने शुष्क बनावे छे. जीवननो उत्कर्ष ज्ञानमां छे.” श्री झवेरीजी आ विचारोना समर्थक

हता. जो के छेल्ला दसेक वर्षोथी आपणा मुनिराजोनुं ध्यान पण ज्ञान-प्राप्ति तरफ दोरायुं हतुं अने परिणामे केटलाए साधु मुनिराजो अभ्यास करवा लाग्या हता. पण आ शैलीथी अभ्यास करवामां समाजना पैसानो भारे दुरुपयोग थतो हतो कारण के दरेक मुनिराजो पोत-पोताना अभ्यास निमित्ते जुदा जुदा ब्राह्मण पंडितो राखता हता. आवा पंडितो पोतानी स्वार्थपूर्त्ति करवा खातर अनेक वर्षो सुधी महा-राजोने भणाववानी नोकरी कर्या बाद ज्यारे छूटा थता त्यारे जैन मुनिराजोनी निंदा करता अने तिरस्कारता. आ प्रमाणे बन्ने रीते जे नुकशान थई रह्युं हतुं तेने रोकवा माटे स्व० श्री झवेरीजीए आत्मार्थी मुनिश्री मोहनऋषिजी म० सा० नी शुभ सलाह मूजब सिद्धान्त-शाळानी योजना घडी.

आ योजना मूजब जो बधा मुनिराजो जुदा जुदा अध्यापको राखवानुं बंध करे अने जे जे स्थळोए आवी सिद्धान्तशाळाओ खोलवामां आवी होय तेमांथी पोतपोतानी अनुकूळतावाळा स्थळोनी शाळाओमां शिक्षण लेवा जाय तो पैसानो सदुपयोगनी थवानी साथे साथे नीचेना लाभो पण थई शके:—

(१) आपणा ज धने पोषाता पेटार्थी लोको निंदा करता अटके अने स्वबंधुओने आ सेवानो लाभ आपी शकाय.

(२) साधुओमां पारस्परिक वहेवार अने स्नेहसंबंध वधे.

(३) अरसपरसना विचारविनिमयथी ज्ञाननी वृद्धि थाय.

(४) सारा सारा निष्णात विद्वानो मोटा पगारे पण आ संस्था-ओमां रोकी शकाय अने

(५) जैनागमोना उद्धारनुं कार्य जे एक बे व्यक्तिओथी थवुं कष्टसाध्य छे ते अहिंया सरलताथी थई शके.

आ बधी वस्तुने लक्ष्यमां लईने ज श्री झवेरीजीए श्री जैन गुरुकुळ शिक्षणसंघ, ब्यावर तरफथी ब्यावरमां ज सिद्धान्तशाळा खोली. अने गुरुकुळना आद्य प्रेरक आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० सा० ना उपदेशथी आ शुभ कार्यमां आर्थिक मदद पण मळी. श्री झवेरीजीना अवसान पछी पण ए संस्था पोतानुं अस्तित्व धरावी रही छे अने साधु-साध्वीओने शिक्षण आपवानी प्रवृत्ति सेवी रही छे. हर्षनी वात छे के, श्री झवेरीजीना अवसान पछी समाजमां आवी बीजी बे-चार संस्थाओनी वृद्धि थई छे.

[८] काशी विद्यापीठमां स्था० जैन चेयर

आगळ बताववामां आवेली अनेकविध प्रवृत्तिओ सिवाय पण अनेक कार्यो छे जेमां आ कर्मवीर पुरुषे पोताथी बनतुं करवामां पाछी पानी करी न हती. टूंकमां स्था० समाजनी समाजोद्धारक दरेक प्रवृत्तिओमां सीधी वा आडकतरी रीते एमनो हाथ हतो ज एम कहेवुं ए अतिशयोक्ति भरेलुं नथी.

बनारस हिन्दु विश्वविद्यालयमां लगभग बधा आर्यधर्मोनी 'चेयर्स' छे. एटले के तेमां बधा धर्मोनो अभ्यास करवानी सगवडता छे. तेमां जुदा जुदा धर्मोना निष्णात प्रोफेसरो छे. 'विश्वविद्यालय' पोताना खर्चेथी आ प्रमाणे व्यवस्था नथी करतुं. पण जे धर्मानुयायीओ विश्वविद्यालयमां पोताना धर्मना अभ्यासीओ माटे व्यवस्था करवा चाहे छे, तेमणे विश्वविद्यालयमां अमुक रकम आपवी पडे छे अने रकमना व्याजमांथी आ प्रमाणे व्यवस्था करवामां आवे छे. मूर्तिपूजक भाईओनी पण 'चेयर' आ विश्वविद्यालयमां छे अने श्रीयुत पं० सुखलालजी ते 'चेयर'ना प्रोफेसरनुं पद भोगवी रह्या छे.

आ प्रमाणे स्था० जैन चेयर काशी विद्यापीठमां कायम करवानी इच्छा छेल्ला दिवसोमां श्री झवेरीजीना मनमां उद्भवी हती. अने ते बाबत आ विद्यापीठ साथे पत्रव्यवहार करी रू० ५००० जमा कराववानी शर्ते परवानगी पण लीधी हती अने प्रोफेसरना स्थाने श्रीयुत पं० इन्द्रचन्द्रजी वेदान्ताचार्य, बी. ए. नी नियुक्तिनो निर्णय पण करी लीधो हतो.

आपणी कोन्फरन्सनी जनरल कमिटीए श्री हंसराज जिनागम फंड-मांथी रू० ५००० आ खातामां आपवा स्वीकृति पण आपी हती. पण श्री झवेरीजीना अवसान पछी आ कार्यमां कोईए रस लीधो नहि अने कोन्फरन्से ते बाबत शुं पगला लीधां ते पण हजु सुधी जाणवामां आव्युं नहि.

[९] हंसराज जिनागम फंड

अमरेलीना वतनी अने श्री झवेरीजीना निकट संबंधी तथा शास्त्रना मर्मज्ञ मरहूम शेठ हंसराजभाई तरफथी कोन्फरन्सना नवम अधिवेशन वखते शास्त्रोद्धारक फंड माटे श्री झवेरीजीनी प्रबळ प्रेरणाथी रू० १५००० नी उदार सखावत जाहेर करवामां आवी हती.

ए फंडना तेओ मानद मंत्री अने ट्रस्टी हता. अने आ फंडनो सुंदर सदुपयोग थाय ए हेतुथी तेओश्रीए तेना कार्यनी सुंदर रूपरेखा तैयार करी हती.

धार्मिक बाळ साहित्य तैयार कराववा तेओश्रीए पं० गिरधरलालजीने महागुजरातना बाळकोना हृदयसम्राट् स्व० श्री गिजुभाई बधेका पासे मोकल्या हता अने थोडुं घणुं कार्य पण प्रारंभ करवामां आव्युं हतुं.

ते सिवाय संस्कृत-प्राकृत जैन ग्रंथोनो सर्वसामान्य ने परिचय मळे ए हेतुथी देशी भाषाओमां भाषान्तर करावबानो पण निर्णय कर्यो हतो अने ते उपरांत जैन धर्मने लगता विषयो उपर आधुनिक शैलीथी सुन्दर पुस्तक तैयार करनारने सो सो रूपिया इनाम रूपे आपवानुं पण जाहेर कर्युं हतुं. पण ज्ञानमां पछात स्थानकवासी समाजे ते जाहेर खबरनो जराय लाभ लीधो नहि.

[१०] विद्या-रसिकता

श्री झवेरीजी जैन गुरुकुल ब्यावरना कुलपति हता पण तेथी तेमनी शिक्षा विषयक सेवाओ 'ब्यावर गुरुकुल' सुधी ज सीमित हती, एम मानी लेवानुं कोई कारण जणातुं नथी. ब्यावर गुरुकुल सिवायनी अनेक स्थानकवासी तथा इतर समाजनी संस्थाओमां यथाशक्ति सहयोग अने आर्थिक सहायता आपी छे, एवुं तेमना कार्योथी अने मृत्यु वखतना वसीयतनामा (Will) उपरथी सिद्ध थाय छे.

तेओ बहु ज विद्यारसिक हता. ए ज कारण छे के काठियावाडनी जैनशाळाओना धार्मिक शिक्षणमां क्रान्ति लाववा अने काठियावाडना आंगणे पण गुरुकुलनी स्थापना करवा निमित्ते राजकोट अने बोटाद मुकामे जे शिक्षण परिषदो भरवामां आवी हती तेमां पोते हाजर रही आगळ पडतो भाग लीधो हतो. अने सौराष्ट्रना आंगणे श्रीमद् जैनाचार्य पूज्यश्री श्रीलालजी म० सा० अने तेमना अनुवर्त्ती सुशिष्य जैनाचार्य श्रीमद् जवाहिरलालजी म० सा० नी पधरामणी करावी ज्ञाननी गंगा वहेवराववामां अने तेमना शुभागमनना स्मारक

रूपे काठियावाडना केन्द्र राजकोट मुकामे श्री काठियावाड जैन गुरुकुल पाठशाळानी स्थापना करवामां राजकोटना सुश्रावक श्रीयुत चुनीलाल नागजी वोरा, रायसाहेब श्रीयुत ठाकरसी मकनजीभाई घीया वगेरेनी साथे स्व० श्री झवेरीजीनो मोटो फाळो हतो. अने ए संस्थाना विकास अर्थे सुयोग्य कार्यकर्त्ताओने ए संस्थामां खेंची लाववा माटे स्व० झवेरीजीए संस्थाना मंत्रीओने सारी मदद करी हती.

ए सिवाय पंजाबमां पंचकुला मुकामे चालता जैनेन्द्र गुरुकुलमां रायबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजीए बनावेल सामायिक भवननुं उद्‌घाटन करवा पधार्या हता. पाली (मारवाड)नी शांति जैन पाठशाळा, जयपुरनी सुबोध जैन मिडल स्कूल अने त्यांना गुजराती समाज तथा मोरबीना जैन विद्यार्थी भुवन वगेरे अनेक जैन संस्थाओ प्रत्ये तेमने प्रेम हतो अने तेमनी यथाशक्य सेवा बजाववामां ए विद्यारसिके पोतानी फरज मानी हती.

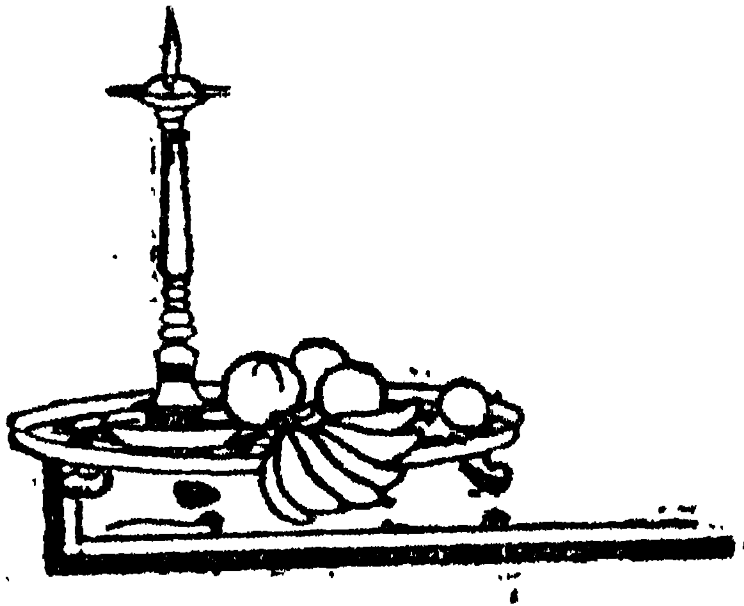
दरेक जैन संस्थाओ माटे तेमना हृदयमां निखालस प्रेम हतो. तेमनामां सांप्रदायिक पक्षपात न हतो. एटले ज तो जैन ट्रेनिंग कोलेजनो वीर–तत्त्व–प्रकाशक मंडळनी साथे तादात्म्य संबंध तथा ब्यावर जैन गुरुकुलनो आत्मानंद जैन गुरुकुळ गुजरांवाला, पंजाब तथा ओशिया जैन विद्यालयनो स्नेह–संबंध स्थापित करवामां तेओ ज कारणभूत हता. कलकत्ता एसोसिएशन परीक्षाओनुं केन्द्र ब्यावर होईने परीक्षा आपवा आवता बीजी संस्थाओना विद्यार्थिओने अभेदभावे ब्यावर गुरुकुलना अतिथि बनावी दरेक जातनी सगवडता आपवी अने ब्यावर गुरुकुलना छात्रोने पण आवश्यकता पडे त्यारे



ધર્મવીર શ્રીમાન્ શેઠ દુર્લભજીભાઈનો જ્ઞાનપ્રેમ: શ્રી જૈન શિક્ષણ સમેલન—રાજ

बीजी संस्थाओमां मोकलवानी प्रणाली तेमना ज वरद हस्ते प्रारंभवामां आवी हती. श्री झवेरीजीमां एकत्वनी भावना केटली बधी ओतप्रोत थई गई हती, एनो ख्याल श्री झवेरजीए बनारसमां यशोविजय जैन पाठशाळामां तथा जयपुरनी मूर्त्तिपूजक सभामां जई महावीर जयंति उपर सुन्दर छटादार भाषणकर्त्ताने आपेला पारितोषिक उपरथी जणाई आवे छे.

आवी उदारनीतिने लीधे ज समाजना अनेक युवानोना जीवनना सुन्दर घडतरमां तेमना उदार जीवननो सारामां सारो फाळो रहेलो छे.



धार्मिक-जीवन

[१] धर्म-संस्कार

स्व० श्री दुर्लभजीभाईना यशस्वी जीवननुं चणतर धर्म-जीवनना पाया उपर थयुं हतुं. धर्मभावना तो नानपणथी ज तेमनी रगेरगमां रमी गई हती. प्रातःकाळे वहेलां ऊठवुं, नित्यकर्म पताव्या बाद सामायिकमां बेसी परमात्म-स्तुति करवी, नमस्कारमंत्रनो जाप करवो, वडिलो तथा गुरुओने वंदन करवां, नियमित खावुं, नियमित अभ्यास करवो, नियमित सूवुं अर्थात् प्रत्येक कार्य नियमित करवुं अने ए नियमितताने साथे साथे प्रभु महावीरना एक साचा उपासक श्रावक तरीके **'जयं चरे जयं चिट्ठे'** ना सिद्धांतने पण आचरण मां मूकवो एटले के दरेक प्रवृत्तिओ मां विवेक जाळववो, निष्कारण कोईने मारवुं नहि, खोटुं बोलवुं नहि, व्यापारादि मां प्रामाणिकता राखवी, दुराचार तथा दुर्व्यसन नुं सेवन करवुं नहि, तुच्छकार थी कोईने न बोलाववुं, गाळो भांडवी नहि, कलेश-कंकास करवो नहि आदि धर्मसंस्कारो तो जाणे तेमना माता पिता तरफथी वारसा मां मळ्यां होय तेम ते बधाने आचरणमां मूकवा सतर्क अने सावधान रहेता. आ प्रमाणे एक धर्मनिष्ठ पुरुषने छाजे तेम तेओ अढार पापस्थानकोने दूर करवा प्रयत्न करता हता.

सत्संग करवो, साधुसंतोनी सेवा-परिचर्या करवी, सदुपदेश सांभळवो ए तेमनो नित्यक्रम हतो. मुनिवरो प्रत्ये एमने खूब ज भक्तिभाव हतो. चातुर्मास मां एक बे मास शांतिथी कोई महामुनि

पासे रही आत्मध्यान करता. आवी अनन्य मुनिभक्ति अने जैन समाजनो उत्कर्ष करवानी उत्कट भावनाने लीधे ज भारतवर्षमां सर्व संप्रदायना साधुओनुं संमेलन करवानो एमने विचार सूझ्यो.

लीधेल व्रत–प्रतिज्ञाओनी पाछळ वळगी रहेवुं, धर्मना प्रचार अने उद्धार अर्थे कष्टो वेठवां, मूक पशु–पक्षी वगेरे नी मूंगी सेवा करवी वगेरे धर्मगुणोने तेमणे पोताना जीवनमां खास अपनाव्या हतां. टूंकमां तेओश्रीए पोतानी जीवन–वेलडीने धर्मजळथी खूब सिंची हती.

आम तेओश्री फक्त विचारोथी ज नहि परंतु आचारोथी पण धर्मनिष्ठ हता. **ज्ञान** अने **क्रिया** बन्ने नुं श्री झवेरीजीना जीवनमां सम्मिश्रण थयुं हतुं अने आ सुंदर संमिश्रणने अंगे ज 'पायो पाको सुद्दढ होय तो मकान पण मजबूत अने पाकुं बने छे' ए न्याये श्री झवेरीजी नुं जीवन रूपी मकान पण खूब ज सुद्दढ, उच्च अने आदर्श बन्युं हतुं. एमना सामे अनेक तोफानो, आफतो ना पहाडो आवी खडा थयां छतां तेओश्री तो सदा अडग अचल बनी ते झंझावातोनी सामे छेवट सुधी झझूम्या हता.

[२] धर्मनीति

धर्मप्राण लोंकाशाहजी, ए 'धर्मवीर झवेरीजी'ना धार्मिक-जीवनना आदर्शरूप हता. बन्नेना धार्मिक जीवन एक ज सांचे ढळ्या हता. धर्मप्राण लोंकाशाहजीने आगमोनी नकल करतां धर्मना मूळ तत्त्वोनो ख्याल आव्यो अने तत्कालीन साधुओनुं आचरण निर्दिष्ट आदेशोथी प्रतिकूळ जोई तेओ चमकी उठ्या. एवी ज रीते श्री आचारांगजी आदि सूत्रोनुं भाषांतर करतां श्री झवेरीजीने प्रभु महावीरना आचारोने जाणवानी तक मळी त्यारे तेमना हृदयमां

पण वर्तमानकालीन साधुओनी शिथिलता अने दूषित क्रियाकांडो प्रत्ये तिरस्कार छूट्यो अने पोताना आदर्शरूप धर्मप्राण लोंकाशाहजीनी माफक श्री झवेरीजीए पण धार्मिकक्षेत्रमां सुधारो करवानो दृढ निश्चय कर्यो.

हजु तो 'धर्मप्राण'नी राखना ढगलानां चिह्नो पूर्णपणे अदृश्य थया ज न हता तथा श्रीलवजी ऋषिजी, श्रीधर्मसिंहजी अने श्रीधर्मदासजी जेवी विभूतिओना बलिदानना अवशेषो नष्ट थवा पाम्या न हता एटला ज अल्प समयमां जे सिद्धांतो खातर आटआटला बलिदानो अपाया हतां ते सिद्धांतोनुं भान भूलीने तेमना वारसदारो महापुरुषोना ए पवित्र सिद्धांतोनो भडको करी पोतानी अहंतानी भावनामां घी होमवा लाग्या. प्रगतिना नामे पडतीना पंथे प्रयाण थयुं, उन्नतिना नामे अवनति, उदयने स्थाने अस्त, प्रभावनाने स्थाने हीनता अने शासनसेवाना नामे बधा शास्त्रोना मूळ सिद्धान्तो पर कुठाराघात थवा लाग्यो. आगमोद्धारकनो राफडो फाट्यो, आगमोने आगमांथी बचाववा माटे दोडादोडी अने पडापडी थवा लागी अने सारामां सारा आगमोद्धारक कहेवरावनारा, पोताने 'अमूर्तिपूजक'थी संबोधता होवा छतां आगमोना पाने पोतानी मूर्त्तिओ पधराववा लाग्या. मील-रेशम अने चरबीना वस्त्रोने पापवाळां समजीने लाखोनुं कपडुं समाजे बाळी नाख्युं त्यारे आ अहिंसाना अवतारो-'छकायना प्रतिपालको' पोताना शरीरने चळकता वस्त्रोथी शोभाववा लाग्या. भाडुती खुशामतिया पंडितो पासे पुस्तको लखावी, ज्यां त्यांथी चोरी करीने पोताना नामथी छपावतां, आ अदत्तादान पापस्थानकना त्यागीओ जराय लज्जित न थता. पोताना नामनी आगळ शांतिनिकेतन, पंडितरत्न वगेरे हास्यास्पद उपमाओ लागेली जोई फुटबोलनी पेठे

फुलाता हता. सादगी अने संयमनी मूर्तिसमा मुनिधर्मनो ध्वज धारण करनार, पोताना वस्त्रोमां पण लालकाळी लीटीओ न राखनार महापापमय सेल्युलाइटना चळकता खडिया, पाटी, होल्डरो, रकाबी वाटका, चमचा वगेरे वस्तुओ राखवा लाग्या.

ज्यारे आवी अंधाधुंधी अने मिथ्यात्व अंधकारमां मिथ्यात्वी भूतो नाचता हता ते वखते श्री भंडारीजी, श्री वा० मो० शाह अने श्री झवेरीजी जेवी व्यक्तिओना जीवननुं लोंकाशाहना लाडकवाया सपूतो तरीके घडतर थवा पाम्युं.

ए त्रणे व्यक्तिओए लोंकाशाहना मिशनने वेग आपवा यत्नो सेव्या. श्री भंडारीजीए मूंगे मोढे सारी सेवा करी, श्री वा० मो० शाहना तेजने समाज पचावी न शकी त्यारे श्री झवेरीजीमां पुष्प जेवी कोमळता अने झवेरात जेवी निष्कलंक प्रभा हती, तथा समाजनी नाडीना कुशळ वैद्य माफक अभ्यास करी लीधो हतो ने स्याद्वादना सिद्धांतने पचावी शक्या हता. एटले ज्यारे मुनिराजोनुं आचरण शास्त्रथी प्रतिकूळ जोयुं त्यारे तेमनुं हृदय द्रवी उठयुं पण पहेलां उतावळ न करतां गुप्तरूपे मुनिराजोने सुधारवा माटे विनंतिओ करता रह्या. तेमां पूर्णपणे सफळता न मळवाथी ब्रह्मचारी अथवा देशवर्त्ती श्रावको–उपदेशको तथा लेखको समाजमां उत्पन्न करवानी आवश्यकता प्रतीत थई जेथी धार्मिक कोलेजो, बोर्डिंगो तथा गुरुकुलो माटे स्वप्नो सेव्या. तेमनी आशा हती के, साधुसमाज प्रभुनी आज्ञा प्रमाणे नहि चाले तो आवी संस्थाओ—ब्रह्मचारीमंडल वीरसंघ उत्पन्न करी वीरशासननी रक्षा करी शकशे. तेओश्री आ मतना होवा छतां साधुओ प्रत्ये उपेक्षाथी वर्त्ती शक्या नहि. ते संघना उद्धार अर्थे साधु संमेलननी योजना हाथ धरी पण आखरे तेमने तेमां यथेष्ट सफळता तो न ज मळी.

[३] साधुसमागम

स्व० श्री झवेरीजी पोतानी धर्मनिष्ठताने अंगे ज स्व० पूज्य श्रीलालजी, पू० श्री अमोलख ऋषिजी म० तथा वर्तमान पूज्य जैनसमाजना जवाहिरसमा श्री जवाहिरलालजीना कृपापत्र बनी शक्या हता अने एटला ज कृपापात्र शतावधानी मुनिश्री रत्न-चंद्रजी, आचार्यश्री काशीरामजी तथा उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० सा० आत्मार्थी मुनिश्री मोहन ऋषिजी म० सा० वगेरे मुनिराजोना प्रीतिपात्र बन्या हता.

एक प्रदेशमां क्रियानी प्रधानता छे अने बीजा प्रदेशमां ज्ञाननी प्रधानता छे. आ बन्ने पक्षो प्रत्ये सन्मान अने भक्तिभावे तेओ जोता हता. ज्ञानप्रधान प्रदेशमां क्रियानुं महत्त्व वधे अने क्रियाप्रधान प्रांतमां ज्ञाननुं महत्त्व वधे अने आम एक बीजाना गुणोने ग्रहण करी **ज्ञान** अने **क्रियानो** संयोग मेळवी आपणो मुकुटमणि समान साधु–समाज मुकुटनो मणि, तरण–तारण सफरी जहाज समान बने ए तेमनी उच्चतम अभिलाषा हती.

आ ध्येयने लक्ष्यमां लइने ज तेओश्रीए स्व. पूज्य श्री श्रीलालजी म० नी काठियावाडमां पधरामणी करावी हती. अने ज्यारे काठिया-वाड तथा गूजरातमां शुष्क आध्यात्मवादनो वायु वहेवा लाग्यो अने ते वहेणमां भाविक जनता वहेवा लागी त्यारे आ दृश्य श्री झवेरीजीथी न जोई शकायुं एटले शुष्क आध्यात्मवादनी जाळमांथी मुक्त करी–सत्य आध्यात्मवादनुं अमृतपान कराववा माटे जैन समाजना साचा जवाहिरनी श्री झवेरीए पसंदगी करीने पूज्यश्री नी अस्वस्थता तथा पक्व उंमर होवा छतां पूज्यश्री ना बलिदानना भोगे पण श्री लोंकाशाहनी

जन्मभूमिमां पूज्यश्रीनी पधरामणी करावी. अने राष्ट्र, समाज, धर्म तथा आध्यात्मवादना सत्य स्वरूपथी अनभिज्ञ एवा हजारो मानव-जीवोने ते सत्य स्वरूपमां स्थिर कर्या. पूज्यश्रीनो ते देशमां एटलो प्रभाव पड्यो के सौराष्ट्रना साप्ताहिक मुखपत्र 'फुलछाब'ना विद्वान् तंत्री श्री मेघाणीए पोतानी कोलममां पूज्यश्रीना यशोगान गाया अने भारतमां ढंढेरो पीट्यो के 'भारतमां एक नहि पण बे जवाहिर छे. एक जवाहिर राष्ट्रनेता छे अने बीजो धर्मनेता छे.'

पूज्यश्रीना स्वास्थ्य पर त्यांनी आबोहवाए असर करी हती. पण श्री झवेरीजीना आग्रहने मान आपी त्रण वर्ष सुधी तेमने संतोषी मरुभूमि माटे विदाय थया. सूक लकडी, केवल हाडपिंजरना देह-वाळा श्री झवेरीजीमां साधुसमाज तथा लाखोनी संख्यावाळा श्रावक-समाजना उत्थाननी अने तेथीए वधु धर्मप्रभावनानी घेलछा हती अने ए बधो भार पोताना दुर्बल शरीर उपर उपाडीने तेओ फरता हता.

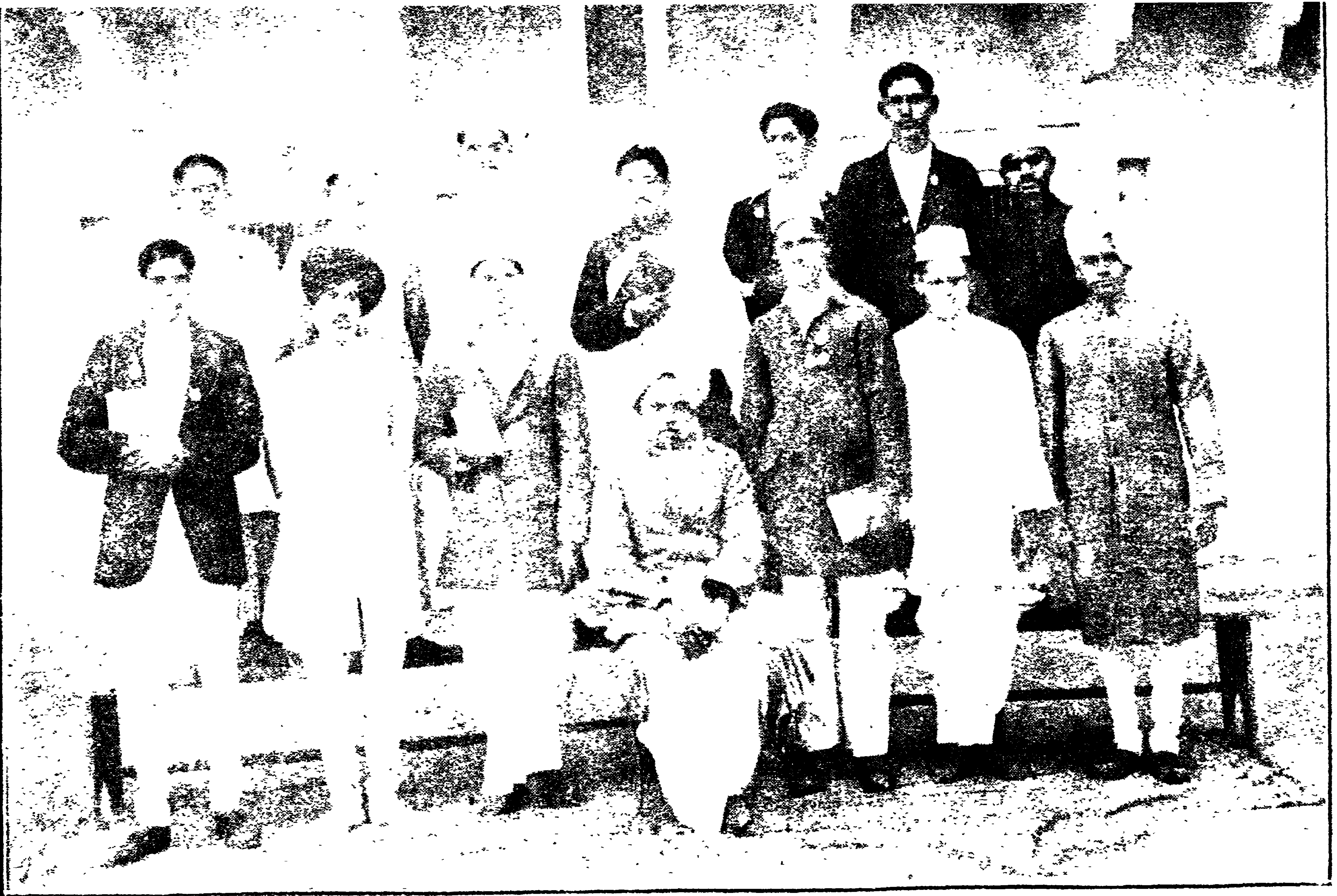
[४] जीवदया अने शियळ व्रत

'अहिंसा परमो धर्मः' अहिंसा ए तो जैनधर्मनो आत्मा. जैनधर्म एटले अहिंसाधर्म कहीए तो पण चाले. अणु-व्रतो तेम ज महाव्रतोमां पण अहिंसानुं स्थान तो मोखरे ज. एटले 'धर्मवीर'नुं अहिंसा प्रत्ये खास लक्ष्य होय ए तो स्वाभाविक ज छे. पोते तो अहिंसावादी हता ज. एटले प्राणीमात्रने अभयदान आपवुं, एमनी रक्षा करवी एने तो एमणे पोतानी फरज मानी हती. एटले पशु-पालन–गोवर्धनमां तेमनो पूरेपूरो सहकार हतो. घाटकोपरना सार्वजनिक जीवदया खातामां पण विशेष रस लेता हता. ए उपरांत आरंभ–समारंभनो विवेक करी हाथथी बनेलो माल खरीदवो, हाथनो दळेलो लोट उपयोगमां लेवो, हाथे कांतेला अने बनेला कपडांओनो उपयोग

करवो वगेरे बाबतोना तेओ समर्थक हता. तेमना आ विचारोमां धार्मिक दृष्टिनी साथे साथे राष्ट्रीयदृष्टिने पण स्थान हतुं. आ प्रमाणे मन-वचन अने काया ए त्रणे योगपूर्वक यथाशक्तिमति अहिंसानुं पालन करता हता एटलुं ज नहि पण बीजाने य हिंसाना घोर पापमांथी बचाववा माटे अहर्निश प्रयत्नशील रहेता हता. आवा जीवदयाना अनेक कार्यो साथे 'महीयर स्टेट'मां दरवर्षे १५०० बकरानुं बलिदान रोकवामां एमनो सफळ प्रयत्न नोंधवा जेवो छे.

आवी अहिंसक विभूतिओ सत्यवादी तो होय ज. सत्य-व्रत आधार छे, अहिंसा आधेय छे. ज्यां सत्य नथी त्यां अहिंसा नथी. सत्य अने अहिंसा ज्यां छे त्यां त्यां ब्रह्मचर्य-संयमनी पण आवश्यकता छे ज. मानसिक अने वाचिक विकारो उपर तो तेमने काबु राखवानी युवावस्थाथी ज-एटले के समजणा थतां ज काळजी राखी हती. अने 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी' ना न्याये कायिक ब्रह्मचर्य पण तेओ पाळता हता. पण आ कांई पूर्ण ब्रह्मचर्य तो न ज कहेवाय? एटले धीमे धीमे तेओए पोतानी मनोकामनाओ उपर अंकुश राखवानो प्रयत्न कर्यो हतो. आखरे तेओ सफळ पण थया अने ज्यारे पोतानी नगरी-मयुरपुरी-ना आंगणे पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० नुं शुभ चातुर्मास थयुं त्यारे सपत्नी शियळव्रत धारण कर्युं. अने एक रीते गृहस्थाश्रमनो त्याग करी वानप्रस्थ बन्या. आ वखते ज एमना बनेवी तथा बीजा बे कुटुंबीजनोए धर्मवीरना पगले सपत्नीक ब्रह्मचर्य धारण कर्युं. श्री झवेरीजीए आ शुभ अवसरनी खुशालीमां रू० बे-त्रण हजारनुं दान जाहेर कर्युं हतुं. खरेखर तेओ गृहस्थ-संन्यासी हता. पोतानो जीवनविकास क्रमशः साधवा चाहता मनुष्य माटे एमनुं जीवन अनुकरणीय हतुं.





★ શ્રી જૈન ટ્રેનીંગ કૉલેજના મંત્રી **ધર્મવીર દુર્લભજીભાઈ**, ન્યાયતીર્થ વિદ્યાર્થીઓ સાથે ★

राष्ट्रीय-जीवन

[१] राष्ट्रप्रेम

स्व० दुर्लभजीभाई जेम समाज तथा धर्मरंगथी रंगायेला हता तेवी ज रीते राष्ट्रप्रेमनो पण गाढ रंग तेमना जीवन उपर जाम्यो हतो.

राष्ट्र, समाज अने धर्मनो पारस्परिक संबंध घणो ज प्रगाढ छे. राष्ट्र शरीर छे, समाज ते शरीरना अंगभूत छे अने धर्म तो राष्ट्र-रूपी शरीरमां रहेल प्राण छे. 'शरीर स्वस्थ होय तो ज मन पण स्वस्थ रही शके' ए कहेवत ने अनुसरीने श्री दुर्लभजीभाई राष्ट्ररूपी शरीरने पण सबळ अने स्वस्थ बनाववा प्रयत्नशील रहेता हता.

आपणे पाछळना प्रकरणोमां वांची गया छीए तेम तेमनुं जीवन जो के समाज अने धर्मनी सेवामां व्यतीत थयुं हतुं तो पण तेओए कदी राष्ट्रनी उन्नतिमां उदासीनता के उपेक्षा दाखवी नथी एटलुं ज नहि पण राष्ट्रोत्थाननी प्रत्येक प्रवृत्तिमां रस लेता हता अने यथाशक्ति तन, मन अने धननो भोग पण आपता हता.

[२] काठीआवाड राजकीय परिषद्, मोरबी

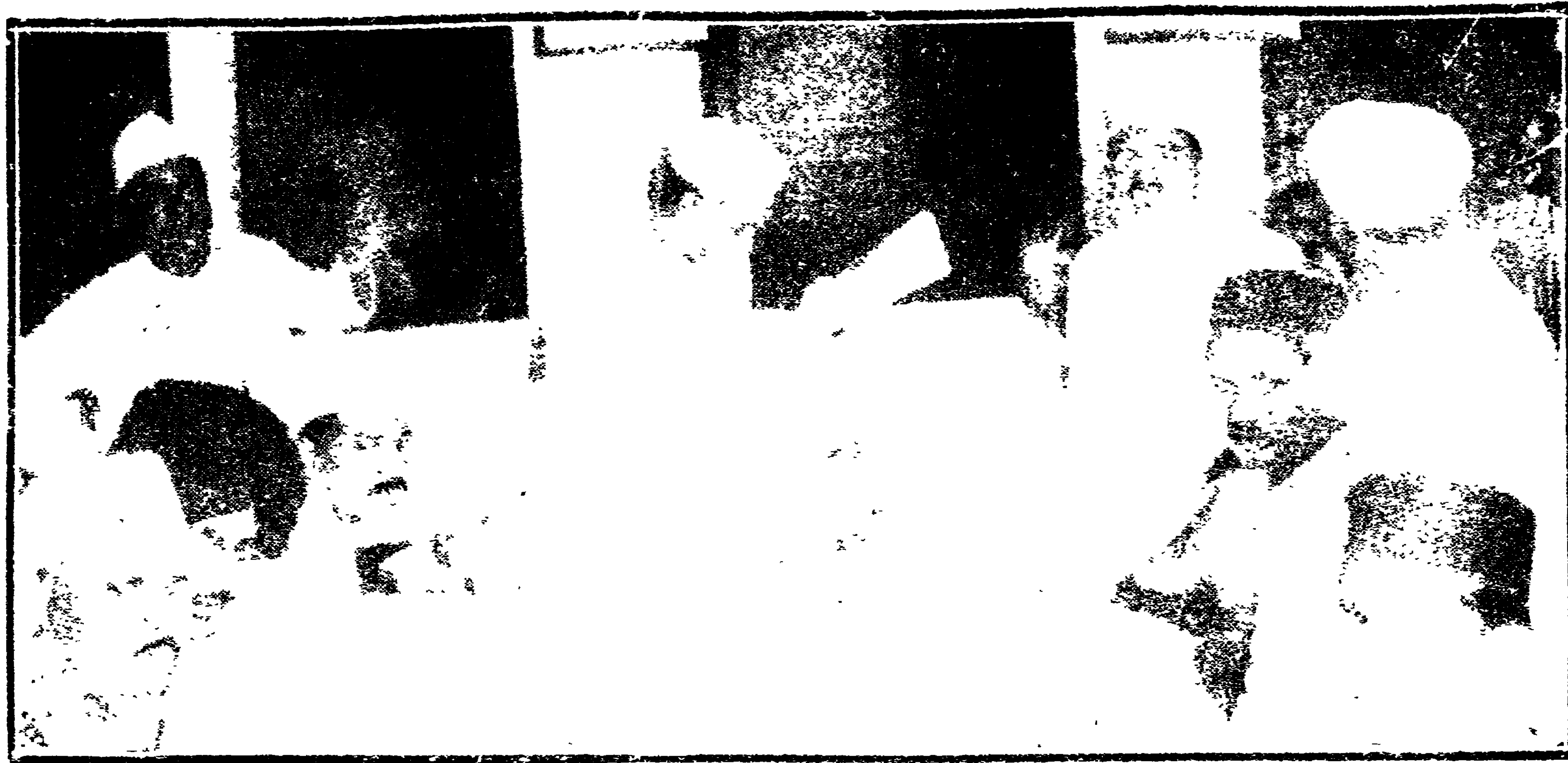
ज्यारे काठिआवाडमां देशी राज्योनी राज्यलिप्सानी चक्कीमां लोकशक्तिने कचडी नाखवामां आवती हती, राज्यना नित्यनवा करवेराओथी लोको त्रासी उठ्या हता, लोकोनी राष्ट्रीय भावनाओ उपर अंकुश मूकवामां आवतो हतो एटलुं ज नहि, प्रजाना व्याजबी अधिकारो उपर पण तराप मारवा माटे देशी

रजवाडाओ पोताथी बनतुं बधुंय करी प्रजाने रीबावी रह्या हता त्यारे सौराष्ट्रमां एक एवो लोकहितसाधक वर्ग ऊभो थयो के जेणे राष्ट्रनो युगसंदेश सौराष्ट्रना गामेगाम पहोंचाडवानुं कार्य पोताना हाथमां लीधुं. आ प्रमाणे लोक-जागृति थवाना परिणाम रूपे 'काठीआवाड राजकीय-परिषद' (Kathiawad Political Conference) नामनी संस्थानो जन्म थयो. ए कोन्फरन्सनुं अधिवेशन ज्यारे मोरबी मुकामे भरवामां आव्युं त्यारे तेना स्वागत मंत्री तरीकेनुं जवाबदारी-भर्युं कार्य स्व० श्री झवेरीजीए पोताना माथे लीधुं अने सफलता-पूर्वक पार उतार्युं.

तेमना परिचयमां आवनार घणा राष्ट्रनायको कहेता के, तमारी धगश, सेवाभाव, ऊंचा विचारो, काम करवानी शक्ति बधुं जोतां जो तमे तमारुं जीवन राष्ट्रसेवामां समर्प्युं होत तो तमारामां पहेली पंक्तिना राष्ट्रनायक थवानी शक्ति हती. आ कथनना जवाबमां तेओश्री नम्रभावे एम ज कहेता के, आपणा देशमां देशप्रेमी घणा देशसेवको छे अने मळी रहेशे परंतु समाज अने धर्मनी सेवा करनार धर्मसेवकनी अमारे त्यां खोट छे एटले ए विचारने अवकाश नथी.

[३] अहिंसात्मक सत्याग्रह, ई. स. १९३०

ई० स० १९३० नी साल भारतवर्षना इतिहासमां सुवर्णाक्षरे अंकित थयेली छे. कारण के स्वतंत्रता-संग्रामनो विजय-शंख ए ज सालमां फूंकायो हतो अने ए ज वर्षे अहिंसात्मक राष्ट्रयज्ञमां अनेक जीवनअर्घ्यनी आहूति आपवामां आवी हती. भारतमातानी रक्षा काजे भारतीय पुत्रोने आह्वान करवामां आव्युं अने ए आह्वाननो जवाब बालको, युवानो अने वृद्धो बधाए सहर्ष आप्यो हतो.



• શ્રી દુર્લભજીભાઈના આંગણે રાષ્ટ્રપતિ જવાહિરલાલજી નેહરૂ, જૈપુર •

ધર્મવીર દુર્લભજીભાઈએ નાનપણથી જ તેઓ ઉપર પોતાનો વ્યાપારિક અને વ્યવહારિક બોજો નાંખી સમાજ સેવાનો માર્ગ પસંદ કર્યો.



શ્રી વનેચંદ દુર્લભજી ઝવેરી.

ધોલેરા સત્યાગ્રહની સ્મૃતિ.



શ્રી શાન્તિલાલ દુ. ઝવેરી

आवा अहिंसात्मक संग्राममां सक्रिय भाग लेवो ए अहिंसक समाजनी फरज थई पडी हती. जैन धर्मानुयायी अहिंसक समाज माटे तो आ एक अपूर्व अवसर हतो. एक जैन मुनि पण आ अहिंसात्मक स्वातंत्र्य–संग्राममां भाग लेवा माटे तैयार थया छे एवुं ज्यारे श्री दुर्लभजीभाईना जाणवामां आव्युं त्यारे श्री दुर्लभजीभाई वृद्ध तथा दुर्बल कायाए पण राष्ट्रयज्ञमां क्रियात्मक भाग लेवा आतुर थया हता. तेमना पुत्रोए तेमने रोक्या अने तेमना एक नाना पुत्र श्री शांतिलाल झवेरी B. A. सत्याग्रह–संग्राममां जवा तैयार थया.

राष्ट्रयुद्धमां जता राष्ट्रसेवक पुत्रने राष्ट्रप्रेमी पिताए विदाय वेळाए कष्ट सहीने पण भारतनुं मुख उज्ज्वल करवानी जे शुभ शीखामण आपी हती ते चिरस्मरणीय रहेशे.

भाई शांतिलाले धोलेरामां सत्याग्रह करती वखते पोलिसनो उद्दंड दंड सह्यो अने लाठीओना प्रहारथी मस्तक रक्तरंजित थयुं होवा छतां पोताना नामने सार्थक करी शांतिपूर्वक जुल्मो झील्या.

[४] भारतना 'जवाहिर' श्री झवेरीजीना आंगणे

भारतना मुकुटमणि युवकहृदयसम्राट् श्री जवाहरलालजी नेहरु ज्यारे राष्ट्रपति हता त्यारे तेमणे राष्ट्रजीवनमां जागृति आणवा वायुवेगे कष्टसाध्य प्रवासो खेड्या हता. पंडितजीए आ राष्ट्रयात्रामां आपेला प्रेरक अने वेधक प्रवचनोनी चिनगारीए ब्रिटीश अने देशी भारतमां एक नवुं ओजस् आण्युं हतुं. आ वाणीने देशी राज्यो जराय पचावी शकता न हता.

भारतमुकुटना जवाहिरसमा पं० जवाहरलालजी नेहरु जयपुरथी पसार थाय अने पोताने आंगणे आवेली राष्ट्रगंगाने पधरावी आतिथ्य-सत्कार करवानो महामूलो अवसर जे महाभाग्ये प्राप्त थाय छे ते आम

सहेजे सांपडता निरर्थक चाल्यो जाय ए विचार पण श्री दुर्लभजीभाईने मन असह्य थयो. पोतानुं हृदय मित्रोनी सामे खाली कर्युं अने गमे ते भोगे राष्ट्रनायकने पोताने आंगणे लाववानो अत्याग्रह कर्यो.

आवा शुभ कार्योमां कोण पाछळ रहे ? तेओ अने तेमना मित्रो ज नहि पण बीजा अनेक नागरिक जनो स्टेशन उपर यथासमये पहोंची गया अने थोडा समय माटे पण उतरवा माटे जयपुर प्रजा तरफथी पंडितजीने अत्याग्रह कर्यो. पंडितजी उतरवा माटे तो राजी थया पण स्मितभावे टकोर मारी के, 'मने उतारवामां राज्य तरफथी कशी आडखीली उभी नहि थायने ?' बधाए एकी आवाजे कह्युं के, 'एमां डरवानुं शुं ?'

पंडितजीने अत्यादरपूर्वक उतार्या. पंडितजीने छाजे एवुं सन्मान आपी पोताना आंगणे लाव्या. आ मानवंता महेमाननो खूब आतिथ्य-सत्कार अने सेवासुश्रूषा करी 'फूल नहिं तो फूलनी पांखडी' रूपे नानी थेली पण अर्पण करी.

श्री दुर्लभजीभाईए एक झवेरी तरीके राष्ट्रना जवाहिरनी किंमत आंकी अने पोताने आ दुर्लभ अवसर मळवा बदल पोताना जीवनने धन्य मान्युं.

आ ज प्रमाणे पूज्य कस्तुरबा जयपुर पधार्या हता त्यारे तेमणे तेमना चरणे थेली धरी हती अने यथोचित सन्मान कर्युं हतुं. शेठ जमनालालजी बजाज तथा श्री भूलाभाई देसाई पण तेमना अतिथि बनी गया छे.

[९] 'सौराष्ट्रना सिंह' नी पधरामणी

देशी रजवाडामां रहेवा छतां अने पोते लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति होवा छतां राज्यनी आंखोमां खूंचे एवा राष्ट्रनायकोनी पोताने आंगणे पधरामणी करावी एमनुं यथोचित सन्मान करवुं ए स्व० दुर्लभजी भाईना राष्ट्रप्रेमने व्यक्त करे छे.

श्री अमृतलाल दलपतभाई शेठ एक वखते सौराष्ट्रना सिंह तरीके ओळखाता हता. आ सौराष्ट्रसिंहनी त्राडथी मोटा मोटा देशीराज्यो हरणाओनी माफक कंपी उठता. पोताना 'सौराष्ट्र' साप्ताहिकमां दरेक नाना मोटा रजवाडाओनी खबर लेता. ए सौराष्ट्रना सिंहे तो एक वखत पतियाला नरेश साथे बाथ पण मीडी हती, अने बन्नेए पोतपोतानुं जोर अजमाव्युं हतुं.

सौराष्ट्र मातानो ए सपूत पतियाला जवा माटे जयपुर थईने पसार थाय अने पोताना आंगणाने पवित्र न करे ए स्व० श्री झवेरीजीने रुच्युं नहि. पोते देशी राज्यमां रहे छे, पोतानो घणो खरो वेपारसंबंध रजवाडाओ साथे छे अने श्री अमृतलालभाई अने देशी राज्यो वच्चे हाडवैर छे, ए बधुं जाणता छतां तेओश्रीए श्री अमृतलालभाईने तार कर्यो अने पोताना आंगणे पधारी मोंघेरा महेमान तरीके आतिथ्य स्वीकारवा आग्रह कर्यो. श्री अमृतलालभाईए आमंत्रणनो सहर्ष स्वीकार कर्यो अने श्री दुर्लभजीभाईए पण राष्ट्रवीरने छाजे एवुं सन्मान आपी पोतानी मनःकामना पूरी करी.

[६] जयपुर–सत्याग्रह

१९३० ना स्वातंत्र्य संग्राम पछी राष्ट्रजीवनमां जागृतिनो प्रवाह पूरजोशथी वही रह्यो हतो. जेम ब्रिटीश भारतनी जनताने थोडा घणा अधिकारो मळवा लाग्या हता तेम केटलाए नाना मोटा राज्योए प्रजाने योग्य अधिकारो आपी राज्यशासनमां अनेक सुधाराओ कर्या हता.

परंतु सर्वोपरि सत्ताना गुलाम बनेला केटलाए रजवाडाओए प्रजानी न्यायोचित मांगणीओनो पण तिरस्कार करी प्रजानी जागृतिना अग्निमां घी होम्युं हतुं. परिणामे प्रजाशक्ति वधवा लागी, देशी राज्योमां

प्रजामंडळो उभा थया अने प्रजामंडळोए राजसत्ता सामे प्रजाना अधिकारो अपवा माटे पडकार कर्यो. पोतानी राजसत्ताना मदमां आंधळा बनेलाओए आ पोकार सामे आंख आडा कान कर्या. त्यारे प्रजाए सत्याग्रहनुं शस्त्र हाथ धर्युं. राजकोट, लींबडी, भरतपुर वगेरे अनेक स्थळोए सत्याग्रहो थया. जयपुर राज्ये पण आ सत्याग्रह-संग्रामनो स्वाद चाख्यो. राष्ट्रभक्त शेठ जमनालालजी बजाजनी नेतागीरी नीचे आ संग्रामना श्रीगणेश थया. दरेक प्रजाजनने तन, मन अने धननी प्रजायज्ञमां आहूति आपवानी हाकल पडी.

स्व० श्री दुर्लभजीभाई त्यारे मांदगीनी पथारीए पड्या हता. ए मांदगीना खाटले पड्या पड्या पण तेओ मन अने धनथी आ कार्यमां सहयोग आपी रह्या हता. प्रजामंडळनुं बुलेटिन पोताने हाथे चडतां, डाक्टरोनी मनाई होवा छतां पोते वांचता, विचारता अने प्रजानो अखूट उत्साह जोई आनंदित थता अने पोते सक्रिय भाग नथी लई शकता ते बदल खेद पामता.

पोताना मृत्युना थोडा दिवस अगाउ ज प्रजामंडळना प्रमुखना नामे एक पत्र लखी मोकल्यो हतो के, 'हुं पोताना कुटुंबना स्त्रीपुरुष सभ्यो सहित सत्याग्रह–संग्राममां जोडाववा इच्छुं छुं' अने महात्मा गांधीजीनी अनुमति मेळववा माटे देशभक्त देशपांडेने पोते दिल्ही मोकल्या हता. परंतु तेमनी आ अंतरनी इच्छा पार उतरे ते पहेलां तो तेओश्री मांदगीमां सपडाई गया अने एमनो आत्मा आ राष्ट्रीय भावनाओनी साथे ज अमरधाममां पहोंची गयो.



साहित्यिक-जीवन

[१] साहित्य-शोख

स्व० श्री दुर्लभजीभाईना जीवन तरफ एक नजर नाखतां एटलुं तो दीवा जेवुं स्पष्ट देखाई आवे छे के तेमनुं कार्यक्षेत्र घणुं ज विशाळ हतुं. तेओ कर्मशील हता एटले कोई पण एक प्रवृत्तिमां ज गोंधाई न रहेतां, एक पछी एक नवी नवी प्रवृत्तिओ हाथ धरता हता. तेओ धार्मिक के सामाजिक क्षेत्रमां ज पड्या न रह्या, राष्ट्रीय क्षेत्रमां पण उतर्या. तेवी ज रीते तेमणे शिक्षण-सेवामां ज गुंचवाई न रहेतां साहित्यिक प्रवृत्तिओ पण आदरी. तेओ लेखक बन्या, ग्रंथकार बन्या, संपादक बन्या अने संचालक पण बन्या. अने आमां खूबी तो ए ज छे के तेमणे आ बधुं य पोताना व्यवसाय अने कुटुंबनी जंजाळ अने जवाबदारी संभाळीने कर्युं.

आगळ जणाववामां आव्युं छे तेम श्री दुर्लभजीभाईने नवुं सांभळवानी, नवुं लखवानी, नवुं जाणवानी अने नवुं विचारवानी नानपणथी ज भारे रुचि हती. अने वर्तमानपत्रो वांचवां, तेमांथी आवश्यक लेखो अने उपयोगी समाचारोनी कापलीओ काढी तेनो संग्रह करवो अने नाना लेखो, कविताओ अने वार्ताओ लखवी-ए बधा तेमना नानपणना शोखना विषयो हता.

जेम जेम तेओ उंमरलायक थता गया तेम तेम तेमना उपर कुटुंबनो, वेपारनो, समाजनो अने धर्मनो भारे बोजो आवी पड्यो ते छतां तेमनो साहित्य प्रत्येनो शोख वधतो ज गयो अने अनेक जातनी प्रवृत्तिओ साथे आ शोखने पण तेओश्रीए पोष्या कर्यो.

[२] वांचननो शोख

वांचननो शोख तो तेमने एटलो बधो हतो के जे कोई सारुं नवुं पुस्तक छपातुं ते तेमनी नजर बहार होय ज नहि अने तेमनी लायब्रेरीमां पण ते होय ज. आ प्रमाणे तेमने त्यां एक सारी खानगी लायब्रेरी तैयार थई गई हती. ए ज वात समाचार-पत्रनी बाबतमां पण छे.

तेमने एक सारी टेव तो ए हती के, जे कोई पुस्तक तेओ वांचता तेना उल्लेखनीय अंशोनी नीचे लाल पेन्सिलथी निशान करता अने उपयोगी अंशोने पोतानी डायरीमां नोंधी पण लेता.

ए उपरांत ज्यारे समाचारपत्रोमां कोई उपयोगी समाचार के लेख तेमना वांचवामां आवता त्यारे तेनी कापलीओ तो काढी ज लेता अने विशेषमां ए कापलीओ पोताना स्नेहीसंबंधीओ, मित्रो के विद्यार्थिओमां जे कोईना उपयोगनी होय तेमने पोताना तरफथी योग्य सुधारावधारा साथे मोकलता. एवी अनेक कापलीओ कोलेज अने गुरुकुळना अध्यापको अने छात्रो उपर अवार नवार आव्या करती हती.

आवी कापलीओनो तेमने त्यां एक मोटो संग्रह छे. एमां केटलीए घणी ज उपयोगी छे. ते तो एक जुदा ग्रंथरूपे ज प्रकाशित थई शके एम छे.

[३] लेखननी टेव

जेटलो तेमने वांचननो शोख हतो तेटलो ज शोख लेखननो पण हतो. जेवी रीते कापलीओनो संग्रह करता हता तेवी ज रीते पोतानी नोंधपोथीमां अवार नवार पोताना अनुभवो पण टांकतां हता. आ नोंधो घणी ज उपयोगी जणाय छे. पण तेमणे आवी

नोंधो नोट बूकोमां नथी राखी पण जेवा कागळो मळ्यां एमां लखी नांख्युं छे. केटलीए वखत तो पोताना विचारो तेमना नामे आवेला पत्रोना कवरो उपर ज लखी नांख्या छे. आम लखवानी टेव जीवन पर्यंत चाली.

आ लखाण सिवाय जुदा जुदा मासिकोमां 'श्री झवेरी मोरबी', 'डी. टी.' 'दुर्लभ' वगेरे संज्ञाओथी लेखो लखवानुं तो तेमणे १५ वर्षनी उंमरथी ज शरू कर्युं हतुं.

'मुंबई समाचार' 'सांज वर्तमान' 'संदेश' वगेरे वर्तमान पत्रो मां पण तेमना लांबा अने विचारशील लेखो प्रगट थता. अने आ दैनिक पत्रोना नवा वर्षना अंकोमां तो एमना लेखो खास होय ज. आ सिवाय एमना लेखो 'सयाजी विजय' 'आर्यधर्मप्रकाश' 'बुद्धि प्रकाश', 'जैनप्रकाश', 'जैनहितेच्छु', 'स्थानकवासी जैन', 'झलक' वगेरे जैन-जैनेतर पत्रोमां पण प्रकाशित थतां रह्यां छे. एमना खास खास अने मोटा लेखोनी एक मोटी अनुक्रमणिका पण एमनी नोंधपोथीमांथी मळी छे.

तेमना सामाजिक तथा बीजा विषयो संबंधी लेखोमां शब्दाडंबरनी प्रधानता न हती. बधाय लेखोमां घणा आदर्श विचारो, परिपक्व अनुभवो अने सुंदर भावो वांचवा मळतां. सामाजिक लेखो तो घणा हृदयस्पर्शी अने समाज सामे नग्न सत्य रजू करनारा हता.

[४] संपादक अने संचालक तरीके

आ प्रमाणे तेओश्री अंतिमकाल सुधी एक लेखकरूपे रह्या हता. वचमां पोतना साहित्यिक प्रेमनी पुष्टि खातर पत्रोना संपादक अने संचालक तरीके पण रह्या.

सर्वप्रथम तो तेओश्रीए पंदर वर्षनी उंमरमां अमदावादमां एक साप्ताहिक पत्रना उपसंपादकरूपे रही पोतानी साहित्यिक रुचि वधारी अने पछी घणा लांबा वखत सुधी राजकोटना सुप्रसिद्ध छापखानाना मालिक मोहनलाल दामोदरभाईना सहयोगथी 'श्रावक' नामना मासिकपत्रनुं संपादन कर्युं. आ पत्रे जैनसमाजनी सारी सेवा बजावी हती.

त्यार बाद जैन ट्रेनिंग कोलेजना विद्यार्थिओमां पण साहित्य प्रति रुचि जगाडी समाज–उत्थान अर्थे 'उत्थान' मासिकनी शरूआत करावी. संचालननो बधोय भार पोते लीधो अने पोतानी देखरेख नीचे 'सम्मेलनांक' अने 'महावीरांक' नामना बे सुंदर विशेषांको कढाव्या के जेमां श्री विधुशेखर भट्टाचार्य, श्री क्षितिमोहन सेन, साहित्याचार्य श्री हजारीप्रसादजी द्विवेदी वगेरे भारतीय विद्वानोना भगवान् महावीरना जीवन अने उपदेश पर प्रकाश नाखता अनेक उपयोगी लेखो हता.

ए सिवाय जैन समाजमां शिक्षण विषयने लगतुं एक पण मासिक न होवाथी श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर तरफथी 'जैनशिक्षणसंदेश' मासिकथी शरूआत करावी. आवी रीते तेओश्रीए अनेक पत्रोने प्रोत्साहन आप्युं हतुं.

[९] ग्रन्थकार तरीके

स्व० झवेरीजीए जैन समाजमां एक ग्रंथकार तरीके पण नामना मेळवी हती.

मेक्समूलर (Maxmullar) नामना एक अंग्रेजी विद्वान् द्वारा लखायेल अने ई० स० १८८४ मां प्रकाशित थयेल श्री आचारांगजी सूत्र तथा श्री उत्तराध्ययनजी सूत्रना गुजराती भाषांतरो तेओश्रीए प्रो. रवजी देवराज साथे मळीने 'जैन स्कोलर्स'ना नामथी बहार पाड्यां हतां.

पूज्यश्री श्रीलालजी महाराजनुं दळदार जीवनचरित्र तेमणे महिनाओ सुधी एकांत सेवीने लख्युं अने तेने समाजना चरणे धरी गुरुभक्तिनो आदर्शपाठ समाज समक्ष मूकता गया. आ पुस्तकनी भूमिका गुजरातना कविशिरोमणि श्री नानालाल दलपतराम पासे लखावी साधुतानो निबंध जैन समाज समक्ष रजू कर्यो. आ प्रबंध नानो छे पण चिरस्थायी साहित्यनी गणनामां आवी गयेल छे.

जे महाभारत कार्यना संपादनथी तेओश्री अमर बनी गया एवा बृहत् साधु संमेलननो इतिहास पण तेओश्री पोताना हाथे ज लखता गया छे, जे टूंक समयमां ब्यावरना 'महावीर प्रिंटींग प्रेस' तरफथी प्रकाशित थवानो छे.

आ ग्रंथो सिवाय श्री झवेरीजी द्वारा लखायेला नीचेना त्रण पुस्तको पण प्रकाशित थई गयेल छे:—

(१) सुभद्रा (२) मधुबिंदु (३) आडतनो अनुभव.

आ ग्रंथो सिवाय पण अंग्रेजीमांथी अनुवादित करेल एक 'झवेरात–ज्ञान' संबंधी अने बीजुं 'विद्यार्थी' संबंधी एम बे पुस्तको अप्रकाशित छे अने ए उपरांत तेमणे पोते लखेली अप्रकाशित एवी घणी सामग्री पडी छे के जे नानी पुस्तिकाओना रूपमां प्रगट थई शके तेम छे.

आ प्रमाणे पोताना विशाल वांचन तथा दीर्घ अनुभवमय अप्रकाशित साहित्य तेमनी नोंधपोथीमां विद्यमान छे. तथा गुप्तनामे सामाजिक पेपरोमां अनेक लेखो द्वारा जैन समाज माटे साहित्यनो प्रकाशित तथा अप्रकाशित वारसो श्री झवेरीजी मूकता गया छे.

जैन गुरुकुल ब्यावर तरफथी 'जैन सिरीझ' ना जे भागो प्रकाशित थया छे ते पण स्व० श्री झवेरीजीनी प्रेरणानुं फळ छे. आ सिरीझना भागो जैनना दरेक संप्रदायनी संस्थाओ माटे अत्यंत उपयोगी सिद्ध थया छे. ज्यारे आ भागो प्रसिद्ध थयां त्यारे केटलाक मुनिओए सूचना करी हती के आमां मुहपति–मंडन अने मूर्त्तिपूजा–खंडनना बे पाठो रही गया छे. पण ए बे पाठोने श्री झवेरीजीनी माध्यस्थभावनाने अंगे ज स्थान आपवामां आव्युं नहोतुं. जो ए बे पाठोने स्थान आपवामां आवत तो ए 'सिरीझ' नो बधी जैन पाठशाळाओमां तथा इतर समाजमां जे बहोळो प्रचार थयो छे ते न थात अने सांप्रदायिक क्लेशनां बी ववात.

श्री झवेरीजी पोते तो ग्रंथकार बन्या अने पुस्तको लख्यां पण ए साहित्यामृतनो रस आपवा बीजी पण केटलीए व्यक्तिओने उत्साहित कर्या.

महावीर जैन ज्ञानोदय सोसायटी तरफथी जैनाचार्य श्रीमद् जवाहिरलालजी म० साहेबे सौराष्ट्रनी रसभूमिमां जे ज्ञानगंगा वहेवरावी हती तेनो लाभ बीजाने पण मळे ए हेतुथी एमना जुदा जुदा चातुर्मासोनां व्याख्यानोनो संग्रह त्रण ग्रंथोमां प्रकाशित कराववामां पण तेमनो पूरतो हाथ हतो.

रेवतीदान–समालोचना, 'धर्म अने धर्मनायक,' 'विद्यार्थी अने युवकोने' वगेरे सुंदर साहित्यिक ग्रंथोना लेखकोने पण तेओश्री तरफथी प्रोत्साहन मळ्युं हतुं.

गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अमदावाद तरफथी दरवर्षे प्रकाशित थता 'ग्रंथ अने ग्रंथकार' नामना ई. स. १९३३ना चोथा पुस्तकमां स्व० श्री दुर्लभजीभाईनो ग्रंथकार तरीके जे परिचय आपवामां आव्यो छे ते शब्दशः अत्रे टांकवामां आवे छेः–

"एओ दशाश्रीमाळी जैन जातिना छे. मूळ वतनी मोरबीना छे. जन्म संवत १९३४ चैत्र वद १३ नो छे. मेट्रिक सुधीनो अभ्यास करी व्यापारमां जोडाया. पच्चीस वर्ष थयां जैपुरमां झवेरातनी पेढी छे. शिक्षणनी साथे साथे साहित्यप्रेम पण पोष्या कर्यो, परिणामे घणी सभाओना सेक्रेटरी थया. पंदरवर्षनी वयथी ज जुदा जुदा मासिकोमां 'श्री झवेरी–मोरबी' वगेरे संज्ञाथी लेखो लखवा शरु करेला. मोरबी खाते भरायेली पोलीटीकल कोन्फरन्सना तेओ मंत्री हता. ए समयना मुख्य मासिको 'आर्य धर्म प्रकाश' वगेरेमां लेखो आव्या करता. 'बुद्धि प्रकाश'मां पण एमना लेखो खास होय ज. 'सयाजीविजय' वगेरे साप्ताहिकोमां एमनां 'मधुनुं एक बिंदुं' वगेरे लेखोए सारुं आकर्षण करेलुं. एमना लांबा लेखो जुदा पुस्तको रूपे पण प्रसिद्ध थतां. जेमां 'अर्वाचीन आर्यो' 'सुभद्रा' वगेरे साप्ताहिकोनी वार्षिक भेटरूपे पण अपायेलां. हमणां हमणां तेओ 'जैन प्रकाश'मां खास लखता रहे छे.

पच्चीस वर्ष पहेलां स्था. जैन कोन्फरन्सने जन्म आपी मोरबीमां प्रथम अधिवेशन भर्युं अने मुख्य मंत्री तरीके काम कर्युं. आजसुधी तेओ श्री संघसेवक तरीके पूर्ण उत्साहपूर्वक कार्य करी रहेल छे. ता. २२ मी एप्रिल १९३३ना रोज अजमेरमां मळेली जैनोनी मोटी कोन्फरन्सना पण तेओ ज मुख्य मंत्री हता. अने हजार पंदरसो वर्षमां न

थयेल एवुं साधुसंमेलन पण मेळव्युं, जेमां जैन साधुओ पगे चालीने कच्छ अने काश्मीर जेटले दूर थी आव्या हता. ६०००० जैनोए सभामां हाजरी आपी हती. स्था. जैन समाजे 'जैन-धर्मवीर' नी मानवंती पदवी साथे हीरावाळो 'नवरत्न'नो चांद अर्पण करी एमना श्रमनी कदर करी छे. हजु पण ए सेवा चालु छे. ब्यावर जैन गुरुकुळना तेओ कुलपति छे.

प्रोफेसर रवजी देवराज साथे मळी श्री आचारांगजी सूत्र अने श्री उत्तराध्ययनजी सूत्रनां गुजराती भाषांतर 'जैन स्कोलर्स' ने नामे प्रसिद्ध कर्यां. तेमां पूरेपूरो परिश्रम वेठी ए सूत्रोनी फूटनोटो एमणे ज लखी छे."

एमनी कृति

पूज्य श्री श्रीलालजी संवत् १९८०



अंतिम-जीवन

[१] वृद्धावस्था

पाछळना प्रकरणोमां आपणे स्व० झवेरीजीना आद्यन्त जीवन-क्रम तरफ एक नजर नांखी गया छीए. सद्गते भिन्न भिन्न क्षेत्रो अने विषयोमां आगे कूच करी छे ते पूरवार करे छे के तेमणे समयनी किंमत आंकी हती. 'समयं गोमय ! मा पमायए' ए शब्दोमां प्रभु महावीर स्वामीए गौतमने उद्देशीने आपेला आदेशने तेओश्रीए पण अमलमां मूक्यो हतो. तेओ जीवननी अंतिम पळ सुधी कांईकने कांईक नवीन योजना आदरता के विचारता रह्या हता. एक क्षणनो पण तेओए प्रमादवश दुरुपयोग नथी कर्यो. पण दरेक प्राणी, ज्यां सुधी संसारमां छे, त्यांसुधी जन्म, जरा अने मृत्युरूप त्रिविध उपाधिओथी प्रत्येक क्षणे घेरायेल ज छे. कोई पण मनुष्य पछी भले ते विद्वान् होय अथवा मूर्ख होय, श्रीमंत होय के गरीब होय, जाणतो होय के अजाण होय, स्वार्थी होय के परमार्थी होय, आ उपाधिओथी बची शकतो नथी. श्री झवेरीजी पण वृद्धावस्थाथी घेरावा लाग्या. आगळ जणाववामां आव्युं छे के श्री झवेरीजी नानपणथी ज सार्वजनिक सेवामां जोडाई गया हता. अने एमां तेमणे पोताना तन, मन अने धन नो पण भोग आप्यो हतो. अनेक प्रसंगोमां तो तेमने पोतानी शक्ति करतां पण वधारे श्रम वेठवो पड्यो हतो. एटले तेमनुं शरीर धीमे धीमे नबळुं पडवा लाग्युं. वळी संमेलन पछी फरी एकवार वातावरण डोळाई गयुं हतुं. साधुओना पार-

स्परिक क्लेशोए वधारे जोर पकडयुं हतुं अने श्रावकोमां पण सांप्रदायिक बाबतोमां खेंचाताणी शरू थई गई हती. संमेलनना ठरावोनो छडे चोके भंग थई रह्यो हतो. संवत्सरी वगेरे बाबतोमां पण भागलाओ पडी गया हता. आम चारे बाजुथी संमेलन अने कोन्फरन्सनी असफळताना कर्णभेदी कटु स्वरो संभळाई रह्या हता. आ वातावरणना विषभर्या वायुनी श्रीझवेरीजीना मन उपर पण खराब असर पडी. अने ए उपरांत तेओए हाथ धरेल अनेक प्रवृत्तिओ—जेवी के गुरुकुळ, वीरसंघ, जैन चेयर अने कोन्फरन्स—ने पार पाडवानी चिंता, आ बधी मानसिक वेदनाओथी तेओ पीडाई रह्या हता. तेमां वळी अधूरामां पूरुं वृद्धावस्थाए तेमनो पीछो कर्यो हतो. एटले शरीरनी साथे मननी शक्तिओ पण क्षीण थवा लागी.

[२] मांदगी अने मृत्यु

शारीरिक अने मानसिक नबळाई जोई डोक्टरोए शांति लेवानी सलाह आपी. पण कर्त्तव्यपरायण अने परोपकारी व्यक्ति कर्त्तव्यनुं भान भूली आत्मशांतिनी स्वार्थसाधना केवीरीते साधी शके ? तेओश्रीए डोक्टरोनी सलाह न ज मानी. ए ज दैनिक क्रम चालु रह्यो. फरीवार साधु—संमेलन भरवानी चिंता, गुरुकुळनुं मकान बनाववानी तथा एक लाख नुं फंड करवानी चिंता—आ चितारूप चिंताओए तेमना शरीरने जर्जरित करी नांख्युं. वळी पूज्यश्रीनुं काठिआवाडमां शुभागमन अने अनुक्रमे तेओश्रीनी मोरबी मुकामे पधरामणीथी तेमना हृदयमां उत्साह तो ऊभरायो पण उत्साहनी साथे साथे शारीरिक अने मानसिक श्रम वध्यो. छेवटे शरीर अने मननी हारजीतमां शरीर हार्युं

अने एक वखत शिथिल थई ढळी पड्युं. लोहीनुं दबाण वधवा लाग्युं. मोरबीमां सारवार अने मानसिक शांति मळे तेम न होवाथी जयपुर-मां लई जई बहारना बंगलामां राखवामां आव्या. थोडा दिवस सुधी शांति राखवाना परिणामे तबीयत धीमे धीमे सुधरवा लागी. अने बजारमां पण आवता जता थया. पण ज्यारे समाजमां अशांतिनो दावानळ सळगी रह्यो होय त्यारे तेमने जंपीने पड्या रहेवुं केम गमे ? जेम जेम शरीर सुधरतुं गयुं तेम तेम विचारोनो वेग वधु वेगथी वहेवा लाग्यो. फरी ए ज विचारमाळा ! अंते मृत्यु शय्या उपर पड्या. आवी हालतमां पण मनमां समाजसेवानी भावना प्रज्वळी रही हती. पण मनने कोण जाणी शके ? डोक्टरो पासे आ मानसिक चिंताने मटाडवा कोई दवा न हती. रोग असाध्य थई पड्यो पण आत्मा शरीरथी छूटो न पडी शक्यो. पुण्यात्माओना मरण पण शुभ मूहुर्तनी अपेक्षा राखे छे. छेवटे ए शुभ घडी आवी पहोंची. ए संमेलनना दिने जे समये तेओश्रीए भाषण आप्युं हतुं बराबर छ वर्षना गाळा बाद ए ज चैत्र शुक्ला १० मी ता. ३०–३–३९ गुरुवारना सवारना १० वाग्ये तेओश्रीए पोतानो देह छोड्यो. आम कुदरते ज साधु संमेलननी जयंति साथे ए 'धर्मवीर'नी जयंतिने पण कायमने माटे जोडी दीधी.

तेमने मृत्युनी आगाही मळी हती. मृत्यु पहेलां पोतानी व्यक्तिगत संपत्तिनो सदुपयोग करवा माटे पोताना हाथे Will वसीयतनामुं तैयार करी संस्थाओ प्रत्ये पोतानो प्रेम जाहेर कर्यो हतो. मृत्यु वेळाए तेओश्री खूब ज उत्साहमां हता अने स्वस्थ चित्ते सर्वे जीवो साथे अंतरनी लागणीपूर्वक क्षमायाचना करी जीवनशुद्धि करी हती. धन्य छे ए दुर्लभ–जीवनने.

[३] अमर मृत्यु

जन्म, जरा अने मृत्युथी कोई बची शकतुं नथी ए कथननी सत्यतामां विवेकी पुरुष विश्वास राखे छे. पण एथी कांई ए मृत्युथी बीता नथी. ते मृत्युनुं सुखे सुखे आलिंगन करे छे. कारण के ते मरवा छतां अमर बनी जाय छे. ते जीवननुं मूल्य समजीने सदा जागृत रहे छे एटले मृत्यु पर विजय मेळवीने मृत्युंजय बने छे. ज्यारे अविवेकी पुरुषो जीवनना अंतसुधी तेनी किंमतने गणकारता नथी. मोज, मजा अने आनंदोमां आखुं जीवन पसार करे छे. अंते ज्यारे मृत्युसमय पासे आवतो जाय छे त्यारे मृत्युथी बीवा लागे छे अने त्यारे ज जीवननी किंमतनुं तेने भान थाय छे.

स्व० दुर्लभजीभाई पण एक जागृतात्मा हता के जेमणे मृत्यु उपर विजय मेळववानो मूलमंत्र समजी लीधो हतो. तेमने मृत्युनो भय न हतो, भय हतो निष्क्रिय—प्रमादी जीवन पसार करवानो. तेओ आजे अमारी समक्ष प्रत्यक्षरूपे तो नथी ज पण एमनी यशःकाया आजे पण समाजनी सेवा अने शिक्षण तरफ आंगळी चींधीने संकेत करी रही छे.

गुणोनी सुगंध कोने आकर्षित नथी करती? तेमनी दुर्लभ—सौरभथी साधु या श्रावक अनेक लोकोना हृदयो सुवासित थया छे. तेओश्री ज्यां गया छे त्यां ज पोतानी सौरभ वेरता आव्या छे. एमना अवसानना दुःखद समाचार सांभळी कोण एवुं हशे के जेने दुःख न थयुं होय?

ए सद्‌गतना असामयिक अवसान प्रत्ये शोक प्रदर्शित करता अने एमना कुटुंबीजनोना दुःखमां समवेदना प्रगट करता अखिल भारत-वर्षना श्रीसंघोना, संस्थाओना, समाजना, आगेवानो अने विद्वानोना, परिचित राजा महाराजाओ अने अन्य स्नेही तथा सगासंबंधीओना अनेक संदेशाओ तार पत्र अने प्रस्तावो मारफत आव्या छे, जे

श्री झवेरीजीना गुणसौरभना विस्तारनी साक्षी पूरे छे. आ संदेशओ पैकी केटलाए जैनेतर व्यक्तिओ तरफथी पण आवेला छे.

सुलभाः पुरुषा राजन् ! सततं प्रियवादिनः ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

खरेखर श्री दुर्लभजीभाई दुर्लभ ज हता. जैनसमाजने आवा समाज-सेवक अने धर्मवीर मळवा घणा ज दुर्लभ छे. आजे समाजमां एनी खोट पडी छे. समाज एने चाहे छे—मांगे छे; पण संसारनो नियम छे—

जिसकी यहाँ चाहना है, उसकी चाहना वहाँ है ।
जिसकी यहाँ चाह ना है, उसकी वहाँ चाह ना है ॥

एमना अवसाननुं दुःख, फक्त एमना पुत्रोनुं अंगत नथी पण अन्य घणी व्यक्तिओनुं, केटलीक संस्थाओनुं छे; एटलुं ज नहि पण अखिल भारतवर्षना समस्त स्थानकवासी जैन समाजनुं छे. युवावस्थाथी प्रारंभ करी जीवननी अंतिम पळ सुधी तेमणे समाजनी सेवा करी छे ते माटे समाज पण तेमनो ऋणी छे. कोन्फरन्सना ए जन्मदाता, साधुसंमेलनना ए कर्णधार, वीरसंघनी योजनाना ए उत्पादक अने जैन गुरुकुळ, ब्यावरना ए प्राण हता. हवे समाजना सेवाभावी आगेवानो अने उत्साही युवको एमनुं अधूरुं रहेलुं कार्य संभाळी ले, चालतां कामोने वेगवान बनावी आकर्षक रीते संचालन करे, अधूरां कामो के विचारोने खंतथी कार्यमां उतारे एमां ज एमनी अनन्य सेवानी कदर छे अने एमां ज एमना आत्माने जे शांति माटे आपणे बधाए प्रार्थना करी छे ए मळशे.

[४] अपूर्ण अभिलाषाओ

स्वर्गस्थनी व्यक्त अने अव्यक्त एवी केटलीए अपूर्ण अभिलाषाओ छे पण समाजोन्नति अने धर्मोद्धारमां मुख्यरूपे सहायक थाय एवी अभिलाषाओ नीचे मूजबनी छे :—

(१) दयालबागनी पद्धतिए ‘ आदिनाथ आश्रम ’नी स्थापना करी हुन्नर–उद्योगो वडे समाजना बाळकोने स्वाश्रयी बनाववा.

(२) जैन गुरुकुळ ब्यावरने माटीमांथी मानव सर्जती जैन विद्यापीठनुं रूप आपी, तेना बाळकोने उच्च शिक्षण आपी जैनधर्मना प्रचार अर्थे दरियापार विदेशोमां मोकलवा. आ योजना अमलमां आवी शके एटला खातर जैन गुरुकुळ ब्यावरना स्थायित्व माटे मकानो तैयार करी देवां अने एक लाखनुं स्थायी फंड तथा ३६५ दिवसना खर्चनी तिथिओ भरावी आर्थिक चिंताथी मुक्त करवुं.

(३) ‘ वीरसंघ ’नी स्थापना करवी अने तेना सभ्योवडे धर्मनो प्रचार करवो.

(४) ‘ साधु संमेलन ’ माटे पुनः प्रयत्न अने सर्वे साधुओने एक ज आचार्यनी आज्ञामां मूकवा माटे ‘ सुधर्मगच्छ ’नी योजना सर्व संप्रदायोमां मान्य कराववी अने साधुसमाजमां उत्पन्न थयेलो सडो दूर करवो.

स्थळे स्थळे साधुशाळाओ स्थापवी अने अत्यारे साधुओना शिक्षणने बहाने थता खर्चने रोकवुं, ब्राह्मण पंडितोने न राखतां स्वधर्मी बंधुओवडे के शास्त्रज्ञ साधुओवडे ज शिक्षण अपाववुं अने एमना हाथे ज जैन शास्त्रोद्धारनुं कार्य शरु कराववुं.

(५) धार्मिक जैन साहित्यनो बहोळो प्रचार थाय एटला माटे आधुनिक शैलीथी साहित्य–निर्माण करवुं, बालोपयोगी जैन बालसाहित्य पण तैयार कराववुं अने धर्मना प्रचार अर्थे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी तथा श्री लोंकाशाहजीनी साधुसंमेलनी तिथिओ खूब प्रेमपूर्वक अने उत्साहथी ऊजववी.

(६) धार्मिक शिक्षणमां क्रान्ति अने स्था० समाजमां जागृति आणवा माटे बधी सार्वजनिक स्थानकवासी संस्थाओने संगठित करी एक ज सुंदर पाठ्यक्रम नियत करवो अने बधी संस्थाओनी आंतरिक व्यवस्था—निरीक्षण—परीक्षण वगेरे एक ज Education Board (शिक्षण परिषद)ना हाथमां सोंपवुं.

(७) समाजना बाळकोने उच्च शिक्षणनी जोगवाई करी आपवा माटे छात्रवृत्ति—फंड ऊभुं करवुं.

[५] समाजे शुं कर्युं ?

श्री झवेरीजी उपर बतावेल सात भावनाओने अपूर्ण मूकीने ज विदाय थया छे. ए आत्मानी शांति अर्थे पण ए अपूर्ण अभिलाषाओने पार उतारवी ए प्रत्येक स्थानकवासी जैननुं कर्त्तव्य छे.

पण हजु सुधी एमनुं जीवन्त स्मारक ऊभुं करवाना श्रीगणेश थया नथी. केवळ प्रस्ताव मात्र घडी मूकवाथी कांई दाळिया वळता नथी. अमने याद छे के कोन्फरन्सना जनेता श्री झवेरीजीना स्मारकरूपे एक लाखनी छात्रवृत्ति के एवा बीजा कोई उपयोग माटे एक फंड ऊभुं करवानो जनरल कमिटीए बे वर्ष पूर्वे निर्णय कर्यो हतो, अने ते कार्यने जोशभेर आगळ छपाववा माटे जुदा जुदा प्रान्तोना आगेवानोनी ३१ व्यक्तिओनी एक सबकमिटी पण चूंटी काढवामां आवी हती. पण आजसुधी ए कमिटीए पोतानो रिपोर्ट बहार पाड्यो नथी. परंतु अमने तो विश्वास छे के ए कार्य खूब ज उत्साहपूर्वक चाली रह्युं हशे. कारणके ए सबकमिटीना सभ्योमांथी घणा तो श्री झवेरीजीना बाळ-गोठीया, स्नेही मित्रो अने परिचित श्रीमंत स्था० समाजना आगेवान सद्गृहस्थो छे.

हा, एटलुं लखता अमने अत्यधिक हर्ष थायछे के, श्री जैनगुरुकुळ, ब्यावरनी जनरल कमिटीए श्री सद्‌गतनी गुरुकुळ संबंधी अधूरी अभिलाषाने पार उतारवा एक लाखना स्थायी फंडनी योजनाने हाथ धरी पोताना ज घरमां ए शुभ प्रवृत्तिनी मांगलिक शरूआत करी हती अने परिणामे अत्यार सुधी मां रु० ४०-४५ हजारनी रकम '**दुर्लभ–स्मारक–फंड**'मां भराई गयेल छे. श्री झवेरीजीनुं आवुं जीवंत स्मारक ऊभुं करवामां श्री दुर्लभजीभाईना श्रीमंत स्नेहीजनो, विद्या–व्यसंगी मित्रो अने प्रशंसको बधा पोतानो यथाशक्य फाळो आपशे अने कार्यने आगळ धपावी स्वर्गस्थना अंतिम मनोरथने पूर्ण करशे एवी आशा छे.

ए सिवाय 'वीरसंघ', 'साधु–संमेलन', 'शिक्षण संस्थानुं संगठन', धार्मिक शिक्षणनी व्यवस्था अने साधुशाळा वगेरे प्रवृत्तिओ खूब विचार अने प्रचार मांगे छे. जो समाज कृतज्ञतापूर्वक तेमनी सेवाओनी कदर करवा मांगे छे तो तो आ बधी प्रवृत्तिओने कार्य-रूपमां मूकवा एणे श्री झवेरीजी माफक श्रम उठाववो जोईए. आ बधी प्रवृत्तिओमां समाजनुं उत्थान अने उद्धार रहेलो छे. सीधी रीते तो समाजने ज एमां लाभ छे एटली वस्तु खास लक्ष्यमां लेवानी छे.

जो आगेवानो आ आशाओने लक्ष्यमां लई तेनुं आशाजनक परि-णाम आणवा पूरतो परिश्रम अने महेनत करशे तो श्री झवेरीजीनी खोट थोडा ज वखतमां भूलाई जशे, अने सद्गतना जीवन्तस्मारक तैयार थवानी साथे साथे समाजोत्थानना श्रीगणेश मंडाशे.

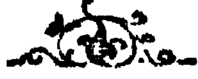
अंते श्री टी० जी० शाहना उद्बोधक वचनो टांकी अमे आ जीवन-चरित्रने पूर्ण करीए छीए :-

जैन समाजने

जातां बेउ बांय
हृदय बहु चिराय छे
पण हैयुं राखी हाथ
भार अदको वहेवा रह्यो. [१]
करीने पुरा लाख
बंधु! आशा पूरजो
अर्पी मातने सेव
भ्रातने शांति आपजो. [२]
'गुरुकुळ, गुरुकुळ' जाप
बन्ने वीर जपता हता
धर्मवीर दुर्लभ अने
समाजभूषण ते नथमल. [३]
ते संस्थाने साथ
देजो पूरा प्रेमथी
पूर्ण करजो सौ कार्य
अधूरां रहेला एमना. [४]

थईने सौ कटिबद्ध
कष्ट जननीना काप जो
इच्छे त्रिभुवन एह
शांति समाजे स्थापजो. [५]
साधुजीना हाल
सुधारवाने कारणे
परिश्रम लईने पूर्ण
संमेलन रूडुं भर्युं. [६]
घड्यां नियमो जे
पालन तेनुं न थतां
दुःखित हृदये पूत
माटी साथे मळी गया. [७]
मूकी सो साधु तंत
नियमोनुं पालन करे
आत्मिक शांति ए
जरूर पामे परलोकमां. [८]

विदेह नहि, छे जीवन्त ए



धन्य मातुश्री सांकळी, पाक्या दुर्लभ रत्न,
मर्त्य लोकना मानवी, कर्यों दिव्य प्रयत्न. १

वीर-संघ महावीरनो, करवा बोध प्रचार,
रत्न तणा पारख खरा, करी सुमति विचार. २

दुःखभर्यों संसार आ, जोयां आत्म अंधकार,
लक्ष चोराशी फेरा महिं, साध्यो आत्म विचार. ३

भवी जीवन दुर्लभ तणुं, शुद्ध दृष्टि संदेश;
जीवी जाण्युं जीवन ए, जरी नहि अंदेश. ४

त्रीस त्रीस वर्षो कर्यां, प्रयत्न पूरा अमाप;
भुली शरीरस्वास्थ्य ने, धर्मोद्धार सुकाज. ५

वयोवृद्ध छतां सह्यो, संमेलननो भार;
न गणी दिन रजनी कर्यो, अधिवेशन प्रचार. ६

झरणा वहेतां स्नेहना, वाणी अमृत पूर;
वेरी पण मित्रो बन्यां, करी मतभेदो दूर. ७

रीस नहीं हृदये जरी, देतां शिख विचार;
विदेह नहि छे जीवंत ए, 'हर्ष' हृदय आधार. ८



(੪) ਨ ·ਰ ਟਾ ਨ ★ ਘਾਰ ਤੇ

' दुर्लभ ' : : : एक हंसलो

जीवन-झांखी



ए ' नक्कर ' सज्जनता सांभरे छे ने जूनां मधुरां स्मरणोनी सांकळमां सपडाई जाउं छुं. रात्रि अने दिवस—वीश वीश महिना सुधी सतत जेमना अंगत परिचयमां आववानुं म्हने ' कुदरती ' सौभाग्य सांपड्युं हतुं एमना जीवनना, कहो के मानवता अने प्रेमथी छलकाता ए संस्कारी आत्माना, अमृतने पीछानवानी जे तक म्हने मळी हती ते संक्षिप्तमां अंजली रूपे धरूं ?—**वंसी.**

[१]

गुलाबना छोड पर ' कांटा ' जोईने
विचार आव्यो म्हने एक वार.
कुदरते भूल तो नथी करीने !
आवा सुंदर पुष्पना छोडने ते
होय कांटा शाने ?
फूल खडखडाट हसी बोल्युं:
' बुद्धिवादी ' बेवकूफ !
दया न खा म्हारी !
कांटो मूकवामां तो कुदरते
अजब ' कळा ' करी छे.
भूली गयो भोळा !
कांटा वच्चे ज गुलाबनुं जीवन सह्य होय.
अने ' खिली ' शके कांटा वच्चे ज
एनुं नाम ' गु...ला...ब. '
बाकी बधां ' गु...ला...म ! '
' दुर्लभ '—
आ विचित्र समाजना
' थोरीया ' कांटा वच्चे गुलाब समुं
जीवन जीव्या अने जीत्या.

[२]

गुलाबना फूल !
त्हारी बाह्य अने आंतर लाली जोई
हुं मनमां मोहायो.
आ कुमाश ने सौंदर्य जोई हरखायो.
पूछतां पूछाइ गयुं—
' आ कुमाश, सुगंध ने सौंदर्य
भला ! तें क्यांथी मेळव्यां ? '
उत्तर मळ्यो—
खबर नथी एटलीय त्हने के
आ गंदा-गोबरा ' खातर 'थी भरेली
धरतीमांथी ?
साचुं......साव साच्चुं !
कठण काळजावाळी समाजनी
धरतीना पेटाळमां
आवुं ज खातर पड्युं छे.

'दुर्लभ' जेवा 'सुगंधी' पुष्पो पाके तो
जराय नवाई पामशो नहि.

[३]

पुष्पो! त्हमे खील्यां तो खूब ज.
पण······पण······अरेरे !
सांज पड्ये त्हमे बधां 'चीमळाई' जशो!
रंगोनी सजावट बहु ज करी
पण अरेरे !······संध्या समये,
जे माटीमांथी आव्या ते माटीमां
तमे ढळी पडशो ?
जाव तेनो अफसोस नथी,
भले ! जाव तो भले !
पण 'सुगंध' तो मूकतां जशोने ?

✻ ✻ ✻

वीणा! तें मीठाशनी सरिता रेलावी
पण······अरेरे !
तुं घडी–बेघडीमां संगीत बंध करीश!
भले ! बंध कर तो भले!
एनुं दिलमां दुःख नथी.
पण ए सूरोनी 'झणझणाटी'
जीवनभर कानमां गूंज्या करे
एवुं कंइक कामण करती जईश ने ?

✻ ✻ ✻

स्नेही संबंधीओ! त्हमे प्रेमतंतुए
अमने झुलाव्या.
पण·········अरेरे !
जोतजोतामां सौ बस ! चाल्या ज
जाव छो !
'विदाय' ल्यो तो भले !
अमे बांधी शकवाना नथी,
पण प्याराओ !
त्हमारी मीठ्ठी स्मृतिओ
जीवनभर साथे चाल्यां ज करे···
चाल्यां ज करे एवुं कंईक करतां जजो !
कोईने य मृत्युनी मरजी नथी होती.
छतां मरण 'अनिवार्य' छे.
कोई मृत्यु पहेलां ज 'मरी' चूकेला
होय छे.
कोई मृत्यु साथे ज समाप्ति साधे छे.
ज्यारे कोई 'वीरलाओ' ज
मृत्यु पहेलां 'जीवनकला' खीलवी
मृत्यु पछी एक नवुं जीवन—
एक नवी 'कला' शरु करे छे.
'पाछळ'नाने प्रकाश अर्पी
आगळनी 'सिद्धि' म्हाणे छे.

✻ ✻ ✻

'संध्या' तो दरेकना जीवनमां
वहेली मोडी आवे ज छे चोक्कस.
कोई एदीने देखाय संध्या प्रभातमां,
कोई थाकेलांने घेरी ल्ये संध्या मध्यान्हे.
तो कोई वीरलाने ज संध्या,
संध्याना समये ज 'पोढाडी' दे !
'दुर्लभ'!
ए जीवनसंध्याए ज झडपाया छे.
बासठ वर्षोनी निस्पृह सेवानो
उज्ज्वल इतिहास मूकी चाल्या गया !
गया तो भले गया !
जीवनना रंगो संकेली

चाल्या गया तो भले!
मीठ्ठी-मधुरी
जीवनसुगंध तो मूकी गया छे ने!
'स्थूल' मृत्युनो अफसोस नथी,
कारणके 'सूक्ष्म'मां खूशबो भरी छे ने!

❀ ❀ ❀

रागद्वेष अने मानापमान,
वाडावाडी अने कलहकंकासथी
'आफरे' चडेला
आ 'खीचडीया' समाजने
'दुर्लभ'नुं स्थूळ मृत्यु खटकशे खरुं!
पण ओह! सांभळो छो?
जीवननी सुगंध फेलावीने
फूल खरे तो भले खरे!
रोकशो नहि. एनो अफसोस शो?
कोई महाकार्य करीने
मानवी मरे तो भले मरे!
कोई रोशो नहि.
ए तो एक रीते आनंदनो विषय छे.
'दुर्लभ'नां जीवनमां मानवतानी
मीठाश हती.
'कंईक करुं, कंईक भव्य करीने मरुं'
ए हृदयनी ए तालावेली हती.
अने ए कंई समाज माटे ओछुं हतुं?

[४]

कोईना जीवनचरित्रो 'लखाय' छे,
कोई जीवनचरित्रो 'लखावे' छे
त्यारे कोई सुभागी आत्माओ ज
पोतानुं जीवनचरित्र
पोताना हाथे ज-पोताना ज हाथे
जगतना वायुमंडळ पर
पोताना सुंदर कृत्योथी लखी जाय छे.
'दुर्लभ'ना 'सेवापरायण'
जीवनना कुंडमां भरेली शाहीथी
एनुं चरित्र लखनार आपणे कोण?
ते पोते ज लखी गया छे.
हवे तो आंखो उघाडीने
'वांचवानुं'ज रह्युं छे.
समाजसेवाना 'गुप्त दर्द'नी
ए 'मीठाश' जीवनभर म्हाणी गया.
हवे एना विरहथी रोवाने बदले
एमना जेवी मीठाश आपणे
म्हाणवी ज बाकी रही!

[५]

सरिता सतत प्रवाहे वह्या ज करे छे,
वहेतां वहेतां बधांने पावन करे छे,
अने संत के खूनीनो 'भेद' भूली
बधांनी तृषा छीपावे छे.
लक्ष्मी मळी तो दानमां वहेवा ज माटे,
बुद्धि मळी तो अबुद्धोने तारवा माटे,
अने—
हृदय मळ्युं तो 'खपी जनोने'
सहानुभूतिनां अमृत पावा माटे ज.
'दुर्लभे' ए जोयुं ने जाण्युं.
विचार्युं ने जीवनमां उतार्युं.
एमना अंतरनी पांखडीए पांखडीए
'समाजसेवा' करवानी 'ममता' हती,
ए ज उच्च प्रकारनो शोख हतो.

ए ज अंतरनी 'मस्ती' हती.
निस्पृहता ने मीठाश तेमना शस्त्रो हतां.
अने तेथी ए पोते ज
पोतानी साथे 'प्रेममां' पड्या हता.

[६]

कादव अने लील वच्चे
खीलेलुं पवित्र 'कमळ' जोयुं छे ?
अने एनीय वच्चे
पवित्रतर लक्ष्मीदेवीना अस्तित्वनी
कल्पना करो के ?
समाजना कादव वच्चे
ए 'दुर्लभ' खीलेला,
अने लक्ष्मीनी छाया पामेला.
लक्ष्मीदेवी तो बेवकूफोनेय वरे छे
पण लक्ष्मीना 'खणखणाट' वच्चे
'दुर्लभ' जेवुं संस्कारी हृदय जीववुं-
साव अशक्य नहि तो मुश्केल तो छे ज.
अने तेथी ज सौने पूछवुं घटे—
कादवमांथी कमळ बनी शकशो ?
तो ज तमे जीव्या अने जीत्या छो.
प्रत्येक कार्य ने संयोगोमांथी
आनंद लूंटी शकशो ?
तो ज तहमे उच्चे
प्रगतिपूर्वक चडी शकशो.

[७]

केटलाक च्हेरां एवां
मीठां-भाववाही होय
के जाणे सामे बेसी पीधां ज करीए.
ए च्हेराना भाव-अंतरनी
'आरसी'मां आस्तेथी उतारी लइए.
'दुर्लभ'ना च्हेरामां
आवुं कंईक माधुर्य हतुं.
एमनी वाणीमां विनय हतो,
एमनी प्रत्येक क्रिया ने कार्यमां
पोतानी भावनाना प्रतिबिंब पडतां.
जुवाननो जूस्सो ने वृद्धनुं डहापण
प्रत्येक प्रसंगे तरी आवतां.
तेमना जीवनमां जे मीठाश हती
तेमांथी अडधी केळवेली,
अडधी कुदरती.
आदर्शवादी वधु पडता होवा छतां
'व्यवहारु' दृष्टिनी ऊणप नहोती,
ने तेथी ज सौ कोईने प्रिय थई पडता.
जाणे लींबुनो रस !
एवी मीलनसार व्यक्ति हता.

[८]

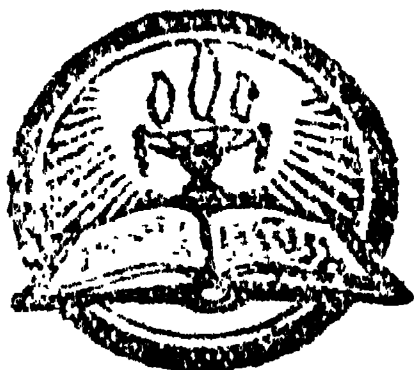
'सिद्धि'ओ परथी जीवन मपाता नथी
पण सिद्धिओ पाछळ
केटकेटलां 'मंथनो' कर्यां ?
ए आंकमां ज जीवन 'महान्' गणाय.
समाजना चोपडे
'दुर्लभ'नी सिद्धिनुं जमा पासुं
कदाच नबळुं हशे
तोय एमनां मंथनो कयां ओछां हतां ?
जूना विचारो जो के जल्दी छोडी
शकता नहि,
छतां जूनानां मांचडा पर
नवुं 'पचावी' शकवानी

'ताकाद' मेळवी हती
ने तेथी तेओ
जूना ने नवा वच्चे 'पूल' समा गणाता.
जूनाने पंपाळीने समजावतां, ने
नवी दुनीया, नवी मानवता
नवुं साहित्य अने नवा पवनना पडघा
झीलवा ने 'म्हालवा' तत्पर हता.
'वीसमी सदीमां जीवुं छुं'
ए भान सतत तेमना मगजमां रहेतुं.
अने तेथी ज
गई सदीना उंडाणमां अवतर्या छतांय
प्रगतिमय विचारोने
आनंदथी सत्कारता.
म्हारी 'आदर्श जैन'नी
प्रस्तावनामां लखेलां
दुर्लभना शब्दो टांकु छुं.
जे दुर्लभना जीवननो ज टूंको
इतिहास कहे छेः—
'वसंतने जीवनमां
पधरावनारा जनो क्यां छे?
जीवन म्हाणवानी
'कळा' आजे लुप्त थई'.
जीवन 'जीववानी' परवा
ओछी थई'.
तेओ जीवी गया! जीती गया.

[९]

'दुर्लभ'ने में हंसलो कह्यो छे शाने?
जाणता हशो……
राजहंसो साचा
मोतीनो ज चारो करे छे.
दुर्लभना जीवनमां झवेरात हतुं,
अने मानवजातिनां सामान्य
दुश्मनो समा
अनेक दुर्गुणोने पीठ दई,
पराया दोषो भूली जई
मात्र 'सद्गुणो'रूपी
'मोती'ज चरवानुं लक्ष राखेलुं.
आवा पुरुषो परलोकवासी थाय
छतांय ए सदा 'जीवन्त' छे.
अमर छे………अमर छे!

वंसी



वह फूल खिला मुरझाया

[ले० श्री 'निर्धूम', ब्यावर]



[१]

अपने यौवन ही में जिसने,
महायोग था धारा।
जैन जाति के महायान को,
जिसने था सम्भारा॥

[२]

जिसने मुनिसम्मेलन का सा,
भारत काम कराया।
किसके तन मन के बल से वह,
दुर्लभ अवसर आया॥

[३]

किसके बलपर कॉन्फ्रेंसका,
अधिवेशन भर पाया।
व्यक्ति व्यक्तिके मुखमण्डल पर,
'दुर्लभ' नाम सुहाया॥





[४]

खोला ट्रेनिंग कॉलेज जिसने,
स्नातक जिसके बिखरे।
हुए वही तो कार्यक्षेत्र के,
नायक नेता निखरे॥

[५]

पुनः हौंसला बढा सम्हाला
जैन गुरुकुल, ब्यावर।
मरते मरते जिसपर उसको,
होना था न्यौछावर॥

[६]

हाय! महा मनहूस कालका,
आया एक हिलोरा।
'दुर्लभ' सुरभिकुसुम मुरझाया,
फूटा भाग्य हमारा॥

खंड बीजो

जीवन-स्मृतिओ अने श्रद्धांजलिओ



श्री झवेरीजीना दुःखद अवसानना समाचार बहार पडतां ज पूज्य मुनिराजो, जैन तेम ज जैनेतर समाजना अग्रगण्य विद्वानो अने गृहस्थो, परिचित राजा-महाराजाओ तथा संस्थाओ अने संघो तरफथी दिलसोजी दर्शावता अने दुःख प्रगट करता अनेक तारो, पत्रो अने प्रस्तावो तेमना पुत्रो उपर आव्या हता. तेमांथी श्री झवेरीजीना जीवन ने स्पर्शता थोडाएक लेखो तथा पत्रोना अंशो टूंकमां अत्रे टांकवामां आव्या छे, जेथी वांचकोने श्री झवेरीजीनी सर्वप्रियता अने कर्मठतानो ख्याल आवी शके.

—लेखको



अंजलि

धर्मवीरने—

जैन आकाशे तुं
हतो तिमिरे तारलो
खरतां तुं तो आज
निस्तेज भासे व्योम ए. [१]

'कोन्फरंस' मातनी सेव
तन मन धनथी तें करी.
मोंघा पांत्रीस वर्ष
अर्प्यां मातृचरणमां. [२]

हतो उत्पादक तुं
'जैन ट्रेनिंग कोलेज'नो
भणी ने बाळक सौ
आशीष बहु दे छे तने. [३]

ब्यावर गुरुकुळ
पोष्युं तें बहु प्रेम थी
खरे ! न विसार्युं तें
अंतकाळे पण तेहने. [४]

अर्पी पचीस सो
प्यारा ए गुरुकुळने
करवा पुरा लाख
आशा राखी तें मित्रनी. [५]

सर्व संस्थानुं हित
वस्युं तुज हैए हतुं
पुष्पवृष्टि करी तें
रूपीआ पचीस हजारनी. [६]

तुज सेवानी कदर
माताए कीधी हती
अर्पीने ईल्काब
'धर्मवीर' अजमेरमां. [७]

कोन्फरेन्स मैयाने—

तारी कुखे रत्न
कंईक पाक्या ने पाकशे
पण नथमल दुर्लभ जोड
सांपडवी मुश्केल छे. [८]

नथमल दुर्लभ बे
सौभाग्य तुज कंकण हतां
नंदवाता ते आज
ऊपजे चिंता अन्यनी. [९]

निरखी तारुं मुख
करमाएलुं अति घणुं
उपाय न जडतां एक
सूतां ताणी सोड ए. [१०]

माता जननी तुं
पांच लाख पुत्रो तणी
छतां निराशा केम,
मुख पर आजे भासती ? [११]

गुरुकुळ, गुरुकुळ जाप
वच्चे वीर जपता हता
धर्मवीर दुर्लभ अने
समाज भूषण ते नथमल. [१२]

ते संस्थाने साथ
देजो पूरा प्रेमथी
पूर्ण करजो सौ कार्य
अधूरां रहेला एमनां. [१३]

—श्री टी. जी. शाह

['नथमल–दुर्लभ बेलडी' मांथी—

स्वातिना बिंदुओ काजे

[१]

पुष्पना परम पमराटथी
आकर्षायलुं जगत
आक्रंदे छे पुष्पना एकाएक विलयथी,
केवा ए कारमां समाचार,
सौम्य मूर्ति साक्षात शांतिना ज
ए फीरस्ता,
वर्षो सुधीना सहवासमांए
सदानो नूतनताभर्यो ए सहवास
ए ज ममताभर्युं एमनुं हृदय,
ए ज हसमुखो एमनो स्वभाव
काळनी ए केवी कूटील गति!

* * *

अंधाराए दीपक आवरी लीधो,
सीतार वागी न वागी त्यां तो
तार ज तूट्यो.
फानी दुनियानुं पिंजर खाली करी
प्रेममूर्ति शु पंखी आखरे उडी गयुं.
संगीत गयुं, ध्वनि रह्यो.
पुष्प करमायुं, सुवास रही गई.
जीवन लय पाम्युं, स्मृति मूकतुं गयुं.

नहि तूटी तणी बूटी
करो लाख उपाय;
खूटी गई वाट दीपकनी,
पछी बळवुं रह्युं क्यांथी.

* * *

[२]

जीवनमां डगले अने पगले भर्यो हतो,
पिता महावीरना पेगाममां पूर्ण प्रेम,
स्थानकवासी जैन समाजनी
धार्मिक, सामाजिक, बौद्धिक
अने आर्थिक, उन्नति काजे
जेणे भगीरथ प्रयत्नो कर्या
समाजनी सार्वदेशिक प्रगति माटे—
जेमना दिलमां सदैवनी झंखना हती
पुष्कळ दाझ अने प्रेम भर्यां हतां.

[३]

साधु संमेलन ए एमनुं जीवन-ध्येय,
वर्षोनी ज्हेमत पछी
मृगजळमांथी ए मोती नीपजाववा
स्वातिना बिंदु सर्ज्यां,
परंतु कुदरतनी प्रतिकूळता—
द्रव्य क्षेत्र काळ भावनी कठिनताए
मोतीनां मृगजळ बने ते पहेलां
ए ज ध्यान, ए ज विचार अने ए दिने ज
मोतीना मोती राखवा काजे
आत्मानुं बलिदान दीधुं.

[४]

स्थानकवासी समाज जागृत बने
सुषुप्त छतां समाजसिंह जागृत बने,
मोतीना मोती राखवा काजे
बलिदाननी भस्ममांथी
चेतनना फूवारा सर्जी
स्वातिना बिंदुओ सदाय वरसावो तो
धर्मवीर दुर्लभना, दुर्लभ
बलिदाने
मोतीना मोती ज रहेशे
तम आंगणे.

'हर्ष'



अनुताप !

[पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, जैन गुरुकुल, ब्यावर]

[१]

निपट निठुर विधिने हा! कैसा भीषण चक्र चलाया,
या समाज के ही अशुभों का फल संचित हो आया!
आज लुटा सर्वस्व जातिका जिस पर इतराते थे,
जिसके बल पर निर्भय निश्चल बढ़े चले जाते थे ॥

[२]

सुलभ हमें दुर्लभ देवों को जो सौभाग्य मिला था,
जिसकी अनुपम आभासे सूना उद्यान खिला था।
दुर्लभ हमें सुलभ देवोंको अब वह भाग्य अनोखा,
हाय! हमारे सुखका सागर किस अगस्त्यने सोखा ॥

[३]

कैसे आज अचानक टूटा मेरा मधुका प्याला,
उमड़ पड़ी है किस अम्बरसे प्राणहारिणी हाला?
बरस पड़ा है किस दुनिया का यह अनन्त तम काला,
किस निष्ठुरने मर्मस्थलमें हना नुकीला भाला?

[४]

वत्सलता से भरा लबालब हृदय कहाँ पाएँगे?
तेरी मधु मुस्कान ढूंढने कहो कहाँ जाएँगे?
कर्मनिष्ठता—धर्मनिष्ठता का संयोग निराला-
करके दोनों को ही तूने एक रूपमें ढाला ॥

[५]

सुधामयी आह्लादमयी शीतलता देनेवाली,
तेरे यशकी उज्ज्वल किरणें आज बनी विष प्याली।
सुख-संयोग समाएँगे दुःखों के विकट उदरमें,
कौन जानता था धधकेगी अभी आग इस घरमें॥

[६]

त्रिभुवन-दुर्लभ दुर्लभ! तुमको बड़े भाग्यसे पाया,
फिर भी हा! सम्मान तुम्हारा तनिक नहीं कर पाया।
रहे बीजकी भाँति मूलमें मगर मधुर फल लाये,
कीर्ति-कामनाहीन! तुम्हारे सद्गुण भूपर छाये॥



शोकोच्छ्वास

[रचयिता-पं० इन्द्रचन्द्रजी वेदान्तवारिधि, शास्त्राचार्य]

उद्यानं स्वयमेव रोपितमिदं यत्नेन पूर्वं त्वया ।
नीत्वा वारि निदाघदाहसमये कष्टाद् भृशं सिञ्चितम् ॥
वात्सल्येन विवर्द्धितांश्च निपुणं सर्वानिमान् पुष्पितान् ।
मालाकार! गतोऽसि कुत्र फलनात्प्रागेव हित्वा तरून् ॥
निर्माय स्वयमेव नीरधिजलेऽश्रान्तः स्वयं वाहयन् ।
तुंगोत्तुङ्गतरङ्गभीषणतरं दूरं विगाह्याम्बुधिम् ॥
उत्साहेन परेण सर्वपथिकान् आश्वास्य सांयात्रिक !
त्यक्त्वा स्थानकवासिजैनपरिषन्नावं क्व यातो भवान् ॥

अपश्यद्यः स्वप्नान् गुरुकुलविकासाय सततम् ।
समाजो जैनानामलभत यतः श्रेष्ठपदवीम् ॥
यदायासेनैवाखिलमुनिमहामेलनमभूत् ।
अलभ्यः सञ्जातस्त्रिभुवनसुतो दुर्लभ! हतः ॥

हा हा स्थानकवासिजैनपरिषन्नेतारमासाद्य कम् ।
दुर्गे घोरतरे प्रपञ्चगहने पन्थानमालप्स्यते ॥
लब्ध्वा कञ्च समाश्रयं गुरुकुलं प्राणांस्त्रिजान् पास्यति ।
भक्त त्वादृशमाप्स्यतीह यतिनां सङ्घः कथं दुर्लभ! ॥
जीवातुं समुपेत्य रोगविकलं प्रत्यङ्गजीर्णं हतम् ।
त्रिष्वंगेषु परस्परं च नितरां संघट्टमानेषु हा!
भुग्नं पूर्णतया विपन्थिनिवहैः सन्ताप्यमानं परम् ।
वर्द्धिष्यत्यचिरात् चिराद्विगलितं कः सन्मतेः शासनम् ॥
न प्राप्तो जगतीह कालकलनां को नाम नान्तं गतः ।
जोषं पश्यति लोक एष सकलं विश्वं सदा नश्वरम् ॥
हत्वा याति यदा भवादृशजनः सङ्कल्पकल्पानितः ।
रीयन्ते भुवनानि ताररवतः आक्रन्दमानानि हा! ॥

दुर्लभ श्रद्धाञ्जलि

[रचयिता-पं. दुग्धनारायणजी शास्त्री]

ओ! समाज के कर्णधार, ओ! प्रेमामृत के प्याले।
ज्ञानाम्बुधि के रत्न अरे ओ! दीनों के रखवाले।
जैन जाति सरदार, जैन गुरुकुल के भाग्य विधाता।
तेरे इस वियोगसे आंसू, ढरती भारत माता॥ १॥

उजड़ गया है नन्दन वन सा, यह उद्यान हमारा।
छोड़ चला क्यों ओ वनमाली! क्यों कर गया किनारा।
मुरझाती जाती हैं सहसा, ये सब प्यारी कलियां।
प्रमुदित अरे किसे पाकर के, नभ की तारावलियां॥ २॥

अभिलाषा के रंगमञ्च पर, आशाएं चिल्लाती।
अन्तस्तल में मूक वेदना, हूक चलाती जातीं।
संकट में था विद्वज्जन का, तू ही एक सहारा।
था पर्याप्त वरद कर कमलों, का बस एक इशारा॥ ३॥

आश्वासन मिलता था पीड़ित-जन के व्यथित हृदय को।
कौन भूल सकता है तेरे, 'दुर्लभ' नम्र विनय को।
संसृति का यह अटल नियम है, इक आता इक जाता।
कोई अयश तथा कोई यश, कोई पाप कमाता॥ ४॥

तेरी यशो राशियां, जगती-तल पर फैल चुकी हैं।
तेरी सेवायें समाज की, रग रग मध्य पगी हैं।
श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करो, हे पथिक भले! ही जावो।
देव खड़े हैं स्वागत को, उनकी भी साध बुझाओ॥ ५॥

बापू !

[रच०—पं. इन्द्रचन्द्रजी वेदान्तवारिधि, शास्त्राचार्य]

परम तपस्वी तेरे तप से यह उद्यान फला फूला ।
देखो यह अलिवृन्द सुरभि तव पाकर अपने को भूला ॥
तेरी शाखाओं पर बैठे करते थे खग कल्लोलें ।
छोड़ चले तुम सब को रोते शान्त बिना कुछ भी बोले ॥
तेरे पत्तों पर बैठे ही ये खद्योत चमकते थे ।
कितने पथिक तुम्हारे नीचे बैठ पथश्रम हरते थे ॥
जिन-शासन उपवन का माली तुझे देख इतराता था ।
तुझ पर रख कर सब आशाएँ फूला नहीं समाता था ॥
हे नरवीर! तुम्हारे बल पर महासमर में हम खेले ।
आगे गए बढ़ाते हमको, कष्ट सभी तुमने झेले ।
आज अचानक ही तुमने यह कैसा वज्राघात किया ।
छोड़ चले चुपके से हमको महाविरह का शाप दिया ॥
माली! इन पौधों को देखो खड़े खड़े हैं सूख रहे ।
आंखों में आसूं भर करके विधवा से हैं पूछ रहे ॥
यदि माली की चाह तुम्हें थी हमको क्यों छोडा भूपर ।
उत्थान पतन जब उन पर ही सब विधे हमारा था निर्भर॥
काच शकल भी तुझ से मिलकर बन जाते थे रत्न अरे ।
रत्नों के व्योपारी तूने जिन समाज के कोश भरे ॥
त्रिभुवन पति के भी दुर्लभ तुम हमको सुलभ बने थे ।
नहीं ज्ञात है कितनों के तुम बापू! सगे बने थे ॥
जौहर तेरे अरे जौहरी पद पद पर हैं भरे हुये ।
तेरे बलिदानों से सिञ्चित सूखे तरु हैं हरे हुए ॥
महापथिक अब चले कहां हो जगको दुखी बनाकर ।
इसकी करुण पुकारों पर फीर आओगे क्या कभी पिघलकर ॥

श्रद्धांजलि

[श्रीधर्मपाल 'काव्य-कोविद' विद्यार्थी-जैन गुरुकुल, ब्यावर]

सिधारे दुर्लभ धर्माधार!

नश्वर तन तज झूठे जग से, पहुंचे स्वर्ग मझार ।
निर्मल यश की रम्य कौमुदी, व्याप रही संसार ॥
जैन जगत के वक्षस्थल का, टूटा नौलख हार ।
दुर्लभ है अब उसका संगम, शोकानल में जार ॥
गुरुकुल गुलशन के माली ऐ! छोड़ा क्यों मझधार ।
कुम्हला गये नवल कोमल ये, पुष्प सुरम्याकार ॥
'धर्मवीर' तुम बिन कैसे हो, जैन धर्म निस्तार ।
श्रद्धाञ्जलि हम अर्पण करते, गुरुकुल प्राणाधार ॥

बापूजी कहां हो?

[रच०-विद्यार्थी, गुलाबचन्द्र जैन गुरुकुल, ब्यावर]

अहा! समय आया उत्सव का बापूजी भी आयेंगे,
हम नन्हें बच्चों के खातिर मिश्री मावा लाएंगे ।
चमक उठेगा गुरुकुल का यह 'भव्य भवन' उनको पाकर,
पुलक उठेंगे अध्यापक और छात्र वृन्द, नौकर चाकर ॥
थे इस चर्चा में निमग्न तब एक तारवाला आया,
बापूजी के स्वर्गवास का अप्रिय समाचार लाया ।
होश उड़ गये उसी समय सबके मुखपर मातम छाया,
आंखें सजल हुईं सहसा एक उमड़ दुःख सागर आया ॥
अरे भला अब कौन प्रेम से सिर पर हाथ फिरायेगा,
कौन हमें बेटा कह करके पितृ प्रेम सिखलायेगा ।
कहां छिपे हो बापूजी क्या अब न हमें दर्शन दोगे,
नहीं जानते थे हमसे इतनी जल्दी मुंह मोड़ोगे ॥

व्यक्तित्व—

××× आपके व्यक्तित्व में ऐसी विशेषता थी कि जो आपसे मिलता उसके हृदय पर आपके मधुर स्वभाव का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता था। आपका परिचय पाकर आपसे प्रेम न हो जाना असंभव था। आप प्रेमी, दयावान, सुशील तथा उच्च भावनाओं से ओतप्रोत सेवाभावी नागरिक थे। समाज-सेवा का भाव आपकी रग-रग में व्याप्त था। सदा आपको यही चिन्ता रहा करती थी कि स्थानकवासी समाज की उन्नति किस प्रकार की जा सके! मरण पर्यन्त यही भावना हृदय में रही। निस्संदेह ब्यावर गुरुकुल को जो धक्का पहुँचा है वह अकथनीय है! निकट भविष्य में आपकी क्षति की पूर्त्ति होना कठिन है।

श्री जसवंतमलजी कुंभट, मद्रास

['स्व. दुर्लभजी भाई जौहरी' नामक लेखसे—

स्वभाव—

×××× स्वर्गीय दुर्लभजी भाई ऐसी प्रकृति के मनुष्य थे कि वे गरमदल में भी मिल जाते थे और नरमदल में भी। समय पर दोनों का समन्वय करके कार्य भी बना लेते थे। ऐसा उन्होंने कई बार किया था। उनकी प्रकृति घृत और पानी जैसी थी। ये पदार्थ जिस जिस में मिलते हैं उनको संस्कृत करके ग्राह्य पदार्थ बना देते हैं इसी प्रकार आप भी कार्य साधते थे।

—श्री बालचन्द्र जी श्री श्रीमाल

['वज्राघात' से—

अति दुर्लभ दुर्लभजी!—

××× जो व्यक्ति दुर्लभ होते हुए भी हमारे लिए 'सुलभ'—अति सुलभ था, वह एकदम सर्वथा 'दुर्लभ—अति दुर्लभ' होगया!

×××× साधु—सम्मेलन का उस समय हो सकना प्रायः असंभव—सा माना जाता था। समाज के अनेक नेताओं को विश्वास तक न था कि साधु सम्मेलन हो सकेगा किन्तु धन्य है, धर्मवीर दुर्लभजी भाईको, जिनके शब्द-कोष में 'असंभव कठिन—दुर्लभ' शब्द ही न था। मानो वे कहते हों कि 'जिन कार्यों को तुम कठिन और दुर्लभ कहते हो, वे ऐसे नहीं; क्योंकि मैं जिसका नाम ही दुर्लभ है तुम्हारे लिए सुलभ हूं, पर इन कार्यों का नाम भी दुर्लभ नहीं हैं तब तो वे अवश्य ही परिश्रम के द्वारा सुलभ—सफल होंगे।'

××× उनके गुणों का और कार्यों का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। हम तो कवि सूर्यचन्द्रजी के शब्दों में निम्न श्रद्धांजलि ही अर्पित कर सकते हैं।—

'अति दुर्लभ दुर्लभजी के गुण को गावेंगे।
किया परिश्रम अति, उसको थोडा सा समझावेंगे॥'

—श्री केसरीमल जी जैन, शाजापुर.

गृहस्थ संन्यासी—

××× जिसके हृदय में समाज हित की एक मात्र धून हो और इसके सिवाय अन्य सभी कार्य उसके लिए भारभूत मालूम पड़े वही समाज का उद्धारक संन्यासी हैं। क्या दुर्लभजी भाई समाज के सच्चे गृहस्थ संन्यासी से कुछ कम थे?

××× दुर्लभ वास्तव में अब समाज के लिए दुर्लभ होगया। सच्ची लगन का दुलारा संत अनंत में विलीन होगया। लेकिन उनके साथियों को पुराने संस्मरण बार बार ओठों पर लिये आते हैं। मैं स्वयं जब संमेलन के दिन निकट आगये थे करीब तीन माह तक साधु महात्माओं की अगवानी करने में उनके साथ रहा। तब उनके निकट परिचय में आने का सुयोग प्राप्त हुआ।

××× हर एक कार्य के प्रारंभ में यहाँतक कि रेल या तांगे पर चढ़ते और उतरते समय भी '"ॐ अर्हम्' आदि नमस्कार मय शब्द बोले बिगर नहीं रहते थे। नवकार के प्रति उन को इतनी श्रद्धा थी कि वे कई बार बात करते करते भी मुंह पर पल्ला लगा ही लेते थे। मैं उनकी एक एक प्रकृति का दृश्य क्या दिखाऊँ! पूज्य श्री जवाहीर लालजी, पू० मन्नालालजी, पू० अमोलख-ऋषिजी म. आदि के समीप बैठ कर दो दो घंटा उनका वार्त्तालाप करने का मैं वर्णन नहीं कर सकता। मैं मिश्रीलालजी म. के शब्द और इनके उत्तरों को आज भी नहीं भूल सकता।

वही एक नरवीर था जिसने साधुसम्मेलन जैसे महाभारत कार्य को दो दो बार अचेत होते हुए और शरीर से अस्वस्थ रहते हुए भी सफल कर दिखाया। समाज का एक मात्र पुराना नाडीवैद्य यही था। संत मात्र की नाड़ी का अनुभव इसी को था। देव-दुर्लभ दुर्लभ-कार्य को सुलभ करने वाले ऐसे दीर्घ-समाज-सेवी के लिए समाज जितना भी करे कम ही है।

श्री 'उदय' जैन, सनवाद

['संस्मरण' से—

सेवामूर्ति

एना हैयामां समाजसेवानो महासागर घूघवतो हतो. एना दीलमां जैनोनी प्रगति अने संस्कारितानां वहेण वहेता हता.

स्था. जैन कोन्फरन्समां मशीनो कटाई गयां हतां. एनी जामगरी हवाई गई हती. रोजबरोजनी घरेडजूनी वातोमां सहु अटवाया हता. आ समये ए नरशार्दुले समाजना पुनरुत्थाननुं बीडुं झडप्युं—जे करवा कोईए हाम नहि भीडेली ते पार उतारवा तेणे प्रतिज्ञा लीधी. पोताना अखूट आत्मबळमां एने श्रद्धा हती, प्रेमनी प्रभुता पर तेने विश्वास हतो, सेवासरिताना गहरा गूंजननो ध्वनि ए पारखी शक्यो हतो. **श्री चुनीलाल क. कामदार**

सम्मेलन-सिद्धि

[शतावधानी मुनिश्री रत्नचन्द्रजी म०ना 'अन्तर्नाद' नामना लेखमांथी]

लेखक—संमेलननी पाछळ आटली बधी तनतोड महेनत करी, साधुओने विहारनो परिश्रम आपी, समाजने लाखो रुपियानो खर्च कराव्यो तो ते माटे फळ शुं मेळववानुं हतुं?

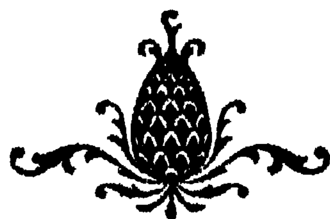
देव—वाह फळ शुं मेळववानुं हतुं? फळ तो उत्कृष्ट हतुं. प्रथम तो आपणामां संप्रदायो जुदा जुदा अनेक थई गया छे. जेनी संख्या ३२ सुधी पहोंची थई छे. ते बधाय समान आचार-विचारवाळा बनी एकरूप थई जाय ए मुख्य उद्देश सम्मेलननो हतो ते उद्देश पूर्ण न थाय त्यां सुधी एक एक संप्रदायमां परस्पर क्लेश चालतो होय तेने दूर करवानो हतो. जे संप्रदायमां अव्यवस्था होय, परिस्थिति छिन्नभिन्न होय तेमां व्यवस्था करवानी हती. तेमां केटलेक अंशे अमे सफळता मेळवी शक्या छीए. ऋषि संप्रदायमां ८० वरसथी संगठन न हतुं ते संमेलनना प्रतापे अगाऊथी थई गयुं. मारवाडी छ संप्रदायो अलग अलग हता तेओ पण संमेलन अगाऊ संमिलित थई गया. पंजाब संप्रदायमां पत्री परंपरानो तीव्र क्लेश चालतो हतो ते संमेलन मेळववानी शरते ज दूर थई गयो. पूज्य श्री धर्मदासजी महाराजना संप्रदायमां बे विभाग हता ते एकरूप थई गया, पूज्य श्री हुकमीचंदजी महाराजनी संप्रदायमां बे पूज्य थई जतां परस्पर क्लेश फेलाई रह्यो हतो तेने एकत्र करी क्लेश दूर करवामां आव्यो. जे

साधुओ एकबीजा साथे मळता न हता तेओ पण अजमेर मोमाइयाना न्होरामां वट वृक्षनी नीचे मंडलाकार व्यवस्थित रीते बेसीने भावी उदयनो विचार करता हता. ए प्रसंग शुं केशी-गौतमना समागमथी ओछा आनन्दनो विषय हतो?

लेखक—ए वात तो बराबर छे. सम्मेलननो उद्देश ऊंचामां ऊंचो हतो पण ते अमलमां आवे त्यारेने? जे जे संप्रदायोनुं संगठन थयुं हतुं ते धीरे धीरे तूटवा मांड्युं. सम्मेलनना प्रस्तावो पण धीमे धीमे तूटवा लाग्या. पाळे तो पाळे, न पाळे तो भले, कोई कहेवावाळुं तो रह्युं नहि. साधुओए तो प्रस्तावो पास करी कोन्फरन्सने सोंप्या. कोन्फरन्सनी फरज प्रस्तावो पळाववानी हती. एना माटे तो दरेक संप्रदायना दरेक साधुना मनमां प्रथम सम्मेलन अने कोन्फरन्स प्रत्ये सद्भाव, प्रेमनी लागणी उत्पन्न थवी जोईए. एवी लागणी त्यारे उत्पन्न थाय के ज्यारे बन्ने संस्थाओमां समानभाव, निष्पक्षपातता अने न्याय-वृत्तिनी साथे योग्यतानुसार सर्व प्रत्ये सदादर होय. सम्मेलननी तो हजु बाल्या-वस्था हती पण कोन्फरन्से पांच वर्ष पर्यन्त सम्मेलन बाळकने उछेरवानी अने संगीन बनाववानी तजवीज करी होत तो आजे सम्मेलनना एके एक प्रस्ताव अमलमां आवी गया होत अने सम्मेलननुं संगठन मजबूत बनी गयुं होत.

देव—महाराज! आप संमेलननी बाल्यावस्था मानी कोन्फरन्स उपर बधो भार मूको छो ते ठीक नथी. संमेलननी भले बाल्यावस्था होय पण संमेलनना संचालकोनी तो बाल्यावस्था न हती. तेओ गृहस्थो नहि पण त्यागी महात्मा संत महंतो हता, तरणतारण सफरी जहाजनी डीग्री मेळवेल हता. तेमना बांधेल प्रस्ताव पळाववाने पोलीसनी शुं जरूर होय? तेओनी जीभान शीला-लेख छे. तेओनुं वचन ब्रह्मानो अक्षर छे

दल फरे वादळ फरे, फरे उदधिनां पूर;
उत्तम बोल्या नवि फरे, भले पच्छम उगे सूर.



આત્માર્થી મુનિશ્રી મોહનઋષિજી મહારાજ

જૈન સમાજમાં જાગૃતિ લાવનાર સ્વ૦ વા૦ મો૦ શાહ પછી શ્રીદુર્લભજી-ભાઈ ઝવેરી જ હતા. શ્રી. ઝવેરીજીની જાગૃતિ ચંદ્રમા જેવી શીતલ હોઈને સમાજને સવિશેષરૂપે લોકપ્રિય બનવા પામ્યા હતા અને તે તેમનામાં ખાસ વિશેષતા હતી.

સમાજમાં હજારો ઝવેરીઓ હોવા છતાં ઝવેરી તરીકે શ્રી ઝવેરીજી જ વિખ્યાત હતા.

તેઓશ્રી એક હોવા છતાં પોતામાં સેંકડોનું આત્મબળ ધરાવી પવિત્ર કાર્યો માટે સદા તત્પર રહ્યા હતા. તેઓશ્રી પહેલી માંદગીના બીછાનેથી ઉઠ્યા બાદ જ્યારે નાગપુર દર્શનાર્થે આવ્યા હતા ત્યારે નીચેની દશ યોજનાઓ વિચારતા આવ્યા હતા—

(૧) આદિનાથ—આશ્રમ, (૨) મહાવીર મીશન, (૩) શ્રીવીરસંઘ, (૪) સિદ્ધાન્તશાળા, (૫) આગમોદ્ધાર, (૬) દ્વિતીય સાધુસંમેલન, (૭) લોંકાશાહનું સમૃદ્ધજીવન ચરિત્ર, (૮) ગુરુકુળનું સ્થાયિત્વ, (૯) કુલપતિ—કુટીર, (૧૦) સન્યાસ. આ દશ દુર્લભ ભાવનાઓ દુર્લભ જ રહી.

સામાજિક સેવાક્ષેત્રોની તેમની ભાવના જોતાં ૧૦ વર્ષ પહેલાં તેમણે વિદાય લીધી છે તે શાંતિનો વિષય નથી.

આટલી બધી લોકપ્રિયતા અન્ય કોઈ સમાજ—સરદારે યા સેવકે પ્રાપ્ત કરી હોય એમ જાણવામાં નથી.

જૈનભિક્ષુ જેઠમલજી મહારાજ

દુર્લભજીભાઈના અસામયિક દેહવિલયની નોંધ લેતાં કલમ કંપે છે અને હૃદય ધડકે છે. તેઓશ્રી સ્થા૦ સમાજના પ્રાણ અને લ્યુથર હતા. વીરનિર્વાણ પછી ૧૫૩૧ લોંકાશાહ થયા. તે પછી દુર્લભજીભાઈ થયા.

તેમણે મૃતઃપ્રાય શાસનમાં નવું જોમ આણ્યું. જિનશાસનની શોભામ શ્રીવૃદ્ધિ કરી.

શ્રી ચૈતન્ય, અછનેરા

તેમણે પરિવારની સેવા તો પૂરી કરી લીધી હતી અને સમાજસેવાયજ્ઞ

શરૂ કર્યો હતો, તે શરીરની અશક્તિને લીધે અધૂરો રહ્યો એ જ દુઃખદ છે. સ્થા૦ જૈન સમાજે એક સ્તંભ ગુમાવ્યો છે.

શ્રી મુલજી ચત્રભુજ, રાજકોટ

સ્વર્ગીયનો આત્મા સરળ તથા કુટુંબભાવના, દેશભાવના અને ધર્મ-ભાવનાથી તરબોળ હતો.

નગરશેઠ વિકમચંદ અમૃતલાલ, મોરબી

નિખાલસ દિલવાળા તથા બીજાનું દુઃખદર્દ જોઈ જેમનું હૃદય દ્રવી ઉઠે એવા નરરત્નની સમાજમાં ખોટ પડી છે.

શ્રી હેમચંદ રામજીભાઈ મહેતા, ભાવનગર પ્રમુખ શ્રી૦શ્વે૦સ્થા૦જૈન કોન્ફરન્સ

[શ્રી અમૃતલાલ ઝવેરીને લખેલ પત્રમાંથી]

એમણે આખી જીંદગી પર્યંત સરળભાવે અને ખરા અંતઃકરણથી સમાજની મૂંગી સેવા કર્યા કરી. અને એને અંગે એટલું બધું કામ કરતા કે જેને લઈને એમની તબીયત લથડી ગઈ અને છેવટે એમણે દેહ છોડ્યો. તેઓ પોતે તો તરી ગયા પણ આપણા સમાજમાં તેમની ખોટ કદી પણ પુરાય એવી નથી. એમણે સમાજની સતત એકનિષ્ઠાથી જે સેવા કરી છે તે સેવા આપણે બધાની પાસેથી હવે વધુ બળિદાન માંગે છે. અને એમનું નામ આપણા આખાયે સમાજમાં હમેશાં જળવાઈ રહે એવું કાંઈ મોટું કામ આપણે તેમના યાદગાર સ્મારક તરીકે હાલની અને ભવિષ્યની પ્રજાને ઉપયોગી થઈ પડે એવું કરીએ ત્યારે જ આપણે એમની સેવાની કિંમત બરાબર આંકી છે એમ ગણાશે.

શ્રી ચિમનલાલ ચકુભાઈ, શાહ જે. પી., M. A., L, L. B., Soliciter, **મુંબઈ**

સેક્રેટરી શ્રી૦ સ્થા૦ જૈન કોન્ફરન્સ.

સમાજે એક મહાન્ સેવક ગુમાવ્યો છે. તેમની સેવાઓ અમૂલ્ય હતી. તેમની ધર્મપ્રીતિ અસાધારણ હતી.

શ્રી વીરચંદ મેઘજીભાઈ થોભણ મુંબઈ

શ્રીયુત દુર્લભજીભાઈ જેવા સેવાભાવી, પ્રેમી અને સાદા માણસ સમાજમાં થોડા જ મળશે.

શ્રી મંગળદાસ જેસંગભાઈ, અમદાવાદ

તેમનું ધાર્મિક–જીવન મને જોવા મળેલું. અડગ શ્રદ્ધા અને નિયમિતતા

તેમના રૂવેરૂવે પ્રગટેલ હતાં. છેલ્લું તેમનું ત્યાગમય જીવન તો કોઈ અજબ જેવું હતું.

શ્રી ચુનીલાલ નાગજી વોરા, રાજકોટ

શ્રી. દુર્લભજીભાઈએ તીર્થંકર ગોત્ર બંધાય તેવા એક નહિ પણ અનેકવિધ કાર્યો કરી સમાજની નિઃસ્વાર્થભાવે સેવા કરી છે. તેમની સેવાની તુલના તો થઈ શકે તેમ નથી.

શ્રી ગિરધરલાલ દફતરી, સેક્રેટરી મુંબઈ શ્રી સકળ-સંઘ, **મુંબઈ**

સમાજે એક ખરો હીરો ગુમાવ્યો. નકલી હીરા ઘણા છે પણ મારા મત પ્રમાણે ખરો ધગશવાળો અને જેમના લોહીમાં સેવા સિવાય કાંઈ દેખાતું ન હતું તેવા વીરનર શ્રી દુર્લભજી ભાઈ તો ખરેખર થઈ ગયા.

ગુરુકુળનો પિતા ગયો. મોરબીનું નાક ગયું. જયપુરનો ઝવેરી ગયો અને સ્થા૦ સંસ્થાનો સાચો સેવક ગયો.

શ્રી ટી. જી. શાહ, સેક્રેટરી શ્રી સ્થા૦ જૈન કોન્ફરન્સ, **મુંબઈ**

જેમને હું લોંકાશાહ કહીને હમેશાં સંબોધતો એવા મારા પ્રાણપ્રિય મુરબ્બીશ્રી શ્રી દુર્લભજીભાઈના અવસાનના દુઃખદ સમાચાર મળતાં જ મારા હૃદયને જે આંચકો લાગ્યો તેનું વર્ણન કરી શકાય તેમ નથી.

સમાજનો ખરેખરો કાર્યકર

[લે૦ શ્રી સુશીલ]

શ્રી દુર્લભજીભાઈએ મુખ્યત્વે જૈન સમાજને પોતાનું કાર્યક્ષેત્ર બનાવ્યું હતું. સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના એ એક અગ્રણી હતા. સાહિત્ય અને સંસ્કાર વિષેની એમની ભક્તિએ જૈનસમાજના ત્રણે ભાગોમાં એમને માટે સારું સ્થાન મેળવી આપ્યું હતું.

ઘણા વર્ષ ઉપરનો એક પ્રસંગ હજી મને સાંભરે છે. કાશીની યશોવિજયજી પાઠશાળામાં અતિથિ તરીકે તેઓ આવેલા. મૂર્તિપૂજક અને સ્થાનકવાસી જૈનો વચ્ચેનો સાંપ્રદાયિક કલહ એ દિવસોમાં એની છેલ્લી સીમાએ પહોંચ્યો હતો. મૂર્તિપૂજક જૈનોની સંસ્થામાં એક સ્થાનકવાસી આગેવાનનો આદરસત્કાર અસંભવિત ગણાતો.

છતાં દુર્લભજીભાઈ એમની સાદાઈ અને ઔદાર્યને લીધે અમારા સ્વજન બની રહ્યા. મહાવીરજયંતીની એક સભામાં એમણે મારા એક સામાન્ય ભાષણથી પ્રસન્ન થઈ એક ચંદ્રક ભેટ આપેલો. ચંદ્રક કે ભાષણ કરતાં પણ એક સ્થાનકવાસી ગૃહસ્થ, શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક સંપ્રદાયની કેળવણીની સંસ્થામાં એ જ સંસ્થાના એક વિદ્યાર્થીની આવી કદર કરે એ અમારે મન ઘણી મોટી વાત હતી.

છેલ્લાં દશ-બાર વર્ષ થયાં એમણે ધંધા-રોજગારમાંથી નિવૃત્ત થઈ સાહિત્ય અને સમાજની અનેકવિધ નાની મોટી સેવાઓ કરી છે. એ નિરાડંબરી હતા એટલે વર્તમાનપત્રો કે વ્યાખ્યાનમંચ ઉપર ભાગ્યે જ દેખાતા.

સ્થા૦ જૈન સમાજે તો શ્રી દુર્લભજીભાઈના દુઃખદ અવસાનથી એક ખરેખરો કાર્યકર ગુમાવ્યો છે. [– 'કુલછાબ' માંથી

ડી. ટી. એટલે શું ?

શ્રી અમૃતલાલ ટી. મહેતા B. A. L. L. B. **રાજકોટ**

ધરમપુર, લીંબડી વગેરેના ભૂતપૂર્વ દીવાન.

– નિરભિમાની, સાદા, સરળ સ્વભાવના સંસ્કારી સાક્ષર, અસાધારણ ખંત અને ઉત્સાહથી અજાણ્યા ક્ષેત્રમાં આબરૂ અને સંપત્તિ પ્રાપ્ત કરનાર પુરુષ.

– જૈન સમાજ અને ધર્મની ઉન્નતિ અર્થે કૉન્ફરન્સ અને બીજી અનેકવિધ પ્રવૃત્તિઓના ઉત્પાદક અને પોષક.

– પૂજ્યશ્રી લાલજી જેવા પ્રૌઢ અને જવાહિરલાલજી જેવા પ્રતાપી પુરુષોના ઉપદેશનો લાભ કાઠિયાવાડને અપાવનાર વ્યક્તિ.

– મોરબી, મેવાડ, મારવાડ અને અન્ય સ્થળોના જૈનોને એકબીજાના ગાઢ પરિચયમાં લાવનાર મહારથી.

– કુટુંબવત્સલ, સમાજવત્સલ, દેશવત્સલ – જૈન સમાજના અનન્ય ભક્ત, જૈન શાસનના સતત અભ્યાસી.

શ્રી સૌભાગ્યચંદ વીરચંદ ઝવેરી, રાજકોટ

સાધુઓ અને સંસારી જનો–બન્ને વર્ગને આ પુરુષ સમાનરીતે સન્માર્ગ-દર્શક હતા અને શુદ્ધ નિખાલસ અને સરલ જીવન ગાળતાં ગાળતાં સર્વને-ઉપકારક હતા.

સહુના તે પ્રિય પુરુષ હતા, મનોહારી હતા અને એમનો સહવાસ હમેશાં રહે એવું સર્વને મન થાય એવું એમનું પવિત્ર જીવન હતું.

ટૂંકમાં દુર્લભજીભાઈ 'મોણસી અમુલખ'ની જીવતી કીર્તિ જેવા, આપારમંડળના પ્રામાણિક સત્ય અને વિશુદ્ધ જીવનની વિભૂતિ જેવા હતા.

શ્રી જેઠાલાલ રામજી, મુંબઈ

તેમના અંતઃકરણમાં પણ ધર્મની ઊંડી દાઝ હતી. પૂજ્ય મુનિરાજો પ્રત્યે પણ ખૂબ જ ભક્તિભાવ હતો, એટલું જ નહિ પણ બ્યાવર ગુરુકુળ માટે તેમને ખૂબ જ લાગણી હતી. આવા સમાજસેવકને ગુમાવવા માટે અત્યંત દિલગીર છું.

શ્રી તલસાણીયા આર્ટિસ્ટ, વઢવાણ કેમ્પ

અખિલ હિન્દના સ્થાનકવાસી–સમાજનો નાવિક ગયો અને મારો તો માડીજાયો બંધુ ગયો. ×× દુઃખીજનોનો આધાર ગયો અને ગુપ્ત દાનનો અજોડ દાતા ગયો.

શ્રી શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી, પ્રમુખ શ્વે૦ સ્થા૦ જૈન ગુરુકુળ પાઠશાળા, **રાજકોટ**

સ્વ૦ દુર્લભજીભાઈએ સ્થા૦ જૈન સમાજના ઉત્થાન અર્થે આજીવન અને અવિશ્રાંત પરિશ્રમ સેવ્યો હતો. સમાજની દરેક પ્રવૃત્તિમાં એમણે અહોરાત્રિ તીવ્ર ભાવનાભર્યો પ્રયત્ન ભરી રાખ્યો હતો. તેના શુભ પરિણામો અત્યારે સ્થા૦ જૈન સમાજમાં પ્રત્યક્ષ દેખાય છે.

સંસારમાં એમણે પરમ પ્રતિષ્ઠા અને સર્વ જીવોનો પ્રેમ સંપાદન કર્યો હતો તેમજ સાધુ સમુદાયના પણ પરમ વિશ્વસનીય અને સલાહકાર બની ગયા હતા એટલે એ રીતે આપણા ચતુર્વિધ સંઘને શ્રીયુત દુર્લભજીભાઈના અવસાનથી ભારે ખોટ પડી છે.'

આ સંસ્થાની સ્થાપના અને સંચાલનના કાર્યમાં એમણે પરમ ઉત્કંઠાપૂર્વક

પરિશ્રમ ઉઠાવ્યો હતો તેથી આ સંસ્થા સદ્દગતના ઋણમાં હમેશને માટે ઋણી છે. એમનું કીર્તિવંત નામ આ સંસ્થા પ્રેમપૂર્વક યાદ કરશે.

શુદ્ધ સ્ફટિકસમું નિખાલસ જીવન, હસતી મધુર મુખાકૃતિ, નિષ્પક્ષ ન્યાયબુદ્ધિ અને સર્વે પ્રાણીઓ પ્રત્યે ઉપકારક સ્વભાવ, જીવનના આદિથી અંતસુધી એમનું અનુકરણીય જીવન કોઈ મહાન્, પુણ્યવાન આત્માને જ પ્રાપ્ત થાય છે.

રાવસાહેબ છોટાલાલ એમ. કોઠારી, રાજકોટ

દુર્લભજીભાઈએ આ જગતમાં જે સુવાસ ફેલાવી હતી તેથી સૌને તેમના સ્વર્ગવાસથી આઘાત થાય તે સ્વાભાવિક છે.

શ્રી પોપટલાલ લ. ચુડગર, બેરીસ્ટર, રાજકોટ

દુર્લભજીભાઈના અવસાનથી આખા કાઠિયાવાડમાં ભારે ગમગીની છવાઈ ગઈ છે. તેમની સજ્જનતા, પ્રેમાળ સ્વભાવ અને સાદું–સરળ ધાર્મિક–જીવન આપણા માટે આદર્શરૂપ હતાં.

શ્રી રાવસાહેબ મણીલાલ વનમાલી શાહ, F. I. A. A. A. I. I. A.
રાજકોટ

તેઓશ્રીએ સમાજની એવી સેવા બજાવી છે કે તેમની ખોટ સમાજ તથા ધર્મને હરઘડીએ જણાશે. ××× મારા જેવા અનેકના હૃદયો રડે છે. તેઓશ્રી તો સેવા બજાવી પોતાનો મનુષ્યભવ સાર્થક કરી સ્વર્ગે સિધાવ્યા. તથા આપણને સૌને તેમના પગે ચાલવાનો બોધપાઠ આપતા ગયા.

શ્રી કન્હૈયાલાલ દુર્લભરામ ભણશાળી, મુંબઈ

એમનો દેહ આ જગતમાંથી સદાને માટે ચાલ્યો ગયો પરંતુ એમની સેવાનાં જ્વલંત કાર્યો સદા જીવન્ત રહેશે, અને એ સમાજના સેવાભિક્ષુઓને ચિરકાળ સુધી 'પ્રેરણા' અર્પ્યા કરશે.

શ્રી ચન્દ્રશંકર દ. ત્રિવેદી, મહેસાણા

અવસ્થાને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિ સેવતા મનુષ્યો બહુ જ ઓછા નજરે ચડે છે, તેઓમાં એક શ્રી દુર્લભજીભાઈ હતા. જીવનની અનેક પ્રવૃત્તિઓથી અળગા થઈ વાનપ્રસ્થ્ય જીવન સુંદર સાચવ્યું. તેઓશ્રી એક ત્યાગી અને ભાવનાશીલ વ્યક્તિ હતા.

પંડિત બેચરદાસ જીવરાજ દોશી, અમદાવાદ

તેઓ ગયા નથી પરંતુ તેમના સુકાર્યોથી જીવન્ત જ છે. તેમનું યશઃશરીર સદાને માટે ટકી રહેશે.

શ્રી ડાહ્યાલાલ મકનજી ઝવેરી, મોરબી

પરદેશમાં વસવાટ કરવા છતાં જન્મભૂમિને કદિ તેમણે વિસારી ન હતી. અને સૌરાષ્ટ્રનું ગૌરવ હમેશાં તેમના દરેક વર્તનમાં અને વાણીમાં ઝળકતું હતું. એમના જવાથી કાઠિયાવાડને અને ખાસ કરીને મોરબીને મોટી ખોટ પડી છે.

ડૉ. એસ. એલ. દવે, L. A. M. મોરબી

દુર્લભજીભાઈની ભલમનસાઈના નામે તો વૃક્ષો પણ રોશે. પછી મનુષ્યો કાં ન દ્રવે? મરનારનું ભલું જ બોલવું એ એક સામાન્ય પ્રથા છે; પરંતુ દુર્લભજીભાઈના સંબંધમાં તેમ કરવું એ એક ફરજ થઈ પડે છે.

✱ ✱ ✱

He was a self-made man. વડિલોની મીઠી છાયા નીચે એક જડાવ દાગીનાના સામાન્ય વેપારી-સોની મિત્રોની સહાયતાથી કાંઈક ઝવેરાતના ધંધામાં માત્ર પ્રવેશ કરનાર, રાજપુતાનાના નાના મોટા રજવાડામાં કુનેહથી, મીઠી ભાષાથી પ્રતિષ્ઠા જમાવી. સંસારની કૌટુંબિક ધંધાદારી અનેક માયા-પ્રપંચની મુશ્કેલીઓ અજબ શાન્તિથી તરી જઈને અનેક પ્રકારની સ્પર્ધા સામે ધીમે ધીમે પ્રતિષ્ઠા જમાવી-પ્રામાણિક વેપારી, ઝવેરાતના એક આગેવાન વેપારી, Public Spirited નાગરિક, પરોપકારી શહેરી તરીકે સર્વોપયોગી પ્રવૃત્તિઓ આદરવા છતાં પોતે જ મનુષ્ય-જન્મને પામ્યા છે અને તેમાં દેવ ન બનાય તો ફીકર નહિ પરંતુ મનુષ્યની તો લાયકાત સાબીત કરવી જોઈએ તે પ્રમાણે ધર્મમાં ધીર રહી શક્યા. તેમણે કદાપિ પોતાના જીવનનું ઉન્નત લક્ષ્ય ચૂક્યું નહિ. આ જ તેમની જીવન-સફળતાનો સાર છે.

✱ ✱ ✱

શ્રી તલકશી માણેકચંદ દોશી મેનેજર, ધી રાજકોટ સ્ટેટ કોટન મીલ્સ, **રાજકોટ**

આખા કાઠિયાવાડને તેમના જેવા સુશીલ, ધર્મનિષ્ઠ અને પરાક્રમી પુરુષની ખોટ લાંબો વખત જણાશે.

શ્રી મનસુખલાલ તારાચંદ, મોરબી

તેમનું આદર્શ સેવાભાવી જીવન, તેમની જ્વલંત કારકીર્દી, ધાર્મિકવૃત્તિ સ્વભાવજન્ય સરળતા વગેરે ગુણો હમેશાંને માટે અમર રહેશે. તેમનું જીવન ખરેખર અનુકરણીય હતું.

રાવબહાદુર મોહનલાલ પોપટભાઈ, રતલામ

દુર્લભજીભાઈએ તો મનુષ્યભવનો પૂરો લ્હાવો ધર્મસેવા કરીને લીધો છે અને જીંદગી સફળ કરી છે.

શ્રી કચરાભાઈ બહેરભાઈ, અમદાવાદ

અમને એક સ્નેહી અને સાચા સલાહકારની ભારે ખોટ પડી છે.

* * *

સમસ્ત ભારતની સ્થાનકવાસી કોમને તો એક અગ્રણી, ધર્મવીર, સાધુ-સંતોના સેવક તથા કૉન્ફરન્સના સ્થંભ તરીકે ભારે ખોટ પડી છે કે જે કદાપિ પૂરી શકાશે નહિ.

* * *

સ્થાનકવાસી સમાજ કયા પ્રકારે આગળ વધે, શું કરીએ તો જૈનધર્મનો ડંકો ચારે બાજુ વાગે અને ઐક્ય વધે વગેરે તેમની ભાવનાઓ ઘણી જ ઊંચી અને અલૌકિક હતી.

વિદ્યાર્થી બચુભાઈ, મોરબી

બાપુજીના જવાથી મને આવી પડેલ ખોટ એ તો મારાં સર્વસ્વના વિનાશરૂપ છે.

રત્નચિંતામણિ સ્થા૦ જૈન મિત્રમંડળ, **મુંબઈ**

આ સમાજને ખાતર તેમણે પોતાના દેહના ટૂકડા ટૂકડા થવા દીધા છે તેના ચિરસ્મરણ ખાતર આપણે સહુ પાછળથી જે કાંઈ કરીએ તે ઓછું છે.

શ્રી સ્થા૦ જૈન સંઘ, કરાંચી

શ્રી જૈન ધર્મવીર દુર્લભજી ભાઈના દુ:ખદ અવસાનથી જૈન સમાજને એક અત્યંત સજ્જન, નિખાલસ અને પરમાર્થી દાનવીર નેતાની ખોટ પડી છે. સમાજ માટે એમણે અંતિમ ક્ષણપર્યંત પ્રદર્શિત કરેલ સેવા અમૂલ્ય છે.

સુમિત્રા બહેન

જેની દુનિયામાં બીલકુલ જરૂર નથી તેને પ્રભુ ઉપાડી નથી લેતો. જેની દુનિયામાં ઘણી જ જરૂર છે તેને પ્રભુ રહેવા નથી દેતો. પ્રભુ નિષ્ઠુર છે. મને તો સાચું નથી લાગતું કે મોટા બાપુજી ગયા!

પં૦ ખુશાલદાસ જગજીવનદાસ કરગથલા, ન્યાયતીર્થ

દુઃખિયોનો દિલાસો, જૈન વિદ્યાર્થીઓનો વિસામો, અનેકોનું આશ્વાસનાસ્થા૦ સમાજનું નૂર અને સ્થા૦ જૈન મહાસભાનો (કૉન્ફરન્સ માતાનો) સમાજદીપક સુપુત્ર શ્રી. દુર્લભજીભાઈ ત્રિ. ઝવેરી માત્ર તેમના લોહીયા સંતાનોના જ પૂજ્ય પિતા કે બાપુ ન હતા, જૈન ટ્રેનિંગ કૉલેજના અમ બન્ધુઓના પણ બાપુ હતા—ધર્મપિતા હતા. તેમના વહાલસોયા અને કાળજી કરતા સુકોમળ દીલે અમારી પાસેથી તેમનામાં પિતૃત્વનો આરોપ કરાવ્યો હતો અને 'બાપુ' એવું મહામૂલું પદ મેળવી લીધું હતું.

ધર્મ અને સમાજનો ઉદ્ધાર કરવા માટે તેમના રોમેરોમમાં સતત ઝળહળી રહેલી જ્યોત કોણે નથી જોઈ? તે જ ઉદાત્ત હેતુ માટેના તેમના અવિરત આગળ વધતા પ્રયત્નોના શું આપણે સાક્ષી નથી? તેથી જ તો અજમેર અધિવેશન વખતે માતાએ અને તેના સર્વ સંતાનોએ સાથે મળીને માત્ર તેમને જ 'ધર્મવીર' એવું દુષ્પ્રાપ્ય પદ અર્પ્યું હતું!

પ્રભુ! અમને ધર્મ અને સમાજનો સાચો ઉદ્ધાર કરી તેમના આત્માને શાંતિ સમર્પવાની શક્તિ આપ એ જ અભ્યર્થના.

શ્રી ચંદુલાલ છગનલાલ શાહ, અમદાવાદ.

જેણે જન્મીને જીવી જાણ્યું છે અને પરમાર્થે જીવન ગુજાર્યું છે. તેનું જ જીવન સાર્થક છે. × × દુર્લભજીભાઈ સંસારી હોવા છતાં યોગી હતા. × × સ્થાનકવાસી ધર્મની જાહોજલાલીના તેઓશ્રી જીવંત મૂર્ત્તિ હતા. × × તેમની પ્રેરણાની જ્વલંત જ્યોત આપણામાં અખંડ રહે એજ પ્રભુપ્રાર્થના.

શ્રી મગનલાલ હરજીવદાસ ભાવનગરી, ફોટોગ્રાફર અમદાવાદ.

તેમનો માયાળુ તથા મળતાવડો સ્વભાવ તથા ઉન્નત ધર્મપ્રેમ અમોએ જે અજમેર કોન્ફરન્સમાં જોએલ તે સ્વપ્નમાં પણ ભૂલી શકાય એમ નથી.

श्रीयुत अचलसिंहजी, आग्रा.

उनका वियोग स्था. जैन समाज की भारी क्षति है और उसकी पूर्ति होना दुर्लभ है। उन्होंने जो सेवाएँ की है वह जैन इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखी जाएगी।

बी. शंभुमल गंगाराम की तरफ से सेठ छगनमल जी मूथा, बेंगलोर.

जैन समाज-गगन मंडल के एक दिव्य सितारे मरूभूमिस्थित श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के निस्वार्थी महारथी, पू. श्री जवाहिरलाल जी म. सा. के दाहिने हाथ और मेरे परम प्रिय स्नेही और पूज्य थे।

श्रीवर्धमानजी सा० पित्तलया, रतलाम

उनका स्थूल शरीर गया है पर यशरूपी आत्मा तो हमेशां अमर है।

पं० श्री केसरीमलजी जैन विशारद, शाजापुर

बापुजीका जीवन समाज के लिये सूर्यप्रकाश था, जो समाजके समस्त अंगो पर फैला हुआ होकर जीवन प्रदान करता रहा था।

उनका आदर्श जीवन और समाजसेवा की कीर्त्तिका प्रकाश–स्तम्भ सदा के लिये मार्गदर्शक बना रहेगा।

पं० श्री प्रेमचंदजी लोढा, न्यायतीर्थ, विशारद, इन्दौर

पूज्य बापूजी जैन–संसार के अनन्य 'सेवक', साधु–संस्थाके 'अम्मापिया' और ट्रेनिङ्ग कालेजके छात्रोंके 'प्राण' थे।

पूर्वकालमें श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के प्रयत्नसे साधु–सम्मेलनकी योजना हुई थी जिनका आजतक जैन–संसार श्रद्धा के साथ नतमस्तक रहा है और रहेगा। वैसे ही अजमेरके बृहत् साधु–सम्मेलनके प्रयोजक पूज्य बापूजीकी अक्षय कीर्ति–पताका इस भूतल पर 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' फहराती रहेगी।

पं० जोधराजजी सुराणा, मद्रास

पू० बापूजीका संस्मरण होते दृष्टि समक्ष एक सौम्यमूर्ति खडी हो जाती है।

विद्यार्थी लक्ष्मीलाल चौधरी B. Com. कानपूर

समाज के लिये की गई उनकी सेवाएँ अमर रहेंगी। श्री जैन गुरुकुल ब्यावरमें बिताए दिनों की याद आते ही बापूजीके निधन के दुःखद समाचारोंसे हृदयको चोटसी लगती है। वही बापूजी जिनकी छत्रछायामें हम ९ साल पले तथा गुरुकुलको अबतक संरक्षण मिला आज हमारे सामने नहीं है, पर निस्संदेह उनकी कीर्ति तो अमर ही है।

Private Secretary H. H. The Maharaja Udaipur (Mewar).

"I am directed to convey to you His Highness sympathy in your sad bereavement".

Syt. Mohansinghji Mehta, Diwan Banswara (Raj.).

"I had the honour of personal intimacy with Durlabhjibhai & know how sincere, generous and good hearted a gentleman he was. His passing away is a loss of many good causes of public usefullness."

Syt. Lala Bisanlalji, Diwan Jammn (Punjab).

"He was my personal friend. His death has been the source of an irreparable loss to the Jain Community at large."

Syt. L. K. Mehta, Diwan Vadia (Kathiawar).

"His loss to us all is simply irreparable and it is impossible to forget him soon or to remember him except with peculiar pain."

Harjas Rai Jain, B. A., Amritsar (Punjab).

"××××He had a passion indeed where the question of Vidya was concerned. At Jaipur I learnt from my friend with whom I was staying & who was managing the Harijan Sevak Sangh that in the matter of helping deserving students & literary persons who were genuine scholars his sympathies were catholic & widespread. It gladdened my heart like anything to find a gentleman who in the matter of religious belief differed from him, paying that much tribute to him. His help was silent & unostentatious. To the All India Conference he was bedrock. His departure is indeed a loss for us all, and especially for those who were looking forward to his help & guidance in the task of producing eminent Jain scholars to bring Jainism & Jains into their own."

Dr. Vallabhdas N. Mehta, L. M. & S. Morvi (Kathiawar).

"His spotless & polished character, his selfless service for the cultural advancement of Sthanak Sangh his whole hearted support & services to the Beawar Gurukul & other educational institutions of your comminity & his kind, generous & obliging nature, leaves behind him, the sweet fragrance of moral lesson to us all, his friends, admirers & relatives."

Syt. Noratan Malji, B. A. LL. B., Retired Judge,
Chief Court, Jodhpur.

"The deceesed rendered devoted devices to the cause of Jainism & to an asset to the Jain Sthanakwasi community.

Chunilal B. Mehta, Bombay.

"He has rendered an unique service for the cause of Jainism & his loss will be a big gap in the Jain community."

Pt. Girdharlal B. Shah, Nyayateerth, Bombay.

'He served our Religion and community at his best. He was a natural J. P., though he was not titled. He was an auther of our conference and remarkable Sadhu-Sammellan. He was the father of the Jain Training college and what not ?

Syt. Kundanmalji Firodia, B. A. LL. B. Advocate
M. L. A., Ahmednagar.

"For you it is a personal loss no doubt but the whole community shares it with you."

Rajyabhushan Rai Bahadur, K. N. Bhandari, Indore.

"The high services of your late lamented father to the Jain Samaj would always be in red letters in the Sthanakwasi Jain Histry. These mishaps are beyond human control"

Rao Saheb Jamnalalji Ramlalji Kimti, Haydrabad.

"The late Jain Dharmveer was a gem of highest order among our religious ascetics & the loss caused to the Jain Dharm & the society is irreparable. All the Jain brotheren in India share the sorrow & grief × × ×"

Rai Sahib Lala Tekchandji President, Punjab Jain Sabha.

"His life was a national assets. He spared no pains to serve the community to his life, money and energy'.

[श्री मोरबी महाराजा, दांता, बदनोर वगेरे अनेक राजा-महाराजाओए, विद्वानोए, समाजसेवकोए, देशनायकोए, श्री संघोए, तथा मंडळोए, तारोद्वारा, पत्रोद्वारा तथा प्रस्तावोद्वारा समवेदना प्रगट करेल छे; जे बधाने स्थळसंकोचने कारणे अमे अत्रे स्थान आपी शकया नथी ते माटे क्षमार्थी छीए.]



खण्ड त्रीजो

दुर्लभ-विचार-दोहन

[स्वर्गस्थनी नोंधपोथी अने पानाओमांथी जीवन, धर्म अने समाज संबंधी हृदयोद्गारोनो संग्रह.]

(१) स्थानकवासीने देरावासी के देरावासीने स्थानकवासी बनाववा श्रम न करो. ज्यां छे त्यां ज भले रहे. बन्ने स्थळे जता आवता होय तेमने पण न रोको. खेंचाताणमां मूळ पूंजी गई. 'सूरि'जीए दीकरीनी लेणदेणना सोगन कराव्या एनां फळ? सहानुभूति गुमावी. बधा एक होत तो? जैन तरीके केटलुं बळ जामत? सूरिओना शूरातने मुसलमानो·········जाय पण जैन भगवाननी··· पसार न थाय, एवो ममत्व उभो करनार सूरिओ! तमारा शूरातने ज कार्य न साध्युं. अहिंसानो उपदेश देनाराओ अरसपरसना प्रेम ने कन्यावहेवार तोडावे एमने केवां कर्म बंधातां हशे ए तो कोई कर्मग्रंथनो अभ्यासी ज कही शके.

✠ ✠ ✠

(२) "आपणा धर्मने कांई लेवा देवा ज नथी" खरेखर एक धर्मप्राण पुरुषने छाजे एवा ज आ उद्गारो छे. जो ए जडवादी होय तो पण एनी आ सहृदयता एमना जडवादने पण रळियामणो बनावे छे, ज्यारे आपणो आत्मवाद संकुचितता अने दुर्बळताने लीधे जडवाद करतां पण उतरती पंक्तिनो बने छे. धार्मिकताने ज्यारथी आपणे मात्र विधिओ अने रूढिओनी ज वस्तु मानी लीधी अने देशनी कंगालियत के पराधीनता साथे एने कांई लेवा देवा ज न होई शके एवा निर्णयपर आव्या त्यारथी आपणा आत्मवाद उपर जडवादना ओळा उतर्या अने आत्म-प्रतारणानी एकमात्र ओथ लई आपणे आपणी जातने आत्म-वादी ओळखाववा लाग्या. वस्तुतः आजे मोहक शब्दो के परिभाषा सिवाय धर्म ने अंगे आपणी पासे बीजुं शुं रह्युं छे?

✠ ✠ ✠

(३) शक्य शुं नथी? Impossible शब्द ज कोषमांथी काढी नांखवो जोइए. अशक्य कहीने ज कायरो ब्हानुं मेळवी मोज करे छे. असाध्य नहि,

दुःसाध्य भले होय, परंतु पुरुषप्रयत्न पासे सर्व शक्य अने साध्य बनी जाय छे. मनुष्य पासे एवी अपूर्व शक्ति छे. फक्त शक्ति फोरववाना प्रयत्ननी अने इच्छानी ज खामी छे. संमेलननुं गौरव समजाय अने असर थाय तो अशक्य नथी. पंदरसो वर्ष पहेलां ए शक्य हतुं तो ताजेतरमां अशक्य केम कहेवाय? श्रावकोनी पक्षांधताथी ज अशक्यना अंधारामां शक्य-सूर्यना दर्शन थतां नथी. ज्यां पक्षोने पोषण मळे त्यां संगठन न ज थाय.

卐 卐 卐

(४) दरेक कार्यमां पोतानो ज कक्को खरो छे एम मानी जो दरेक व्यक्ति पोतानी वातने पकडी राखे तो समाज आगळ वधी शके नहि; एटले घणाओनो मत थाय तेने मान आपी आपणा समाजनी उन्नति थाय एवुं करवानी पण टेव पाडवानी जरूर छे. समष्टिना हित खातर व्यक्तिए पोतानो विरोध छोडी देवो जोईए. आ सिद्धांत पूज्य मुनिवरो अने श्रावको बन्ने स्वीकारे तो थोडा वखतमां ज श्रावकोनी उन्नति थती आपणे जोई शकीए अने पूज्य मुनिवरोना एवा उपदेशथी अनेक जीवोनुं कल्याण थई जाय.

卐 卐 卐

(५) समाज उपर मेल चडी गयो छे. ए मेलने धोवा माटे चोक्खा पाणीनी जरूर छे. चारित्रनी छाप पडे छे माटे श्री संघ सेवक–अर्ध साधुओना जेवी संस्था जोईए.

卐 卐 卐

(६) बालकना काननो मेल काढनार श्रेष्ठ के तेमां दागीना पहेरावनार? पहेलुं काम कान साफ करवानुं छे. पण ते तरफ दुर्लक्ष्य छे. अने जे शक्ति वडे कान मळ्यां–पूर्वकर्म–जेने लीधे मनुष्यत्व मळ्युं ए कर्मो माटे केटलो विचार होवो जोईए?

卐 卐 卐

(७) साधु तो श्रावकोमांथी ज थाय छे. श्रावको आपणी छाती उपर हाथ राखी पोताने ज पूछे के आपणा पोतामां श्रावकपणुं केटलुं छे? आपणे श्रावकव्रतमां ज न होईए तो श्रावको साधुओनुं शुं करी शके? पंच महाव्रतधारीओने आ दशाए लावनार तो बार व्रतधारीओ ज छे.

卐 卐 卐

(८) शुभ भाव होवा छतां बिनअनुभवी वैद्य, रोगीना शत्रुनुं काम करे छे. धर्म पण धर्मांधपणुं ग्रहण करे तो अकल्याण पण करी नांखे. घोर युद्धो अने

पशुयज्ञो धर्मे ज कराव्यां हतां. सांप्रदायिक क्लेशो अने समकितना भावयुद्धो शुं बतावे छे ?

✠ ✠ ✠

(९) आळसुनुं मन, ज्यारे एने बीजुं कंई पण खावानुं नथी मळतुं त्यारे पोतानुं ज भक्षण करे छे. मनुष्यनुं हृदय फरती घंटी जेवुं छे. घंटीमां घउं ओरो तो ए घउं ने दळीने–पीसीने आटो करी नाखशे ने जो एमां घउं न नाखो तो पण घंटी तो फर्मान करशे अने बे पड सामसामा घसाईने पोताना ज पत्थरनो लोट करी नांखशे.

✠ ✠ ✠

(१०) **विनयमूलो धम्मो**–सामान्य विद्या संपादन करवा माटे श्रेणिक राजाए, ज्ञातिए चांडाल अने कर्मे चोर जेवा माणसने पोतानो विद्यागुरु बनावी, तेना पोताना सिंहासन पर बेसाडी पोते नीचे बेसी विद्याध्ययन कर्युं. आटली जैन शासनमां विनयनी महत्ता छे छतां आजे तेथी विपरीतता अनुभवाय छे. **मानमूलो धम्मो** सूत्र बनावी मान–कषायने पोषी रह्या छे. आ रोग, त्यागी अने भोगी बन्ने वर्गमां अनुभववामां आवे छे. आथी विशेष आश्चर्य शुं ? जिनागमो तो पोकारी पोकारीने कहेछे के, **'विणओ जिणसासणमूलो.'**

✠ ✠ ✠

(११) कोईने गळा उपर भयंकर गूमडुं थयुं होय ते छुपाववा गळानी आसपास कींमती रेशमी वस्त्र वींटाळवामां आवे अने कोहाता गूमडाना परूनी दुर्गंध अटकाववा माटे ते माणसना शरीर पर अगरना गमे तेटला छांटा छांटीने तेने सुगंधीथी भरपूर बनावी देवामां आवे तेथी भले बीजा ठगाय, छेतराय अने पोताने तंदुरस्त माने छतां तेथी रोगीने शुं लाभ ? एने लाभ तो त्यारे ज थाय के गूमडुं खुल्लु करी वैद्य डॉक्टरने बतावे, सडेला भागने कापी नांखे अने दुर्गंध मारता भागने तंदुरस्त बनावे.

✠ ✠ ✠

(१२) हुं धर्मांध नथी, धर्मनी घेलछावाळो पण नथी परंतु जूनुं होय ते जाळवी समय मुजब सुधारा करी उन्नतिक्रम साचववो ज जोईए.

ज्यारे मुनिराजो बगीचा, मशाण के सूना पड्या देवळोमां उतरता त्यारे श्रावको स्नानथी स्वच्छ थई, वस्त्राभूषण सजी, ठाठमाठथी दर्शने दोडता अने राजा, महाराजाओ तो सवारी साथे हाथीना होद्दे पधारता अने उत्सवो मना-

नता. आजे आपणे, पाडोशमां ज पड्या पाथर्या रही, आपणे उठीए ए पहेलां ज जाते दर्शन देवा गुरुदेवो पधारे अने आप पलंगपरथी पण नीचे पग मूकवा जेटली 'जयणा' न वापरो, ए आकाश-पाताळना तफावतनुं परिणाम जुओ. पोतपोताना 'रिझर्व' करेला क्षेत्रो साचववानी उपाधि-मां उग्र विहार उडी गया अने अतिपरिचय तथा एनां ए ज गाणां रोज सांभळी स्थानको अल्प प्रेझन्स (हाजरी) वाळा नजरे पडे छे.

चोथा आराना आचार, पांचमा आराना विचार अने छट्ठा आराना आचरण-आ आकाश पाताळना तफावते तरफडीआ मारता समाजना तोफानी मोजां-ओमांथी बचाववा माटे अनुभवी तरवैया अने नाविकोनी न छूटके जरूर पडी छे.

आ शब्दो नथी पण हृदयनी उंडाणना उद्‌गारो छे.

✻ ✻ ✻

(१३) 'कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'

पं. नेहरू कहे छे के, जे माणस कंगाळनी जेम अधिकार अथवा पदवीने माटे हाथ नथी लंबावतो ते ज सौथी वधु माननीय गणावो जोईए. आपणे त्यां मान, पदवी अने डीग्रीनी पाछळ जे पडापडी चाली रही छे तेमने आ टकोर कांई मार्गदर्शक बनी शकशे ?

अधिकार अने पदवी तो माणसने एनी सेवा अने कर्तव्यनिष्ठाना फळरूपे, दासानुदास नी जेम अनुसरवां जोईए. एने बदले पोतानी स्तुतिना स्तोत्रो रचवा, रचाववा अने छापरे चडीने सौ सांभळे तेम उच्चारवा ए तो सुरुचि जेवी वस्तुनुं पण देवाळुं फूंकवा बराबर छे.

फळनी जेने परवा नथी, फळना रूप, रंग के गंध जेने मुंझवता नथी, जे मात्र संगीन समाजसेवा, शासनसेवा किंवा राष्ट्रसेवामां ज माने छे अने सत्ता के लागवगना आसनथी पण जे हमेशां दूर रहे छे ते ज साचो समाजसेवक, शासन-प्रेमी के राष्ट्रभक्त छे. आपणा जैनसमाजमां आवा केटला समाजसेवको हशे ?

✻ ✻ ✻

(१४) स्त्री, पुरुषोनी वासनानी पूतळी, रम्मतनुं रमकडुं के गृहरखु गृहिणी ज नथी. रीतरिवाजो अने रूढिनी रस्सीए बंधातां गुलामी-बंधनो हवे ते सहन करी शके नहि. स्त्रीओए संस्कृतिना सामान्य सिद्धांतो मान्या छे.

महात्माजी कहे छे–युरोप नी संस्कृति युरोपवासिओ ने माटे भले आवश्यक के आदरवा लायक होय पण आपणे जो एनुं अनुकरण करीए तो हिंदने जरूर हानि थाय.

आनो अर्थ एम नथी के स्त्रीओने गुलामडी बनावी, पुरुषजात मनमान्या अत्याचारो करे. रूढिओना किल्लामां केदी रही वावुना पडता बोल उठाववामां नर्कना न समजाय एवां दुःखोनी सजा थवानो भय, स्त्रीजातने रहेलो छे. आवा अनिष्ट तत्त्वो जल्दीथी ज नेस्तनाबूद करवा घटे.

✻ ✻ ✻

(१५) बाळकोनो मानसिक विकास अने बौद्धिक प्रगति करवी होय तो ते माटे वार्त्ताओनो प्रयोग सारामां सारो छे. वार्त्ताओ वनावटी के चरित्रमय गमे तेवी होय पण एना कहेनाराओ खूब तैयार थईने आवेला होवा जोईए. एणे वार्त्ता कहेवानी पद्धति, वार्तामां रस लाववानी कुशळता अने भाषानी शुद्धि अने उच्चारणनी शुद्धि ए बधा उपरनो काबु मेळवेलो होय तो ज आ बधा प्रयोगो अवश्य सफळ थाय. सांजरे ८–८॥ पहेलां वार्ताओ शरू थवी जोईए. एनी बे ढाळ करवी. पे'ली ढाळमां नानां छोकरांओ बेसे अने बीजी ढाळमां मोटां मोटां छोकरांओ बेसे. नानां छोकरांओ माटे श्रीगिजुभाईनुं बालसाहित्य अने आजकाल निकळतुं बधुं बालोपयोगी साहित्य सारुं छे. मोटां छोकरांओ माटे नानाभाईनी वातो, हरभाईनी वातो, ध्रुवनु नीतिशिक्षण, धर्मशिक्षण, बुद्धलीला-सार–संग्रह, जातककथाओ, जैन कथाओ अने चरित्रो अत्यंत उपयोगी छे. हिंदीभाषामां पण बाल–साहित्य निकळतुं थयुं छे तेनो उपयोग करवो.

✻ ✻ ✻

(१६) ×××× [अनुसंधाननो कागळ नथी मळ्यो. वाचक पोते समजी ले] परंपराकृत प्रतिक्रमणमां ज पोषवी छे के बधी वातोमां ? जाडा हाथवणाटना कपडाने बदले, चरबीवाळा, चकमकता साटीन के मलमल लेवामां प्राचीन परंपरानुं स्मरण थाय छे ? अपटुडेट पुस्तकोना कबाटो उपर भलेने मंडळनुं नाम लख्युं होय पण पोताना ज माटे, भले दिवस दरम्यान पाढियारी राखीने पण 'पारकर'नी पेनोमां देशकाल याद करे. रूखी–सुखी रोटली अने दाळ–शाकथी संतोष मानवाने बदले सूजता विविध 'विगयो'थी उभरातां पकवानो, रायतां अने बाढी ने बहाने जमीन कंदनी चटणीओमां देश काल काम करे !

सूत्रोना फरमान मुजब कुटुंबोमां भोजन पूरा थई गया बादनी गोचरीने बदले नव वागतां ज 'अन्नदाता' नाम सार्थक करवा अन्नने पवित्र बनावो छो ए पण देशकाळ मूजब ? पडखुं फेरवी, संकुचिततानी सोडमांथी मोढुं काढी बहार नजर तो करो के, तमारी समाजना शुं हाल थई रह्या छे ? समाजमां स्वधर्मीओनी शी दशा छे ? अन्यनां उत्सवो अने व्याख्यानोमां आकर्षातो युवान-वर्ग आपना उपाश्रय पासेथी पसार थतां पण अंदर प्रवेशतां केम अचकाय छे ? थोडा जूना पाठो अने स्तवनो सिवाय कशुंय नवुं साहित्य वांचवा मन थाय छे ? विश्वधर्मने संकुचित बनाववा जेटली खेंचताण करी छे तेनो अंश पण पोते मानी लीधेली मान्यताओ ने सिद्धांतो, सायन्स अने समाज-शास्त्रथी सिद्ध करवा काळजी राखी छे ? आपणामां आत्मभोगनी आग ज-ओलवाई गई छे. चैतन्यनी चिनगारी ज रही नथी. श्रीमान् लोंकाशाह पछी श्री धर्मदासजीए ९९ शिष्योने चोतरफना मुल्कोमां धर्मप्रचार माटे मोकल्या. आजे नवा श्रावको शोधवा तो एक बाजु रह्या पण छे एटलाने स्थिर करी साचववा मुश्केल थई पड्युं छे !

(१७) हिंदु अने हरिजन, अरे हिंदु अने मुसलमान संगठन संबंधी विचार करवा मळी रह्या छे, मळ्या छे. ए काळे, ए समये संसारथी पर मनाता मुनिराजोने मनाववा के विनववानी जरूर ज न होय. रणशींगडा फूंकाय अने सींधुडाना सुस्वर संभळाय, ए समये शूरवीरोनो थनथनाट रोज अनुभवाय. पारसनाथजीना साधुओ अने महावीर स्वामीना साधुओना संगठन संबंधी सूत्र-गाथाओ क्यां अने क्यां अत्यारना साधुओ जे एक बीजाथी दूरने दूर भागे छे !

(१८) समाजसेवक तरीकेना मारा आटला वर्षना अनुभवोए मने ए वात तो बराबर शीखवी छे के, जे भूतकाळ भूली न शके, संजोगोने अनुकूल न बनी शके, स्वधर्मी के विरोधिओ साथे पण प्रसंग मळ्ये प्रेममय वर्तन राखी न शके, तेवाथी समाजसेवा यथोचित थवी अशक्य छे. मारी मनोदशा बताववा अने तमारी मनोदशाने ए तरफ आकर्षित करवा माटे स्पष्ट कही दउं छुं के, आपणे कोई व्यक्ति साथे विरोध के संबंध नथी. आपणे तो सिद्धांत साथे ज काम छे. आपणे कोईना उपर आरोपो के आघात करवा नथी. कोईनी पडतीमां राजी थवुं नथी. ए तो हलकी मनोदशा छे.

जे चारित्रशुद्ध छे ए ज मारो साधु छे, ए ज मारा प्रेम अने सन्माननो अधिकारी छे. सिंहना चामडामां छुपायेला शियाळोथी हवे समाजने छेतराववा देवो पडे एम नथी. संमेलन पाछळ खर्चायेल शक्ति अने नाणांनी सार्थकता माटे हालना अणगारोने अणिशुद्ध सीधा चालता करवानी जरूर छे. प्रेम वहेवडाववा माटे तो अमारामां विश्वास वसाववो पडशे. अंतरायथी उभराता विषमय वातावरणने प्रथम साफ करवुं पडशे. आ माटे अंतरनी सफाई जोशे, हृदयनी लागणी जोशे, चारित्रनी चीवट जोशे अने हारी न जवानी हिंमत जोशे. समाजे शांति राखवी पडशे, तपश्चर्या पण चालु राखवी पडशे.

सत्यनो पूजारी तो सत्यनी शोधमां ज खतम थाय. एने प्रपंचो रचवानो समय ज न मळे.

(१९) बुद्धधर्म अत्यारे हिंदमांथी नाश थयेलो गणाय पण एक कोसांबीजीए ज केटलो प्रयास अने पर्यटन कर्युं ? आजे बनारस पासे सारनाथमां ७५ बौद्ध विद्वानो बुद्ध–धर्मनी पुनःस्थापना माटे पोतानी आजीवन सेवा अर्पी रहेल छे.

आपे आ विद्यापीठनो विचार सांभळ्यो छे ? तमारा उत्थान माटे कदी विचार कर्यो छे ? तमारामां शुं एकेय धर्मानंद कोसांबी नथी ? छे तमारा शासननी तमने परवा ? परस्पर 'लडी' थोडुं घणुं छे एने गुमावीने बीजाओने पण तमारा जेवा शा माटे करो छो ? महात्मा गांधी जेवा एक गृहस्थ दुनियाने हलावी रह्या छे त्यारे आपणा आटला साधुओ छतां शासन केम झोकां खाय छे ?

(२०) 'महासभा ए हिंदना सौथी वधारे प्राणवंत अने प्रगतिमान वर्गना मानस नी प्रतिमूर्त्ति छे.' श्री जवाहरलालजीनां आ प्रवचनो छे. अजमेर पहेलां आपणी महासभा मवालोनुं दर्पण हती. आजे ए प्रेसीडेन्टनुं प्रतिबिंब छे. आवती काले बहादुर स्टेन्डिंग कमिटीनुं केन्द्र बनशे. एमां नवा लोहीनी जरूर छे. नवलोहिया ताकतवाळा तेना सभ्यो छे. महासभानुं तेज गामे गामे अने घरे घरे फेलाय एवी स्थिति सर्जवामां सभ्यो गुंथाई जाय. आपणा युवानो आ तक वधावी ले. स्था. समाजने चेतनवंतो अने महासभाना नादथी गाजेलो बनावी मूके एवी अमारी आशाओ छे.

(२१) दरेक देशनो आर्थिक अभ्युदय बुद्धि अने नीतिना स्तंभ पर टकेलो छे. अने उभय पायामां धर्मनी आवश्यकता छे.

(२२) जगतमां निःश्रेयस तेमज अभ्युदयनी प्राप्तिमां आडंबरने हवे स्थान नथी. उत्कर्षनो जन्म आत्मार्पणमांथी थाय छे. वर्तमान भूमिकाना संकटो भावी उच्चतर भूमिकानुं द्वार छे. संकटमां ज मनुष्यनुं अस्तित्व प्रकट थाय छे. संकट ज अहंकार जेवा अनेक दुर्गुणोना बीजभूत उपाधिओने दूर करे छे. संकट वखते धैर्य राखवामां ज मनुष्यनुं मनुष्यत्व छे. संकट ए मनुष्यनी महत्तानी जन्मभूमि छे.

(२३) उन्नति पामवानी के उन्नति करवानी इच्छा ए घणी स्तुत्य छे. पण तेनां साधनो अने पद्धति पसंद करवामां जो विवेकने कोरे मूकी आवेगने वश वर्तवामां आवे तो तेथी उन्नतिने बदले अवनति ज थाय.

(२४) एमना संग्रहमांथी—

१—धन दे तनकुं राखिये, धन दे तन दे लाज.
धन दे तन दे लाज दे; एक धरम के काज.

२—मनको मार लिया अकसीर हो गये पीरों के बी पीर.
सिर झुकाते हैं बडे अमीर होवे पादशाह और वजीर.

३—आप ही खुदा बन जावोगे, जब खुदा को भूल जाओगे.

४—कम खाव, गम खाव, नम जाव.

५—Eat to live, don't live to eat.

६—जिसके मों पर लाज नहीं, उसकी पूंछ बरोबर मूंछ;
जिसकी गई है वाणी, उसकी जिंदगी धूल धाणी.

लक्ष्मीना चार सदुपयोग—

१ हरिजननी सेवा. २ दीनसेवा. ३ जीवदया. ४ परोपकार.

प्रातःस्मरण—

१ कौन हमारे देव गुरु धर्म,
२ कौन हमारे कुल का कर्म;
३ कौन हमारा है व्यवसाय,
श्रावक तीन मनोरथ भाय.

(२५) एक पत्रमांथी—

तमारो कागळ मळ्यो छे. तमारो प्रश्न एक ज छे. सतत ध्यानथी, सतत अभ्यासथी, पूर्ण वैराग्यथी अने भक्तिथी साक्षात्कार करी शकाय.

१—ध्यान एटले अन्तर्दृष्टि बनवुं.

२—अभ्यास एटले वांचन-मनन, सत्संग अने ए दिशामां प्रयत्न.

३—वैराग्य एटले साक्षात्कार.(प्रभु)ते सिवाय वस्तु मानी ते विषे राग रहितता.

४—भक्ति एटले आत्मा उपर दृढ विश्वास राखी अद्वैत साधवा अर्थे प्राणी जातनी सेवा.

नैनीताल ता. १८-६-२९ बापुना आशीर्वाद.

* * *

(२६) खोटकेल खटारो—

'गाडुं देखीने गुडा गळे' ए कहेवतनो खरो ख्याल गामडामां ज आवे. सीममांथी सांठिओ वाढी, गामथी पांच छ माईल शहेरमां वेचवा जनारा सुदृढ गामडिआओ पण हवे शहेरथी पाछा गाममां जतां खटारामां खडकावानुं मन करे तो अमाराथी पगे चालीने जवामां 'पोझीशन'नी प्रतिष्ठा चाली जाय छे. एक मोटर बसने चार बळद जोड्या छे. पुरुष पेसेंजरो धक्को मारे छे ने खोटकेल खटाराने गाममां लावी रह्या छे. गामडाना छोकराओ 'हुरिओ' बोलावे छे. ए जोई कुतरां पण भसी रह्या छे.

'जमनावास'मां बे रोज रोकायो एमां केटलाए अनुभवो थया. शेठने त्यां लग्न होवाथी मकान रंगातां हतां. पांच शेर सफेदामां पांच तोला गळी पडवाथी पांच शेरनो ए रंग बदलावी दीधो. शुं आटला बधा सफेदानुं जोर एटली बधी गळीने सफेद न करी शके! विचारश्रेणीए शीखव्युं अने अनुभवे साबित करी बताव्युं के आवी रीते समाजमां के संप्रदायमां थोडा अपलखणाओ शान जमावी संप्रदाय-पतंगनो दोर पोताना हाथ मां राखे छे.

* * *

शेठनी दुकान सामे बे जटाधारी जोगी जेवा बे दिवस थयां धामो नाखी बेठा हता. गुरुजी कहे के, आ शिष्यने भणाववा काशी ए जावुं छे तो काशी सुधीनी टीकीट अने भातुं अपावो. शेठ आवा धींगाणाथी रीढा बनेल हता एटले

परवा नहोता करता. थवा काळ छे ने बे साधुओ विहार करतां ए गाममां ज आवी पहोंच्या अने शेठनी दुकान पासेथी निकळतां शेठ पण स्थानक सुधी साथे गया. भक्तिभावथी वंदना वहेवार जाळव्यो, गोचरीना समये भावपूर्वक वहोरावी सेवा करी. अने साधुजीनी साथे एक 'वैरागी' अने वैरागीनां पुस्तक-पानां ने सामान ऊचकवा एक भाई साथे आवेल ए बन्नेने पण जमाड्या. अहा हा! शेठनी दुकान सामे धामो नांखी पडेल पण साधु अने आ पण साधु. त्यागमां केटलो तफावत? आ वखते मने पेलो खोटकेल खटारो याद आव्यो. काया अने कायाबळ–प्राण. एन्जीननुं खोखुं अने स्टीम सहित एन्जीन. साधुवेश अने साधुपणुं. ए ज तफावत.

❀ ❀ ❀

(२७) मुनिराजोने पगे चलावी पुष्कळ श्रम आप्यो, संख्याबंध श्रावकोए लाखोने खपे ए उत्सव ऊजव्यो. आ बधी वातोनो विचार करवाने बदले फकत पोतानी ज वात राखी अने मुक्तिनो ईजारो तो चालीस लोगस्सने ज छे अने वीसवाळाने तो अधवच्च लटकवुं पडशे आवी मान्यता वाळा मुनिराजो ना मगज ने धन्य छे! अने आवुं मगज धरावनारा अमारी समाजनी नौकाना नाविको छे. दरिओ तोफाने चड्यो छे. प्रभु बधाने सत्यता आपे.

हुं तो ममैयाना नोरामां ज बलिदान अपायो होत अने उछ्यो न होत तो आ विपरीत दशा अश्रुपूर्ण नेत्रे निहाळवा समय न आवत. अंदर अंदर लडाववा हजु पोतानी परंपराना पाटा बांधी अंधकारमां अथडाववा आवा अज्ञानीओथी समाज ऊभराई रह्यो छे. जमानो जेणे जोयो नथी, समयनी जेने परवा नथी एवा गामडिआ के गाडरिया अंध श्रद्धालु ज्यां सुधी जीवता छे त्यां सुधी आवा मुनिओ पोतानुं धार्युं करी शके.

आत्मज्ञान त्यां मुनिपणुं ते साचा गुरु होय,
बाकी कुल गुरु कल्पना आत्मार्थी नहि होय.

शुं लखुं? हृदय फाटी जाय छे. साधुसंमेलन प्रसंगे शक्ति उपरांतना श्रम अने सहायकोना सिंचन ने परिणामे दिव्य फळ प्रकटवानी आशाए झझुमतो रह्यो.

साधुओए पोते ज एकांतमां बेसी बनावेला ठरावो अने पोताना महाव्रतो ने विसारी पोते ज तोडवा मांड्या अने आ शास्त्रसंमत नथी, आ तो मालवा मेवाड माटे ज हता, आमां तो अमारो विरोध हतो; आवी अर्थ वगरनी वातो करी पोतानी परंपराने पुष्ट करी रहेला छे. कोईने समाजनी परवा नथी. पोताना

वाडामां पोतानी पूजा–प्रतिष्ठा कायम राखवा भोळी प्रजाने भंभेरी पोतानो पक्ष जमावे छे. आवा उपदेशकोथी स्था० समाजनुं नाव भयमां छे.

(२८) **मरवुं** निश्चित छे तो पछी जीवतां जीवतां मृत्युने संभाळवानी पण जरूर शी छे? जीवता छतां मृत्युना भयमां ज मृत्युने संभाळतां जीवन पूरुं करनार मनुष्यना करतां मृत्युनी केवळ अवगणना करी जीवन ज्यांसुधी चाले त्यां सुधी तेने जीवनरूप ज गाळनार माणस वधारे सुखी छे. जीवन-आशा एकली ज तेनुं जीवन सुखमय करे छे. मृत्युना मोंढामांथी खरुं जीवन झूंटवी लेनार प्रयत्नशील पुरुषने जीवन-आशा कल्याणकारी नीवडे छे.

(२९) **श्रीयुत** संघवी सत्य कहे छे–प्रवृत्तिने सेवता छतां पण जेओ अक्षोभ रही शके छे ते ज स्थितप्रज्ञ पुरुष मोक्षनो अधिकारी छे. अरे मुक्त ज छे. प्रतिकूळतामां पण जेओ अनुकूळता मेळवी शके छे तेओ ज पुरुषार्थनी सिद्धि करी शके छे.

कोन्फरन्स शुं?

[पोताना पुरुषार्थ अने प्रयत्नने परिणामे मोरबीमां भराएली श्री श्वे. स्था. जैन कॉन्फरन्सना प्रथम अधिवेशन वखते सद्गते कॉन्फरन्स संबंधी व्यक्त करेला विचारोमांथी संकलित.]

(३०) **आपणा** स्थानकवासीओनी आ पहेली ज कोन्फरन्स होवाथी तेमां चर्चवाना विषयो पसंद करवा माटे दीर्घदृष्टिने आश्रय लेवानुं डहापण अंगीकार करवानुं छे. ममता अने मतभिन्नताना सडेला पत्थरो पायामां पेसी न जाय ए माटे खास ध्यान आपी हाल पहेली कोन्फरन्समा अगत्यनां विषयो चर्चवानी आवश्यकता सर्व कोई विचारशेः—

१. मुनि-मंडळने संस्कृत, प्राकृत अने सूत्रअभ्यासनी सगवड करी आपवा योग्य क्षेत्रोमां **'साधुशाळाओ'** स्थापवी अने ज्ञानवृद्धि थाय तेवा प्रकारनी सगवड करी आपवी.

२. पूर्वना महान् आचार्योए पोताना अपूर्व ज्ञानथी जनहितार्थे महाप्रयासे रचेला जूना ग्रंथो मांहेथी जेटली मळी शके तेटली ग्रंथोनी नकलो करावी सुधरावी उद्धार करवो.

३. ठेकाणे ठेकाणे लायब्रेरीओ स्थापवी, भंडारोना पुस्तकोनी टीप करवी, पुस्तकोनी खामी होय त्यां पुस्तको पूरां पाडी, मुनिमहाराजोने ऊंचकवो पडतो पुस्तकोना बोजानो श्रम ओछो करी आपी सगवडता करी आपवी.

४. बाळकोनां कुमळां हृदयमां धर्मबीज रोपवां. दरेक क्षेत्रमां जैनशाळा अने जैन कन्याशाळा स्थापवी अने उत्साही जैनोने धर्मज्ञाननो अने तत्त्व-ज्ञाननो अभ्यास करवानी सगवड करी आपवी.

५. जैनशाळा अने जैन कन्याशाळानुं हालनुं गोखणीयुं धोरण फेरवी सरकारी केळवणी खाताना धोरणे शिक्षण आपवुं. सहेली भाषामां धर्मज्ञाननां नवां पुस्तको विद्वानो पासे तैयार कराववां. तमाम शाळाओमां तेवां पुस्तको मारफत धर्म केळवणी अपाववी अने परीक्षानुं धोरण गोठवी धर्मज्ञाननो प्रचार करवो अने उपदेशकवर्ग उत्पन्न करवो.

६. दुःखी तथा निराधार जैनो माटे विचार करी अनाथ बाळको, गरीब विधवाओ, अपंग श्रावको अने निराधार विद्यार्थीओने मदद आपवी अने उद्योगशाळाओ स्थापी तेमने धंधे लगाडवा. ज्यां ज्यां जीवहिंसा थती होय त्यां त्यां अटकाववा उपायो अजमाववा.

७. जुदा जुदा संप्रदायो वच्चे नजीवी बाबतोमां थता कंकासो वगेरे अट-कावी भ्रातृभाव वधारवो.

८. नुकशान पहोंचाडनारा अने निंदा करावनारा धार्मिक अने व्यवहारिक रीवाजो बंध करवा.

[संकलनकर्त्ता शान्तिलालजी दुर्लभजी झवेरी, जैपुर.]



स्व. धर्मवीर श्रीमान् शेठ दुर्लभजी त्रिभोवन झवेरीए अंत समये करेल पचीस हजारनी सखावत

रु. १०००१) जयपुरमां सार्वजनिक औषधालय अथवा सुवावड खातुं बनाववा.

रु. १०००१) ताजपुर (मोरबी)नी १ लाख फीट विस्तारवाळी जगा अने मकानो 'उद्योगशाळा' अथवा 'आरोग्य भवन' माटे.

रु. २५०१) श्री. जैन गुरुकुळ ब्यावरना स्थायी फंडमां (गुरुकुळ माटे १ लाख रु. नुं पोताना मित्रो अने समाज, स्थायी फंड करी आपशे एवा विश्वासथी).

रु. ५०१) मोरबी पांजरापोळमां.

रु. ५०१) श्री. जैन बोर्डींग.

रु. ५०१) श्री श्वे. स्था. जैन कोन्फरन्सना धार्मिक फंडमां (व्याजमांथी रतलाम धार्मिक बोर्डनी परीक्षामां पहेला नंबर आवनारने चांद देवा).

रु. १०१) मोरबी जैन लायब्रेरीमां.

रु. १०१) श्री सार्वजनिक जीवदया खातुं, घाटकोपर.

रु. १०१) धार्मिक परीक्षा बोर्ड रतलाम.

रु. १०१) श्री. बालगृह मोरबीना नास्ता फंडमां.

रु. १०१) श्री सुबोध पाठशाळा जयपुर, उद्योग विभाग.

रु. १०१) श्री जैन स्था. कन्याशाळा, जयपुर.

रु. १०१) श्रीमित्र कार्यालय जयपुर मारफत १ वर्ष गरीबोने जमाडवा.

रु. १०१) श्री रत्नचिंतामणी स्था. जैन मित्र मंडळ, मुंबई.

रु. १०१) श्री गुजराती समाज, जयपुर.

रु. ५१) जैनेन्द्र गुरुकुळ, पंचकुला.

रु. ५१) धार्मिक परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी.

रु. ५१) साहित्य प्रचार समिति, आग्रा.

रु. ५१) श्रीशांति जैन पाठशाळा, पाली.

रु. ५१) हरिजन सेवक संघ, जयपुर.

रु. ५१) वनस्थली कन्याशाळा (जयपुर स्टेट).

रु. ५१) श्री लीलाधरजी श्वे. जैन पाठशाळा, जयपुर.

रु. ५१) श्री अग्रवाल पाठशाळा.

रु. ५१) श्रीहिन्दु अनाथाश्रम, जयपुर.

रु. ५१) श्री धन्वंतरी औषधालय जयपुर, पांच पलंग माटे.

रु. ५१) पागलखानामां काली कंबलीवाला मारफत भोजन माटे.

रु. ५१) श्री पांजरापोळ जयपुर, दिवसना खरच माटे.

रु. ५१) श्री ते. जैन पाठशाळा, जयपुर.

रु. २५) कबुतरखाना, जयपुर.

रु. २५) संमती पुस्तकालय, जयपुर.

रु. २५) श्री देवकीजी मंदीर लायब्रेरी, जयपुर.

कुल रु. २५६५३



निर्णयसागर प्रेस.